शिक्षक-दिवस, 1984

फूल सारु पांखड़ी

शिक्षा विभाग राजस्थान
के लिए

अभिनव प्रकाशन, अजमेर

फूल सारू पांखड़ी

सम्पादक : शक्तिदान कविया

आमुख

राजस्थान के शिक्षक अपनी साहित्यिक चेतना और अभिव्यक्ति के नये-नये आयाम स्थिर करने मे लगे है। उनकी रचनाएं उत्तरोत्तर परिपक्व भी हुई है और प्रयोजनीय भी। विषय के अनुरूप विधाओं के चयन में सावधानी बढी है तो अभिव्यक्ति का पक्ष और भाषायी-कौशल भी बढा है। ये अच्छी बातें है। पर इस दिशा में सही परख और मूल्यांकन के अधिकारी साहित्य के मर्मज्ञ समीक्षक हैं, मैं नहीं।

मेरे लिए तो यही क्या कम सतोष की बात है कि अठारह वर्ष पहले राज्य सरकार ने प्रदेश के शिक्षकों की साहित्यिक-प्रतिभा के निखार हेतु जो एक प्रोत्साहनकारी योजना—शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना—शुरू की थी, हमारे साहित्य-प्रेमी शिक्षक उस योजना का भरपूर लाभ उठा रहे हैं। शिक्षकों की रचना-शीलता का इससे बडा क्या प्रमाण होगा कि विना किसी स्पर्धा के वे लोग सभी साहित्यिक विधाओं के लिए हजारो की संख्या में अपनी रचनाएं भेजते हैं। तभी तो प्रति वर्ष शिक्षक दिवस पर विविध विधाओं की पुस्तकों का प्रकाशन सम्भव हो पाता है।

मुझे यह बताते हुए बहुत खुशी है कि इस वर्ष के पांच सकलनों को मिला-कर शिक्षक-दिवस प्रकाशन योजना में पुस्तकों की संख्या 86 तक पहुंच गई है। मैं हृदय से चाहता हूं कि शिक्षकों की साहित्यिक प्रतिभा के निखार हेतु अन्य राज्यों से भी ऐसे प्रकाशन निकलें।

इस वर्ष निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित की गई हैं—

1. अपना-अपना दामन (कहानी-संग्रह) सम्पादन—मंजुल भगत
2. वस्तुस्थिति (कविता संग्रह) सम्पादन—गिरधर राठी
3. संचयनिका (हिन्दी विविधा) सम्पादन—याज्ञवल्क्य गुरु
4. फूल सारू पांखड़ी (राजस्थानी विविधा) सम्पादन—शक्तिदान कविया
5. सारे फूल तुम्हारे हैं (बाल साहित्य) सम्पादन—स्नेह अग्रवाल

इस संकलन के संभागी रचनाकारों को मेरी बधाई है। इसके सम्पादक श्री शक्तिदान कविया के प्रति मैं अपना आभार व्यक्त करता हूं, जिन्होंने अपने अथक परिश्रम से रचनाओं के चयन और सम्पादन का कार्य कम-से-कम समय में पूरा किया है। मैं उन रचनाकारों से, जिनकी रचनाएं इस संकलन में नही आ सकीं, यह आग्रह करूंगा कि अपने लेखन-कार्य को गतिमान रखें।

इस पुस्तक के प्रकाशक को मैं धन्यवाद दूंगा कि जिन्होंने तत्परता से प्रकाशन के मानदण्डों को बनाये रखते हुए समय पर पुस्तक उपलब्ध कराई है।

शिक्षक दिवस 1984

बी० पी० आर्य
निदेशक
प्राथमिक एवं माध्यमिक शिक्षा
राजस्थान, बीकानेर

प्रस्तावना

राजस्थानी भाषा घणी जूनी, जोरदार, ठेठ अर ठावी है। संसार मे समै-चक्र री गति रै ओळावै हर चीज रै चडणै अर पड़णै रौ जोग हुवै। भाषा, साहित्य अर परम्परा रै दायरै मे भी इण बदळाव रौ प्रभाव साव चिट्टौ लखावै। सन् 1857 रै गदर तांई तौ राजस्थानी भाषा रौ सबळ अर सांगोपांग रूप उजागर हुतौ, पण परतंत्रता रै पळेटै मे इणरौ उजास घटणौ सरु हुयग्यौ। मायडभाषा रै उण *कजळीजतै धूपियै मे हवा री भड़फ नांखीजती फगत मारवाड़ में, जठै सर* प्रताप आपरै प्रभाव सू जोधपुर में राज-काज री भाषा मारवाड़ी मुकर कराई। मारवाडी डिंगळ या मरुभाषा राजस्थानी रौ इज जूनौ नाम हौ, जदे नवकोटी मारवाड रौ हद पूगळ, आबू, लुद्रवै, मंडोर, किराड़ू, नागौर, जाळौर, पारकर अर घाट (उमरकोट) तांई घणी लांबी-चौडी ही। जिण भांत सूरज-उगाळी सू पैली चाद रौ उजास मिट जावै अर थोड़ी ताळ साव अंधारौ लखावै, उणी भांत आजादी रै भखावटै राजस्थानी री जोत साव मंदी पड़गी ही। हिन्दी अर अंग्रेजी रै वधतै प्रभाव मे राजस्थानी रौ सवाल रोजी-रोटी रै साथे तिल मात्र ई जुड़ि-योड़ौ नी हौ, अर बिना पूछ अर खपत रै कोई चीज रौ उपाजौ समाज में कीकर व्है ?

सेवट रात बीतिया परभात आवै, पतझड़ पछै वसंत आवै, मेह बूठां ममो-लिया दरसावै, उणी भांत आजादी रै उजास में हियै रौ हुलास मायड़भाषा रै माध्यम सूं पाछौ प्रगट हुयौ। नवै विहांण री नवी छटा रा निरखभर नमूना राजस्थानी रै नवै सिरजण में दीपायमान होवण लागा। आजादी रै पछलौ लेखक-समुदाय पढ़ियौ-लिखियौ होणै सू देस अर दुनियां री दूजी भाषावां अर विषय-विधावां सूं पूरौ जाणकार हौ, इणी कारण जीवण अर जगत रा सगळा ठावा अर ठीमर विषय उण आपरै साहित्य में संजोया।

शिक्षा-विभाग राजस्थान, इण मामलै में बधाईजोग है, कै वो हर साल *राजस्थानी भाषा री साहित्यिक रचनावा रौ एक संकलन प्रकाशित करै,* जिणमें शिक्षकां री टाळवी अर सिरै रचनावां व्है। इण बरस रौ राजस्थानी संग्रह 'फूल सारू पाखड़ी' रै रूप में साहित्य-जगत रै सामी है, जिणमे कवितावां, कहाणियां, लघुकथावां, व्यंग-हास्य, एकाकी, निबन्ध इत्याद सगळी विधावां री सांतरी अर सांगोपांग बानगी है। कवितावा रौ खण्ड सब सूं बड़ौ है, जिणमे गीत, गजळ, रुबाई, क्षणिकावां, डाखळा, चूटक्या-चबड़का, हाइकु जेड़ी विविध विधावा रै

साथे दूहा अर भांत-भांत री कवितावां रौ सुरंगौ संजोग पढ़णजोग है। जठै धरती में पांणी कम, पण मिनखां में पांणी घणौ है, उण रणबंके अर रंगभीनै राजस्थान मे प्रीत री परमळ, पौरस रौ प्रवाह अर लोकहितकारी मिनखपणौ है। इण संग्रह री कवितावा में ओज रौ उजास अर हेत रौ हुलास घणै अनूठै अंदाज में उजागर हुवै।

भगवतीलाल व्यास री 'रेत री कविता' श्यामसुन्दर श्रीपत री 'मरुगंगा' नै 'मन री मादगी' अर मोहम्मद सदीक रौ गीत 'म्हे धरती रा लाडेसर हां' ऐड़ी सबळ अर सागोपांग रचनावां है, ज्यामें धरतीप्रेम अर मिनखाचार रौ सिणगार सरसायौ है। 'रेत री कविता' राजस्थान रै हेत री कविता है। सरूपोत रा ऐ बोल तौ अणमोल है:

राजस्थान रेत री कविता, राजस्थान गद्य माटी रौ।
राजस्थान बात वीरां री, यो निबन्ध हल्दीघाटी रौ॥

श्यामसुन्दर श्रीपत 'मरुगंगा' में आथूणै राजस्थान में आयोड़ी नै'र नै हरख री लै'र बताय अनूठी ओपमावा रै आभरण सूं जको रूपाळौ नै चूंप-चूपाळौ चौसरौ बणायौ, वो श्रोता अर पाठकां नै घणौ दाय आयौ। कुदरत रै कण-कण में मस्ती री किलोळ हियै री हिलोळ रै साथे आखरां में उजागर हुई। राजस्थान-नहर मानौ थळवट री किस्मत-रेख, धरती री मोतिया भरी मांग, मांनसरोवर में उतरती हंसां री कतार, कामधेनु री दूध-धार, निरजण में सिरजण रा सुर झण-काती सुरसत री सितार, जूंझारां री जस-गाथा, दुर्गा री खड़ग या कळपवृक्ष री डाळी ज्यूं मतवाळी मनां अर वना में हरियाळी लावती आगे वधती जावै।

मोहम्मद सदीक रै गीता मे देशप्रेम अर भाईचारै री भेळप रै साथे ई व्यंग री रंग भी कम सुरंग नहीं है। जन-जागरण अर इन्सानियत रै आभरण रै मूंघे मेळ री उभेळ कवि सदीक रै गीतां में वधीक है।

वीर भावां री प्रेरणादायी कवितावां में भीम पाडिया री 'मुंहगै मोल मिळी आजादी' अर 'गणपत गूंर्जलो,' कल्याणसिंह राजावत री 'हार मती', रामनिवास सोनी री 'गीत' इत्याद घणी सराहणजोग है। राष्ट्रीय एकता अर मानवता रै सदेश खातर उदयवीर शर्मा री कविता आपरै उद्देश्य में पूरी तरै सफल हुई है। व्यंग री मीठी मार पढणहार रै अंतस री सितार में मरमीली झणकार पैदा कर दै, ऐड़ी रचनावा में त्रिलोक गोयल रौ नाम तौ चावौ अर ठावौ, पण अरविन्द चूरुवी री विविध छन्द-छटा रौ अमंद उजास अर व्यंग री तरल तरंग देख म्है तौ दंग रह्ग्यौ। म्हारी निजरां में पैली वार आयोड़ै इण कवि-रतन नै घणा-घणा रंग। घनन्जय वर्मा, गोपालकृष्ण निर्झर री कवितावा भी व्यंग री दीठ सूं ओटीपी अर असरदार है। कवितावां रै नन्दनवन में भांत-भांत रा पुसप आपोआप री रंगत अर सोरम सूं राचै। इमरत रै उण साव रौ लाव तौ चाखियां इज मिळै। इण पोथी रौ मोटौ भाग सुरंगी कवितावां सूं मंडित है, इणी कारण केई ऐड़ा कवि ज्यांरी अनूठी अर अछूती ओळखाण है, तौई विस्तारभय सूं सगळां रौ उल्लेख अठै संभव नहीं।

गद्य री पलडौ ई घणौ ठावौ अर ठरकैदार। निवंध जैड़ी वजनदार विधा में पच रतन रूपी पाच विद्वान शिक्षकां री ठावी रचनावां इण संग्रह में है। प्रथम

निबंध 'शक्ति पूजा रो पर्व —नवरात्रि' में श्री चन्द्रदान चारण शास्त्रीय प्रमाणा सूं शक्ति-पूजा री परम्परा अर महत्व दरसायो है। पूजा रो विधान, महामाया रा अनेक नाम, सिधाऊ अर चाडाऊ चिरजाया रै कारण चारण-काव्यधारा मे लौकिक काव्यधारा रो मेळ, अर आज रै जुग में शक्ति-पूजा री प्रासंगिकता जैड़ा महताऊ सवालां रा प्रामाणिक पड़ूतर इण निबंध मे दिरीज्या है। अखिलेश्वर रो निबंध 'दीपै वांरा देस' राजस्थानी साहित्य री वीर परम्परा रो ऊजळो अर ओपतो दरसाव है। 'मनस्या' अमोलकचंद जांगिड़ रो एक भावात्मक निबन्ध है। सांवर दइया रो निबंध 'राज बदळग्यो म्हांनै कांई ?' एक व्यंग रचना है, जिणमे हास्य रो झीणो पुट झळकै। राज-काज मे आपाधापी रो चित्राम दरसावता लेखक मीठा चूंटिया भरिया है।

श्रीमती कमला अग्रवाल रो निबंध 'वागड़ प्रदेश रा मावजी' एक विसारियोड़ै सत री जीवणी अर साहित्य-साधना रो शोधपरक दस्तावेज है। इण संग्रहरा सगळा निबन्ध टणका अर टकसाळी है।

जगदीशचंद्र नागर रो लघु एकाकी 'घोड़लो' एकाकी कळा री दीठ सूं सफळ रचना है। इणमे तेजाजी रै थान माथै भाव आवतै घोड़लै री मंगळीक झांकी है। व्यंग-हास्य में त्रिलोक गोयल री 'पर्सनल फाइल' अर श्रीनन्दन चतुर्वेदी री 'मूछा सू डाढी तांई' रोचक अर रूपाळी गद्य रचनावां है।

संख्यारी दीठ सूं इण सग्रह में कवितावा रै बाद दूजो नंबर कथावा रो है। भीखालाल व्यास री कहाणी 'उणियारो' एक ठावी रचना है। उदयवीर शर्मा री लघुकथावा मे जीवण दरसण री गहराई दरसै। करणीदान बारहठ री 'सोनल' अन्नाराम सुदामा री 'चूक चिरमी-सी पछतावो हिमाळै सो' छगनलाल व्यास री 'जमराजा री निजर' भी उल्लेखजोग कहाणियां हैं। इण भांत इण संग्रह री सगळी राजस्थानी रचनावा ठावी, ठीमर, अनोखी अर चोखी है। एकरूपता अर शब्दां री जोड़णी—

राजस्थानी लेखकां रै सामी इण वखत सबसूं मोटी अबखाई भाषा री एकरूपता री है। टावर थडी करै जद तो पगे वहणै रो कोड करां, पण जे फाडो या रूळो चालै तो घर वाळा नै इज घणो दुख व्है। इणी भात घणा वरसां पैली तो राजस्थानी मे गद्य-लेखण री कमी सालती ही। आज उणरी रफ्तार तो वधी है, पण रेबा खावती आंटी-टूंटी चाल रै कारण घणी खोड़ां दीसै।

आ बात अंजसजोग है कै राजस्थानी काव्य मे थेटू ही भाषा री एकरूपता रही। जोधपुर रै कविराजा बांकीदास, बूंदी रै सूरजमल मीसण, बीकानेर रै शंकरदान सामौर, अलवर रै रामनाथ कविया, उदयपुर रै नाथूसिंह महियारिया अर जैसलमेर रै अळसीदान रतनू रै राष्ट्रीय डिंगल-काव्य री भाषा मे कोई फरक नी हो। वा सबां ई पश्चिमी राजस्थानी नै साहित्य-भाषा रै रूप मे स्वीकारी ही। आजादी रै बाद तो राजस्थानी में लिखणै री एक बाढ-सी आई, जिणमें पढ़िया-अणपढिया दोनूं एक ई नाव में सवार हुयग्या। जका नै न तो मूळ तत्सम (संस्कृत) शब्दा रो ग्यान, अर न तद्भव रै प्रामाणिक रूप री जाणकारी, न हिन्दी री शुद्ध लिखावट जांणै अर न राजस्थानी भाषा री प्रकृति सूं ही वाकब, ऐड़ा घणाई लोग राजस्थानी रै नाम सूं खोटी हिन्दी रो अधवेरड़ो रूप ठिरडिया जावै है। आकाश-

वाणी रै समाचारां मूं लेय पुरस्कृत पुस्तका तक में भ्रा घांधळी चालै है। राजस्थानी रो शब्द-भंडार इतरो बौहळो है, कै उणमें हर पर्यायवाची शब्द री एक खास तासीर उजागर हुवै। मंत्रणा, गूज, वात, वंतळ, टूम ऐ सगळी बातचीत री न्यारी-न्यारी स्थितिया है। खाली बैठा समै बितावण सारू साधारण वातचीत करै वा 'वंतळ' कहीजै, राजदूतां या विदेशमंत्रियांरी बैठक में वंतळ नी हुवै। वा मंत्रणा या गूज री श्रेणी में श्रावै। संसार री किणी भाषा में एक शब्द री सही लिखावट एक इज हुवै, पण राजस्थानी में भ्रबार ढाळो निरालो ई है।

श्राज मनभानै प्रयोगां रै कारण किणी सबद नै गलत या अशुद्ध कैवणियो कोई नी है। म्हारी विनम्र राय में राजस्थानी शब्दां री सही वर्तनी भ्रर शुद्ध रूप खातर ऐ सुझाव है—

(1) जके तत्सम (संस्कृत) शब्द राजस्थानी में बोलीजै, वारी लिखावट उणीं'ज शुद्ध रूप में होणी चाहीजै। वानै बिगाड़णा ठीक नहीं। जैसे—शिक्षा (सिक्का), विश्वविद्यालय (विस्वविद्यालै), शुद्ध (सुद्ध), संस्कृति (संस्किती), महाशय (महासै), विषय (विसै), भाषा (भासा), संग्रह (संग्रै) राष्ट्र (रास्ट्र)— इया नै बिगाडणै सूं राजस्थानी रो रूप बिगड़ै।

(2) भक्ति-भगती, शक्ति-सगती, युक्ति-जुगती, शब्द-सबद, मातृभूमि—मायड़भोम, पुस्तक-पोथी—ऐड़ा शब्द तत्सम (संस्कृत) भ्रर तद्भव (भ्रपभ्रंश) दोनू रूपां में सुविधा मुजब चालता रै सकै।

(3) जिण शब्दा रा राजस्थानी में पर्याय मिळै, उण ठौड़ तत्सम नै बिगाडणै री जरूरत नहीं। जैसे—'प्रकाश' री ठौड 'उजास' या 'चांनणो' लिखणो ठीक है, प्रकास, परकास या परगास ठीक नहीं।

(4) राजस्थानी रै नांम माथै सगळै ई 'श' री ठौड 'स' करणै सूं केई जागा भ्रर्थ रो भ्रनर्थ हुय जावै, सो ढरड़ो ठीक नहीं। भ्ररथां रो भारी भेद है—

शर्मा=ब्राह्मण,	सरमा=कुत्ती
शंकर=महादेव,	संकर=दोगलो, मिश्रित
शक्ति=देवी,	सक्ति=लगाव, मोह

जके लोग पुराणी राजस्थानी मे एक ही 'स' होवण री दलील दै, वानै भ्रो सोचणो चाहीजै, कै उण जमानै मे लोग 'ख' नै 'ष' लिखता हा भ्रर छ, झ, ड, ड़ इत्याद भ्राखर दूजी भांत सूं लिखीजता हा। पैलड़ी वखत में पढाई रा साधन कम हा सो लोग लिखता भ्रशुद्ध पण बोलता शुद्ध हा। कैवण वाळै सूं सुणण वाळो चतुर कहीजै, ज्यूं ही लिखण वाळै सूं वाचण वाळो चतुर गिणीजतो। श्राज भी गावां में केई डिंगल कवि है, जके भ्रापरो नाम भी शुद्ध नीं लिख सकै, पण छन्द बणावै भ्रर बिलकुल शुद्ध पाठ करै। श्राज रै जुग में ज्यूं लिखै ज्यूं ही बोलीजै, इण लिखावट री शुद्धता जरूरी है।

(5) राजस्थानी में भ्रंधाधुंध 'ल' री ठौड़ 'ळ' भ्रर 'न' री ठौड़ 'ण' री फैशन भाषा रो पोखाळो करै है। मोटा-मोटा नामधारी लेखक ई ऐड़ी भूला करै है। उदाहरण रूपी—मांझल नै मांझळ, मूमल नै मूमळ, पीयल नै पीयळ, पातल नै पातळ, नवल नै नवळ, एकल नै एकळ, खेचल नै खेचळ, सांखलो नै सांगलो,

मालदेव नै माळदेव लिखणौ भारी भूल है।

इणी भांत साधना नै साधणा, संभावना नै सभावणा, बहाना नै बहाणा, पसीनो नै पसीणो, मानीता नै माणीता लिखणौ अशुद्ध रूप है। 'क' री ठौड़ 'ख', 'ग' री 'घ', 'ज' री ठौड़ 'झ' री विनां सोचियां-समझियां प्रयोग घणौ अटपटौ लागै। घणै रूप सू करियौ जावै वो 'घणकरो', सो 'घणखरो' अशुद्ध है। युद्ध सूं जुद्ध अर जुद्ध सू 'जूंझणौ' शब्द वणियो, इण सारू 'जूझार' अर 'जूंझणौ' शब्द सही है, 'झूझार' अर झूझणौ' लिखणौ ठीक नही। 'गतागम' शब्द 'गत—आगम' रौ सधि-रूप है, जिणनै केई लोग 'गताघम' लिखै सो ठीक नही।

च्यारूं कानी या च्यारूं कूट शब्दा में 'कानी' रौ अरथ किनारौ है अर 'कूट' रौ अरथ दिशा है। केई लेखक च्यारूं 'खानी' या 'चार खूटा' लिखै सो गळत है। 'इधको' अर 'वधतौ' शब्द 'अधिक' अर 'वर्द्धन' सूं वणियोडा है सो यानै 'इदकौ', 'इदकाई', 'वदताई' जैडा गळत रूपा मे लिखणा ठीक नही। 'चोखौ' नै 'छोको', 'डौढौ' नै 'डोडो' लिखणौ भूल है। डाढ-डाड, सांड-साढ, गोट-गोठ, ऊव-ऊभ, रुळौ-रूळौ, चुळियौ-चूळियौ, निठग्यौ-नीठग्यौ, पाट-पाठ, माट-माठ, साट-साठ, माटी-माटी जैड़ा सबदां रै अरथ में घणौ फरक है, पण आजकल मन-मरजी रौ प्रयोग चालू है।

(6) राजस्थानी मे 'आवै, जावै, पावै' जैड़ा सवद तौ घणकरा साहित्यकार एक जैड़ा ई लिखै, पण 'आयौ, पायौ', नै 'आयो', 'पायो', लिखै सो सही नही है। प्राचीन वातां-ख्याता में सगळै ई औकारान्त रौ प्रयोग मिळै। 'आपरौ' शब्द नै 'आपरो' बोलणै सू हळकापणौ लखावै। अठारी संस्कृति रै मंगळीक रूप री दीठ सू शुभ अवसर माथै 'रो' शब्द से उच्चारण रोवणै रौ अरथ जतावै अर 'रौ' शब्द 'रैवौ' री मनवार करतौ लखावै। जके लोग अपभ्रंश मे 'घोडौ आयो' नै 'घोडउ आयउ' लिखीजणै री तरक करै, वानै औ ठा होणौ चाहीजै कै अपभ्रंश मे तौ 'आगणै' अर 'भीजै' नै 'आगणइ भीजइ' या 'नित सूकइ नित पल्हवइ' लिखै। जूनी राजस्थानी रौ जे एक रूप ग्रहण कियौ, तौ दूजोड़ै मे कांई ऐतराज ? एक बात खास ध्यान राखण री है कै 'आयौ' 'गयौ' लिखणौ तौ ठीक है, पण 'आयोड़ौ, गयोडौ' लिखती वेळा अंतिम अक्षर माथै इज दोय मात्रावा हुवै। जूनी लिखावट अर उच्चारण री दीठ सू औ इज रूप सही है।

(7) राजस्थानी में एक ही शब्द माथै एक अर दोय मात्रा देणै सू अरथ बदळ जावै। जठै वर्तमान रूप व्है उठै तौ दोय मात्रावां ठीक है, ज्यूं 'औ पढ़ै, ध्यान राखै' इत्याद। पण जे आदेश या अरदास व्है तौ उठै उच्चारण मुजब एक मात्रा इज व्है। जैसे—'सावळ पढे, ध्यान राखे, हे जोगमाया ! कृपा करे।'

इण दूहै री पैली ओळी मे औ इज रूप है—

माण रखे मरजे मती, मरे न मूके माण।
जब लग सास सरीर में, तब लग ऊंचौ तांण।।

इणी भांत संस्कृत री सातमी विभक्ति रै अरथ वाळा राजस्थानी शब्दा मे घणी ठौड़ा एक मात्रा रौ प्रयोग सही है।

उदाहरण रूपी—'घरे', 'आगे', 'लारे', 'बिचे', इत्याद। 'ओ' अर 'औ'

दोनूं रूप आथूणं राजस्थान में आज ई बोलीजै, पण अरथ में भेद है। 'ओ', 'वो' (वह) अळगै रो अरथ है, अर 'ओ' (यह) नेड़ै ऊभै रो उच्चारण है। 'ओ दीसै असवार, घुड़लां री घूमर कियां।' इणमें 'ओ' अळगै ऊभोड़ा सारू है अर 'दीसै' (दृश्यति) 'दीखै' विचै संस्कृत रै नेड़ो है।

(8) राजस्थानी में हुओ, हुयो, हुवो, ऐ तीनूं ही रूप आंचलिक प्रभाव सूं सही है, पण 'होयो' लिखणो ठीक नहीं है। 'होवणो' क्रिया सूं 'होयो' रो व्याकरणिक आधार गळत है। हिन्दी में 'होना था सो हुआ' सही है, तो राजस्थानी में 'होणो हुतो सो हुयो' सही है। प्राचीन लिखावट मे अर पश्चिमी राजस्थान में 'हुयो, रयो, कयो' रूप ही मिळै। 'रहियो, जहियो, सूं 'रह्यो, कह्यो,' अर पछै 'रयो, कयो' रूप बणियो। कयो नै 'कीयो' या 'कैयो', 'रयो' नै 'रीयो' या 'रैयो' तथा सहियो नै 'सैयो' लिखणो अशुद्ध है।

राजस्थानी भाषा री विशेष ध्वनिया है, जके उच्चारण में इज साव चिट्टी सुणीजै, लिखणै मे नहीं आवै।

कई कई विद्वान् मानै है कै—"मारवाड़ी में 'स' रो उच्चारण 'ह' करण री परम्परा है, लोक 'सामू' नै 'हाहू' कैवै, 'साग' ने 'हाग' कैवै।" दरअसल आ बात सही नहीं है। बारलै प्रात रा पंडिता मारवाड़ री निन्दा मे 'शतायु' नै हतायु बोलण री बात श्लोक में कही, उण सूं ओ भ्रम पैदा हुओ। असल मे 'स' अर 'ह' रै विचली एक ध्वनि 'स' बिल्कुल न्यारी है। आथूणं राजस्थान भी 'सीरो' 'हीरो' 'साबू', हाबू', 'सिगियो' 'हिगियो' ऐ दोनूं ई रूप न्यारा-न्यारा अरथा में बोलीजै है। इण सूं न्यारी ध्वनि 'स', उणी तरै है, ज्यूं 'ब' अर 'व' रै विचली 'व' ध्वनि है। राजस्थानी रै लेखकां नै शब्दा ऊंडै अरथ नै समझण री घणी जरूरत है।

'मोमका' रो अरथ मसांणा व्है सो 'भूमिका' रै अरथ में ओ प्रयोग खोटो है। 'योगदान' नै 'जोगदान' अर 'पर्यटन' नै 'परजटण' लिखणै सूं भाषा री धूड़ उडै।

आ बात सगळा ई विद्वान् मानै है कै राजस्थानी रो साहित्यिक स्तर मारवाड़ी रयो है, अर उणरो आधार मरुगुर्जर अपभ्रंश है। जूनी लिखावट में अर आथूणं राजस्थान में 'दान, मांन, नांम', रो उच्चारण आज भी 'दोंन' 'मोंन', 'गोंम' 'नोंम' ज्यूं हुवै है, पण लिखावट में फगत मींडी (अनुस्वार) लागै। इणमें 'दान' 'मान' अर 'दोंन' 'मोन' 'दोनूं उच्चारणा रो सुभीतो है। ओंकारान्त ध्वनि सूं शब्दां में ओज अर वजन लखावै।

'लेखक' रै वास्तै 'लिखारो' शब्द ठीक नहीं लागै कारण कै, 'लेखक' मे 'क' कर्ता रो बोधक है, जदकि 'लिखारो' अरजीनवेस या प्रतिलिपिकार ई हो सकै। 'पाठक' या पढ़णहार' दोनूं सबद 'पढारै' विचै घणा ठीक है। रेफ रो प्रयोग घणो नीं व्है पण कठैइ-कठैई जरूरी हुय जावै। विद्यार्थी' नै 'विद्यारथी' लिखणो ठीक नहीं, पण 'स्वारथ' या 'परमारथ' जंड़ा सबद राजस्थानी री प्रकृति रै अनुरूप है। 'क्षेत्र' नै 'खेत' या 'खेतर' लिखणो सब ठौड सही नही है। 'रणखेत' तो ठीक है पण 'कविता रो खेत' लिखणो अटपटो लखावै। केई भांयका में इकारान्त नै अकारान्त उच्चारण करै, जिणसूं अर्थ रो अनर्थ हुय जाव—'भिड़वा री पोसाल भाणांणा' नै 'भड़वा री पोसाळ' कैवतां घणो भूंडो अरथ व्है। लिखारो' नै

'लखारो' बोलीजणै सूं अरथ बदल जावै। साहित्य में हमेसा ऐड़ा शब्दां रो प्रयोग होणो चाहीजै जके शिष्ट अर मंगळीक है।

आजकल शहरी संस्कृति अर ग्रामीण संस्कृति में मोकलो ई फरक आयग्यो है। शहरा नैं ऐड़ा कई शब्द घरा मे बोलीजै, जके जैसळमेर, बाड़मेर, शेरगढ, अर घाट कांनी अश्लील गिणीजै। जके आखर मां-बेटो, या बैन-भाई आपस में नीं बोल सकै, ऐड़ा शब्दा रो प्रयोग आकाशवाणी सू अर साहित्य री पोथियां में करणो मोटो गुनाह है। साहित्य अर संस्कृति रो आधार नैतिकता अर लोक-परम्परा हुवै है। 'ठोकणो', 'मजो', 'डोफो', 'डफोळ' इत्याद शब्द आथूणै राजस्थान में गाळ गिणीजै। इया री ठौड़ दूजा मोकला ई शब्द मिल सकै, ज्यामे कोई संकोच नी व्है। 'डोफो' रै वास्तै 'खोपो', 'वोफो', ढीव, ढळ इत्याद लिख्या जा सकै। 'मजै' री ठौड 'आणद', 'हरख', 'केळ', 'उजेळ', 'राजस' घणा ई शब्द मिल सकै। 'ठोकणै' री एवज मे ठोरणो, जरकावणो, हड़ीडणो, कूटणो,—(कूट नै रायतो कर दियो, कूट नै माद घेर दी) केई आखर है।

आज राजस्थानी सारू समै जितरो अनुकूल है, उतरो पैली कदेई नी हो। ऐड़ी शुभ वेळा में शिक्षक साहित्यकारां री जिम्मेवारी घणी वध जावै, क्यू कै वारी लेखणी रो असर गांव-गांव अर ढाणी-ढाणी ताई पूगैला। ओ इज पवित्र पंथ है मायडभाषा री सेवा रो, जिणमे सहज अनुराग अर संस्कारां री लाग रो मूघो मेळ है।

साहित्य री सेवा सरस्वती री उपासना है। इणमें अंतस रा भाव रूपी पुसप अरपण करीजै। इण संग्रह में घणा शिक्षक बंधुवां मायड़भाषा री ममता रै परि-याण आपरी 'फूल सारू पाखड़ी' भेंट करी है। भारतीय संस्कृति में पुसप पवित्रता अर ताजगी रा प्रतीक है, सो राजस्थानी लेखकां री रूपाळी अर भात-भातीली ऐ रचनावा भी साहित्य-जगत सामी 'फूल सारू पाखड़ी' रै रूप मे आपरी सार्थकता सिद्ध करैला, ओ विश्वास है।

अन्त मे, शिक्षा-विभाग राजस्थान रै प्रति अतस रो आभार प्रकट करणो म्हैं म्हारो कर्तव्य मानूं हूं, जिणरै नेहभरियै निमन्त्रण सूं राजस्थानी साहित्यकार शिक्षकां री प्रतिभा निरखण अर परखण रो शुभ अवसर मिळियो। मायड़, मायड़-भोम अर मायड़भाषा री सेवा सपूताचार रो ऊजळो आरांक गिणीजै। माध्य-मिक शिक्षा मे राजस्थानी री ठावी ठौड़ बणावण रै महाजिग में शिक्षक साहित्य-कार घणै हेत-हुलास सू सक्रिय आहुति अरपण कर जस रा भागीदार बणैला। इणी आस अर विश्वास रै साथे मायड़भाषा रा सगळा ई सेवाभावी सपूत शिक्षकां नै घणा-घणा रंग, घणी-घणी वधाई।

कविया-निवास
पोलो II
जोधपुर (राजस्थान)

शक्तिदान कविया

विगत

कथावां

कविता, गीत, गजल

फूल सारु पांखड़ी

उणियारौ

□

भीखालाल व्यास

ज्यूं'ई बस श्राय'र स्टैण्ड माथै थमी, नीचै ऊभोड़ी, बस नैं उडीकती भीड़ बस मांय चढ़ण सारू दौड़ी। बस श्रागे सूंई भरियोड़ी ही, मांय पग राखण नैं ई जगै नीं। म्हे ई धक्का खांवतौ बस रा पावटिया माथै चढ्यौ। लारलौ म्हनैं धक्कौ देवतौ श्रर म्हैं श्रागलै नैं। ज्यूं-त्यूं कर नैं सीटां रै बिचै गैलैरी में पूगौ, पण उठैई ऊभौ रैवण नैं ई जगै नी—सीटां माथै मिनख श्रर गळी मांय सामान री भरमार। म्हे जेब मांय सूं रुमाल निकाळ श्रर चेहरै रौ पसीनो पूंछतौ ऊभौ रह्यौ। मिनख कूकण लागा—हमें हालौनी भाई। क्यूं वाळौ हौ। श्रर कण्डक्टर एक जोर रै भच्चीड़ साथै दरवाजौ भिड़ायौ। ड्रायवर बस स्टार्ट कीनी—एक झटकै साथै सब एक-दूजै सूं श्राफळिया श्रर बस बहीर व्ही।

इतराक मांय तौ म्हारै खनैं हाळी सीट माथै बैठोड़ो एक श्रादमी ऊभौ व्हियौ श्रर म्हनैं नमस्कार करतौ बोल्यौ—नमस्कार मास्साब ! श्राप श्रठै विराजौ...।

म्हैं उणरै सांमी देख्यौ—सफेद झक्क तेवटौ श्रर कमीज, माथै चूंदड़ियौ साफौ' बिच्छू रै डंक रै जैड़ी मूछा, गोखरु पैरयोड़ै कांनां मांय श्रन्तर रा फूंहा ठूंस्योड़ा, सुरमौ श्रांज्योड़ी श्रांख्यां, पगां मांय भीनमाल री लचकती मोजड़ी श्रर माय मोजा, कमीज रै जेब मांय बटुवौ श्रर रुमाल, खोळै मांय सानदार टू इन वन......म्है पिछांणण री कोसिस मांय उणरै सांमी देखतौ रह्यौ...ऊपर सूं नीचै तांई...ऐडी सूं चोटी तांई...

—श्राप विराजौ सा, श्राप म्हनैं नी श्रोळखियौ कांई ! श्रर वौ थोड़ौसिक मुळक्यौ।

म्हनैं वौ चैहरौ कीं जाण्यौ-पिछांण्यौ तौ लाग्यौ। घणौ ई दिमाग माथै जोर

दियो पण ओळख नीं सकियो।

म्है उणरी सीट माथै बैठग्यो। इतरी भारी भीड़ मांय कोई म्हारै वास्तै सीट खाली कर रह्यो है, औ देख'र कनै बैठयोड़ी केई सवारियां री आंख्यां मांय म्हारै वास्तै आदर-भाव जागो। म्हनै जांणै जेठ मे छियो मिळी। म्हैं ई दूजां कानी यूं देखण लाग्यो जांणै म्हारो कद खूब ऊंचो व्हैग्यो है···म्हारै सांमी बैठोड़ी सगळी सवारियां छोटी व्हैगी है।

—म्हैं हूं सा देवीसिंघ। आपरै कनै जगतपुरै में पढ़तो हो।

—जगतपुरै रो देवीसिंघ—ओह! ओळख्यो···थू तो जोध-जवांन व्हैग्यो··· अर म्हारी आख्यां आगै सोळै बरस पैली रा चितरांम फिरग्या।

जगतपुरा री स्कूल माय देवीसिंह नै सैग मास्टर इण वास्तै जांणता कै वो उण सवां रै घर रो काम करतो···

म्है जद नुंवो नुंवो मास्टर बण'र जगतपुरा गयो तो म्हनै ई देवीसिंघ सूं 'सेवा' करावण रो मोको मिळ्यो। वो गेहूं पीसावण सूं लगाय'र रोटी बणावणी, पाणी भरणो, बरतन मांजणा, झाड़ू लगावणो, कपड़ा धोवणा सगळा कांम करतो। म्हारो इज नी सब मास्टरा रो, अठातांई कै चपरासियां रो भळायोड़ो काम ई वो करतो···कांम रो तो किणनै ई ना देवतो इज नी···उणरी डिक्सनरी में 'ना' शब्द ईज कोनी हो।

मास्टर ई उण माथै पूरा मैं'र बांन···उणरी 'सेवा' रो 'फळ' उण नै 'पास' कर नै देवता। जरै इज तो वो सफा ठोठ व्हैतां थकाई आई साल पास व्है जावतो।

परीक्षा रै दिनां मांय देवीसिंघ री सेवा-भावना की ज्यादा इज बध जावती— हमकाळै तो सा'ब पास कर दो आंवती साल स्कूल छोड़ देवूं ला···वो मास्टरां रा पग दबावतो केवतो।

अर जुलाई मांय स्कूल खुलता कै देवीसिंघ पाछो त्यार···हमकाळै एक साल निकाल दो···आवती साल आवूं तो रांमदे बाबा री आंण···।

देवीसिंघ इतरो भोळो अर सीधो कै उणरै मूंडा सूं लाळा पड़ै···मो केवतो राड आवै···सफा भोळियो।

—काई रै ऊंट! आज छांणा नी लायो···ज्यूंई मास्टर केवतो कै वो हाथ जोड़'र केवतो—हमैं जाऊं परो सा! अर चालती स्कूल में देवीसिंघ बोरी लेनै छांणा चुंगण नै वहीर व्है जावतो।

पढ़ाई में वो इतरो ठोठ कै तीजी किलास मांय बिठायो व्है तो पांच बरस ई नीं निकळ सकै···आपरो नांम ई आछी तरै सूं नी लिख सकै···नी पढ़ सकै···पण उणनै भरोसो कै उणरी 'सेवा' रो 'मेवो' मिळैला अर इण भरोसै वो सालो-साल गुड़कै।

—किसै गांव जावै है रै देवीसिंघ! म्हैं आरांम सूं बैठता पूछ्यो।

—अळसीसर जावूं सा !

—क्यू ?

—उठै म्हारौ सासरौ है। वौ सरमीजग्यौ।

—ओह ! जरै इज इतरौ बण-ठण नै निकळयौ है ! अपटुडेट होय नै ! म्हैं मुळक्यौ।

—आप सिध पधारौ सा !

—म्हैं ई अळसीसर इज जावूं हूं। म्है घाटकी हिलाई।

—क्यू सा ! अबार वठै 'पोस्टिंग' है काई ?

—हा, भई !

—हमें तौ सा, हेडमाडसा वणग्या व्हौला !

—हां···

अर पछै अठी-उठी री वातां होंवती रैई। पण म्हनै रेय-रेय नै देवीसिंघ रौ दूजौ रूप याद आंवतौ अर म्हारै मूंडै में की फीकौ-फीकौ लागतौ।

अळसीसर ठेसण माथै म्है उतर्यौ।

—चालौ सा ! चाय तो पी लेरावौ···

म्हैं उणरी मनवार नै नीं टाळ सकियौ। कनै री होटल मांय पूगा।

—कांई सा ठंडौ मंगावूं। अर म्हारै जवाब सूं पैली इज दो 'थम्स अप' रौ उणै 'आर्डर' देय दियौ।

—घणां बरस सूं दरसण व्हिया सा।

—हां भई ! यू इज है ! जगतपुरौ छोड्यां नैई बारै बरस बीतग्या' 'पाछौ कदैई उठी नै जावण रौई काम नी पड्यौ।

—कदै ई पधारौ क्यूं नी सा !

—देखौ भगवान है···म्हैं पांणी रौ घूंट भरतां पूछ्यौ—हमें काई काम करै···?

—कांई कोनी सा, खेती करूं हूं। काळ पडग्यौ। लारली साल रा थोड़ा दांणका व्हिया हा···बाकी सब मोल—उणै हाथ जोड़ दिया।

—ओर तौ सब ठीक है।

—ठीक है सा, हमकाळै सरपंच रौ चुनाव लडियौ हौ—जीतग्यौ···आठ सौ वोटां सूं···पूरी तैसील में इतरा वोटां सूं कोई नीं जीत्यौ। उणरै मूंडा माथै जीतण री खुशी देशी घी री चमक री गळाई चमकी।

—वाह रे सरपंच ! अर म्हनै लाग्यौ के म्हारै मूडै मांय फेर कोई सूगली चीज आयगी···सरपच अर इतरौ गिरियोड़ौ···उणरौ स्कूली इतिहास इतरौ बोदौ ···थूकवा जोग···अर वौ इतरा वोटा सूं जीतै···जनता रौ राज है भाई···! पण म्है म्हारै मन री बात मूंडा माथै नी आवण दी।

छोरो 'थम्स अप' री बोतलां राखनै गयो। देवीसिंघ रो रूप म्हनै 'थम्स अप' जेड़ो लागो—ऊपर सूं साफ पण मांय सूं काळो-भट्ट।

—हां भाई! थारी सेवा खूब याद आवै। म्हैं एक घूंट भरतां कह्यो।

—आप सवां री मैरबानी ही सा! आप तो घणा ई पढ़ावता हां पण म्हारै भेजै मे तो जांणै बांटो भर्योड़ो है।

—हां जरै इज तो थूं पाछो बदळो चुकाय दियो!

—कांई सा!

—थूं जोगारांमजी नै 'खो' देय नै गयो परो···म्हारै मनरी बात आखिर म्हैं उणरै सांमी परगट कर इज दीनी।

वो एक पळ तो डाफा-चूक व्हैग्यो···जांणै किणी ई बळतो डांभ टेक दियो व्है ·· सरड़ाट् करतोडो···कीं नी बोल सकियो।

—ऐड़ो नीं करणो हो गैला! सेंग सेवा में घूड़ नांखदी। म्हैं बळती में पूळो नांख्यो।

—म्हनै कुमत आयगी सा···वो नीची निजरां कियां धीरै-धीरै बोल्यो—म्हारै मांय थोड़ी सी ई अकल होवती तो म्है अैड़ो कदेई नीं करतो—वे म्हारै माईत बराबर हा···पण हमे तो आप म्हनै इज दोष देवोला···पाछो मूंडो ई म्हैं तो नी बतायो···सारो ई दोष खुद रै माथै ओढ लियो···पण साची बात तो दूजी इज है··

—साची नै भूठी···म्हैं बात काटी।

—आप भलै ई विश्वास मती करो सा पण उण दिन री बात मे म्हारो दोष इतरो इज है के म्है सीखावै में आयग्यो···म्हैं महात्मा गांधी रो अध्याय नी दोहरा सकियो···उणरै चेहरे माथै पछतावे रा भाव हा।

—कांई?

—आप केवता हा नी सा के महात्मा गांधी नै 'केटल' री स्पेलिंग नी आंवती ही। उणरा माडसा उणनै स्पेलिंग री नकल करण रो कह्यो तो उणा नी कीनी। उणा सोच्यो कै मास्टर तो नकल करणियां नै रोकण वास्तै व्है···वो नकल नी करा सकै···वाड़ खेत नै नी खा सकै···

—हां पण थारै कांई व्हियो?

—म्हारै वाड़ खेत नै खा लियो सा·· उणै कह्यो···।

उण दिन देवीसिंघ थोड़ो मोड़ो स्कूल आयो हो। सांमै बैठोड़ै मास्टर जोगा-राम कह्यो—इतरो मोड़ो कीकर मरियो है?

—थोड़ो काम हो, सा।

—कांई कांम हो? अठी मर!

—सा, रामसिंघजी माडसा री लुगाई रा कपड़ा धोवतो हो सा···उणै हाथ

—है सा…देवीसिंघ धवरीजग्यो ।

—हैं सा काई ढीव…ठरकाय दीजे…लारै म्हैं सब देख लेवूंला…रामसिंघ उणनै थावस बधायी ।

अर म्है सा एक दिन मोटौ ग्रायो पर पछै काई व्हियो वो ग्राप सूं किसो छानो। म्है थाप मार तौ दी पण पछै म्हनै व्हियो के म्है बोत वड़ी गलती कर दी…घूड़ खायली…पण पछै काई व्है…हमैं तौ उण बात नै घीड़ाई नी पूग सकै… सो म्हैं तौ वठै सू तेतीसा मनाया सो सीधो ढाणी ग्रायनै इज थम्यौ ।

म्हारै जीसा नै ठा पड़ी तौ उणां म्हनै कुत्ते रै पेट घाल्यौ पण कांई व्है ! म्हारै जीसा जोगारामजी सू माफी मांगण नै ई ग्राया…पण म्हारी ग्रात्मा म्हनै इसी धिक्कारण लागी के पाछौ म्हैं मूड़ो नी बता सकियो ।

देवीसिंघ रै मूडै सू ग्रा तौ एक नुंवी इज बात सुणी…तो इण मे रामसिंघजी रौ हाथ हो…म्हनै झटको लाग्यो…राष्ट्र निर्माता रै इण रूप री तो म्हैं सोच ई नी सकतौ हो…बालकां मे संस्कार निर्माण री बात करणिया…काची माटी सूं ठावको घड़ लो बणावण री बात करता—राष्ट्र निर्माता रो ग्रो दूजो रूप हो…क्रूर हो… कुरूप हो…पण हौ साचो…म्हैं म्हारी ग्रांख्या मीच दी…ग्रांख्या ग्रागै एक चेहरो दिखियो…कुरसी माथै बैठोड़ो छोरां नै भणावतो…नदी किनारै बैठोड़ो टावरां नै उपदेश देवतो…ग्रर देखतां-देखता उण चेहरा माथै मस्सा निकळण लागा… काळा-काळा…मोटा-मोटा… ग्रर धीरे-धीरे माय सूं रस्सी टपकण लागी…ग्रर देखतां-देखता सारै मूडै माथै चिगदा पड़ग्या…माखियां भणकीजण लागी…उल्टी होवण जिसो कंठ होयग्यो…म्है ग्राख्या खोल दी… सामै देवीसिंघ बैठो हो…म्हैं उणनै ग्राख्या फाड़-फाड़'र देखतो रह्यो ।

उणरी ग्राख्या भरीजगी ही, वो गळगळो व्हैग्यो हो…म्हारी की दोष कोनी सा …म्हारी इतरी ग्रकल ई नी ही के म्हैं की सोच सकूं…माडसा रौ ग्रणूतो मोह म्हनै की सोचण ई नी दियो—ग्रर म्हारै हाथ सूं ग्रो काम व्हैग्यो…गुरु बाप रै बरावर व्है, जिणनै म्हैं कपूत कळंक लगाय दियो…

हमे ग्राप भलै ई म्हारै जूत ठरका द्यो सा…म्हारी खाल उतरवाय द्यो सा…म्है 'चू' ई करूं तो ग्राप म्हनै फिट कैवजो…इतरो नुगरो म्है कोनी हूं…म्हनै कठैई जोगारामजी मिळ जावै तौ म्है उणांरा पग पकड़ण नै त्यार हूं…उमर-भर उणांरी हाजरी उठावण नै त्यार हूं…पण ग्राप सब तौ म्हनै इज दोष देवोला… म्हारै माथै सूं ग्रो कळंक उमर-भर नी मिटैला…ग्रापरै टैम रा कोई माडसा या छोरा मिळै तो सब म्हनै ग्राइज बात कैवै…याद दिरावै के थै जोगारामजी रै 'खो' दे दिनी…ज्यूं 'खो-खो' खेल मांय छोरो लारै सू ग्राय'र थाप देवै ज्यूं थैं ई जोगारामजी रै कियो…पण साची बात म्है ग्रापरै ग्रागै खोल दी है…इण में राई-रत्ती ई झूठ व्है तो म्हारै जबांन में कीड़ा पड़ै…कैवतो-कैवतो वो हुचकै भरीजग्यो।

म्हनै वो सोळै बरस पै ली रो, अल्लारी गाय बण्योड़ौ…अबोध बालक दिखियौ …सफा भोळौ…सफा सीधौ…आज ई कै देवूं के देवीसिंघ मुर्गो बणजा…तो इणरी इतरी हिम्मत नी ह्वैला के ना देय सकै…हमार वण जावैं…नीचौ झुक'र कान पकडलै…तो काई म्हारौ रूप सही नीं है…इण भोळा जीव मे खोटाई म्है भर रह्यो हूं…अर पछै कैवूं के छोरा गुरु री आज्ञा नी मानै…गुरु परंपरावा इतिहासां री बाता रैयगी है…म्है आभै कांनी देख्यौ…स्यात् कठैई म्हनै इणरौ जबाव मिळै …म्हारौ रूप म्हारै सांमी इज एक सवाल बणियोड़ौ…म्हारी निजर सांमी बैठोड़ै देवीसिंघ माथै टिकगी…उणरी आंख्यां सूं दो मोती टपक'र उणरै गाला माथै होय'र लुढकण लागा…म्हारी इच्छा व्ही के म्है उण मोतियां नैं आगळियां माथै लेय लूं…म्हैं आगळी आगैं वढाई…पण पाछी खीचली…आंगळी माथै काळख जम्योड़ी ही…कठैई मोती काळौ नीं पड़ जावैं…।

□□

सोनळ

□

करणीदान बारहठ

म्हारै छोरै दूलै रै जद दूजी बेटी आई तो म्हारै माथै में झाडी-सी फूटी। बेटी तौ की निरभागी रै ही होवै, दूलै रै आ दूजी बेटी हुई। बेटो एक भी कोनी हो। म्हूं तो बेटै री आस लगाई बैठी ही, गिणता-गिणता जद दिन पूरा होया तौ औ धन आयौ। म्हारे खुद रै ही तीन बेट्या ही, सगळी जीवती रैवती तो पांच समझौ। जद म्हारी तीजी बेटी मरी तौ म्हानै बौत रोज उठ्यौ, हिवड़ै डीक मारी। मां रै तो टाबर काळजे री कोर हुवै, चायै बेटी हो या बेटो। जद म्हारै मोट्यार कह्यौ—'बावळी, इण धन खातर क्यू रोवै है। पण कोई बात नी, रोवै तौ रोय लै। एकर ही रोवणौ पड़सी, जे जीवती रैवती तौ जिन्दगी भर रोवणौ पड़तौ, अबै तौ एकर ही रोवणै सूं लार छूट ज्यासी।' म्हारै मोट्यार री बात साची ही। तीनूं छोर्या म्हानै आवती-जावती रुग्रावै है, पण तौ एकर ही रुग्रार लारो छुड़ा लियौ।

दूलै रै दूजी छोरी हुई तौ बात म्हारै मोट्यार री ओजूं याद आई। म्हारै तो कित्तोक जीवणौ है, पण दूलै अर दूलै री बहू नै जिन्दगी भर रो रोवणौ पल्लै पड़ग्यौ।

बीनणी रै आख्या में आंसू देख्या तौ म्हूं धीरज बंधावती बोली, 'कोई बात नी बेटी, आघी रै लारै ही मेह आया करै है, बेटी होवै वठै बेटौ भी होसी।'

आ छोरी आई जद आ जेर-सी ही, पण दिन-दिन बड़ी हुई तौ आ रूप छांटण लागगी—जद ही छोरी रौ नाम राख लियौ—सोनळ। डावड़ी रा भूरा-भूरा बाळ एहड़ा लागता जाणै सोनै रा हुवै। मोटी-मोटी गट्टा-सी आख्यां, तीखो तीखो सूग्रै री चूंच-सो नाक, पतळा-पतळा पापड़-सा होठ, छोटी-सी मुह फाड़, गोरी निछोर जाणै पून्यूं री चांदणी हुवै। सौ छोर्यां में सोनळ दीसै तौ सोनळ

न्यारी ही दीसै।

सोनळ म्हारै बौत लाड़ली होगी। वा म्हारै ही हाड हिलगी। म्हारै साथै सोवै, साथै ऊठै, साथै रै वै, म्हानै भी वी बिना कोनी श्रावड़ै। कदै-कदै मोटोड़ी छोरी वेवली बीनै धमकावै तो म्हूं वेवली नै ही लड़ूं। पण सोनळ नै होठ रो फटकारो ही कोनी लागणद्यूं। बीनणी रै सोनळ रै बाद दो टाबर और हुम्रा, पण सोनळ जैड़ी म्हानै श्राछी लागती, बिसी वै तीनूं श्राछी कोनी लागती।

बीनणी पीरै तो जावै ही, साथै टाबर भी जावै। पण म्हूं तो बीनणी नै म्रा ही कैवूं—'बीनणी सोनळ नै म्हारै कनै छोड़जा।' पण टाबर तो टाबर ही हुवै। वै मोह सार कांई जाणै ? टाबरां रो जीव ग्रर टाबरां साथै जावण नै करै। 'म्हें भी नानेरै जाऊं,'—ग्रर वा म्हारी मनस्या सू ऊपर नानेरै चली जावै। म्हारो बौत जीदोरो होवतो। रात नै नीद कोनी श्रावती, बीयां ही बूढ़ा हाड़ ही ज्यावै तो नीद कोनी श्रावै, पण सोनळ री याद में घण करी रात जागती कटती। जद कोई बीच में बीरै नानेरै जावतो तो म्हूं कैवती—'ग्ररै, सोनळ श्रावै तो ले श्राई, भाई। टाबर नै श्रावणै-जावणै रो कोड हुवै। वा म्हारो, नाम लेंवता ही श्रा जावती, म्हारो जीव टिक ज्यावतो, नीद सोरी ग्रावती।

ग्रबार बीनणी रै श्रोजूं टाबर होवण श्राळो हो तो बीनणी पीर नै व्हीर होवणै री सोचली। 'ग्रठै कुण होड़ी करसी मां-सा, म्हूं तो पीर जास्यूं।' बात साची ही, म्हारै हूं तो म्हारा हाड ही कोनी समै, इत्ता टाबर सामणा, फेर जापै रो काम, सियाळै री रुत में कयां पार पड़ै। छोर्‌या नै समाचार घाल्यो तो कठैऊं श्रावणै रो समाचार ढंग रो कोनी श्रायो। कीरी भैंस दुग्रारकी ही, कीरै श्राप रै ही जापो होवण श्राळो हो तो कीरो मोट्‌यार मांदो हो। छेकड़ बीनणी नै पीर जावणो पड़्‌यो, पण सोनळ नै म्हूं राखी।

च्यार मीना में सोनळ ग्रर म्हूं—बस दो ही जीव। दूलै नै तो खेत सूं ही फुरसत कोनी ही। म्हें ऊठां तो साथै, रोटी खावां तो साथै, कठै जावां तो साथै ग्रर सोवा तो साथै। श्रापस मे बातां करां, वा हुंकारो देवै, म्हूं बातां कैवूं। सोनळ ग्रर म्हूं दो सरीर ग्रर एक जान होग्या।

म्हूं कठै ही जावतो सोनळ साथै जावती। म्हारी श्रागली पकड़ नै चालती। म्हूं दादो ही, पण वा म्हानै मां कैवती। *श्राखै रस्तै सवालां री झड़ी* राखती—श्रो कांई है मां ?

—ऊंट

—म्हूं ईं पर चढ़स्यूं

—चढ़ास्यां, बेटा।

—श्रो कांई, मां ?

—मोटर।

—म्हूँ मोटर पर चढ़स्यू ।

—मां…मा…

भ्राखैं मारग छोटी-छोटी, मीठी-मीठी वातां, म्हूँ बीरैं हर सवाल रौ जवाब देवती ।

वा म्हारैं साथैं सोवती, म्हूँ वीनैं बाता कैंवती जावती, कैंवती जावती, बा हुँकारो देवती, फेर वीनैं नींद भ्रा जावती । म्हूं भी सो जावती ।

रात नै मनै तो जाग भ्रावती ही रैंवती । पसवाडै सूती सोनळ नैं म्हूं चूम लेवती, लाड कर लेंवती फेर भ्रोजूं नींद भ्रा जावती ।

एक दिन चाण चकैं सोनळ बोली—मा, म्हारौ तो पेट दूखै ।

—भ्रावण दे तेरैं पापानैं, म्हूँ गोळी मंगा देस्यूं ।

दूलो भ्रायौ तो गोली मगाई, पेट री पीड़ ठीक हुई ।

दूजैं दिन वा फेर बोली—मा, पेट दूखै ।

म्हूँ फेर गोळी मगादी ।

तीजैं दिन म्हूँ भ्राप बीनैं लेयन डाक्टर कनैं गई । डाक्टर वीरैं टीको लगा दियौ ।

दोपारैं री टैम, सोनळ म्हारी गोदी मे सूती । की भ्रणमणी ही । म्हूँ पूछ्यौ—सोनळ, कांई दूखै है ?'

—की कोनी दूखै । वा बोली ।

स्यात् टीकै स्यू नींद-सी भ्रावैं ही, कदे भ्रांख बन्द करैं ही, कदे खोलैं ही ।

फेर वा भ्राख उघाड़ नैं बोली—मां, तू मनैं छोड़'र मत जाई ।

—ना बेटा, म्हूं तनैं छोड़'र कोनी जाऊं, म्हूँ कैयौ ।

भ्रो सवाल वा घणी वार करती, पण भ्रबार म्हारौ जी भ्रौर तरियां होग्यौ । म्हूँ दूलैं नैं हेलौ मार्‌यौ ।

—भ्रो दूला, भ्रा किया करैं है ?

दूलैं भ्रायनैं देखी—ठीक है, मा ।

—मा, मा, तू मनैं छोड़ कै मत जाई, म्हूँ तो मरूं हूँ ।

वीरा होठ सूकग्या । दूलो भ्रायो, पाणी ल्यायो, वीरैं होठ रैं लगायो; बण गुटको लियौ भ्रर छोरी री नाड़ लटकगी ।

सोनळ कठै ही, सोनळ तौ गई ।

म्हूँ वीरैं ऊपर पड़गी मनैं ऐडौ रोज फूट्यौ जिसौ कदेई नी फूट्यौ ।

दूलौ भी रोवण लागग्यौ, भ्रासै-पासैं रा टाबर रोवण लागग्या ।

इत्तै मे एक पड़ौसी भतीजो भ्रायग्यौ । बोल्यौ—क्यू रोळौ कूको मचा राख्यौ है, काकी । इयां तौ तूं काकौ गयो जद ही कोनी रोई ।

म्हूँ कूकती रैयी, कूकती रैयी—म्हारी सोनळ ए…

—परनै हो, टीगरी तो है, इसी टीगरी दो ग्रोर है, राद कटी, लारो छूट्यो।
पूरो पच्चीस हजार रो खरचो मिट्यो है, न्याल होग्या, म्रा कैयनै बण सोनळ नैं म्हारी गोदी सूं लेली।

म्हानैं इसी रीस म्राई कै डाग री देय'र ईंरो सिर फोड दूं।

□□

वात जगदीस महाराज री

□

रामनिवास सोनी

घणी जूनी वातां आंपरी सी लागै जदै जगदीस महाराज खुद आपरा कूं कूं पगल्या इण धरा धाम माथै माड्या। वो जमानौ घणी सिरै, सस्तीवाड़ौ ग्रणूं तौ। मण सवा मण रौ धान, पूगी दोय सेर नेड़ौ घी अर वाकी चीजां तो वेभाव। जगदीस महाराज जद सू होस सभाळयौ, इणी वालाजी मिन्दर री सेवा-पूजा करता। उणारा मा बाप ई बाबै री पूजा करता समूची जिनगाणी गाळ दिदी जिणरौ परतक परचौ—ग्रे जगदीस महाराज, वावै री बजर देही सरीसा। लाबौ पूजतौ डील डौल, कटोरा सा नैण, रग गेऊ वरणौ, लिलाड माथै टीकौ हींगळू रौ लाल चट्ट। कस्बै माय जगदीस जी किणी सूं छाना कोनी। भरी जवानी में उणारी बजर देही, पातळी कड़, चट्टान सरीखी कमर काठी अर बेथाग बळ किणी नामी-गिरामी पेहलवान सू कम नी पण ग्रखाड़े कानी कदेई भाक्या कोनी। आपरै मा-वापा री अकूकी संतान। आगै पाछै नांव वालाजी रौ। ब्याव सगाई री कदेई जची ई कोनी। आखी उमर अखड ब्रह्मचारी पण काया रै कदेई रंजी नी लागी सो नी लागी।

वालाजी रौ ओ मिन्दर कस्बै सूं साव उतराधौ, घणौ जूनौ, सिळप कळा रौ बेजौड़ नमूनौ। जठे अेक मोटौ तळाव तिरियां मिरिया, च्यारूं मेरे पक्का घाट। पागती खरवूजा वावड़ी जिणरौ पाणी जाणै इमरत रा गुटका। बालाजी रै भोग सपाड़ा ताई पाणी इणी वावड़ी रौ आवतौ। मिन्दर रौ मोटौ जाव चौफेर पसरियोडौ, गेहूं चणा रा खेत, हरियाळी रा गलीचा माथै फळा रा बाग, सूडिया बेरा, अरठा री चरड़ चू, दरखतां री सीतळ छाया पाखिया रौ कळरव अर पाणी माथै तिरता भात-भात रा पखेरूआं री धमरोळ। ऊठै ई म्हाराज रौ डेरौ। बड़ कां री भोळावण, सेवा-पूजा टैमौटैम। महाराज रौ मनड़ौ तो अठेई

रमतौ वस्ती माता कांनी सायत् होळी दिवाळी ई जावणौ पड़तौ।

जगदीस महाराज पूरा पौंचवान अर जोगी सरीसा। आपरै नेम धरम रा पक्का। बोलता बौत कम पण सुणता वधीक। उणारौ केवणौ साव सांचौ के रामजी कान दिया दोय अर मूंडौ दियौ एक। राम रौ नाव आवै जदेई मूंडौ खोलणौ बाकी चुप्प चोखी। आरती री वेल्यां वे गणमण गणमण जरूर बोलता पण सुणवाळा नै अेक सवद ई साफ पल्ले नी पड़तौ। घणकरी वात पाटी माथै लिख र करता के इसारा सूं बत ळावता। दिन-भर आपरी धुन में लवलीन रेवता। गीता, भागवत, रामायण आद धरम ग्रंथ पढ़ता पण सुणतौ धणकरौ उणारौ मनसाराम। सती सेवग महाराज नै रोचक कथा सुणावण री फरमायस करता पण वे तो हाथ भड़काय देवता। धरम री दुकानदारी सूं वे घणी नफरत करता। कथनी कम अर करणी ज्यादा। वस्ती में उणा वावत भांत-भात री चोखी भूंडी दंत कथावां जुड़ती पण सौ टच रौ सोनौ आग में नीं वळै। उणारै दरसना सूं ई घणी तृप्ति मिल जावती। उणा रै वाला जी रौ पक्को इस्ट हौ।

जगदीस महाराज ठीक च्यार बज्यां तड़कै उठता। जंगळ फरागत रै बाद वारूंमास बावडी में मिरग छाला सिनान करता। प्राणायाम, नेति-धोती रौ पक्को नेम साधता। तळाव बावड़ी री तळेटी मे घंटा घंटा भर संध्या वंदण करता। बावड़ी सूं अवाज गूंजती-राम निरंजन, सब दु.ख भंजन। बजरंगवळी री आरती री टेम तो म्हाराज सागी बजरंगवली सरीखौ रूप धारता। ओ ई नेम रोजीना रौ। अेक धान की रोटी अेक टेम अर मिन्दर री गाया भैंस्या रौ अण भावतौ दूध महाराज ई आरोगता। जगदीस महाराज देव-भोग रै बाद अकेलाई भोजन करता, अतरौ सगळौ कुण अरोगतौ, बाबौ ई जाणै।

कस्बै रा पाखंडी विरामण जगदीस जी नै नीचौ दिखावण में कसर नी छोड़ता पण इण जोगी री माया रौ लेखौ जोखौ दूजौ कुण जाणतौ। अेकर कस्बै रा हाकम दसोटण माथै जगदीस जी नै भोजन तांई नूतिया अर ३०-४० विरामण ताई खीर पूड़ी री रसोई त्यार करवाई। जगदीस जी तो सारां पेली तीसां आदमियां जोगी खीर साफ कर दी जद सूं आ कहावत कस्बै मांय चाल पड़ी--- "और बामण तीस अेकलो जगदीस।" बाकी विरामण जदै भोजन वास्तै आया तो इण चमत्कार रै आगै हक्का बक्का रेग्या। हाकिम नै भी जद पतौ लागौ तो वो म्हाराज रौ उण दिन सूं पक्कौ चेलौ बणग्यो।

जगदीस महाराज शनिवार-मंगळवार विशेष पूजा करता अर 108 दीयां री भारी भरकम आरती घंटा भर घुमावता तो पसीना सूं हळाबोळ हुय जावता। इण दिन सैंकडूं नर-नारी भगत दरसणां रौ लाभ लेवता। घंटा, घड़ियाळां, झाळरां री गिगनभेदी रणंकार, धूप, दीप अगरबत्ती री मैंकार, टकोरां री टणन-टणन, नगारां री अभ्रभेदी आवाज सूं जाणै साक्सात बाला जी महाराज री सवारी

पधारती निजर प्रावती। इण मिन्दर री च्हैल-प्हैल सू कस्बै री छटा दूणी लागती। घणकरा लोग कॅवता के वावो भ्रर महाराज दोय कोनी, भ्रेक ई है।

ऐकर-ऐक भागवती विरामण दूजै गाव सूं मिन्दर में कथा करण नै श्रायो। जगदीस जी उणारै ठहरणै, खाणै पीणै सब वात रौ प्राछो इन्तजाम कियो। थोड़ा दिनां वाद कथा रौ रग जम्यो। कस्वै रा हुजारूं भगत भागवत री कथा रौ रस लेवण सारू पधारता। चढ़ापो पगो प्रावतो भ्रर भजन भाव भी पूरा होवण लागा। दिन-रात मेळो तमासो सो लागतो निजर प्रातो। जगदीस जी ने श्रा दूकानदारी कम रुचती पण काई करता। भगत लोग विजली री लाइटा सूं मिन्दर नै इद्रपुरी सरीसो वणा दीनो रात-दिन मेळो, नाच गान, दान, दक्षिणा, भोग भजन मानद वरसतो। कथा समापन रै दिन तो पिडत जी महाराज री परीक्षा लेवण सारू थोड़ी छेड़खानी सरू की दी। पेली तो महाराज मौन रह्या पण प्राखिर पाटी मायं माडर एक सवाळ पिडतजी नै पूछ ई लियो—

"प्रमावस ससि कहा रहत तिमिर कहा रहत सरद निसि।
कहा श्ररुग के चरण सेस के करण कौन दिसि॥
कौन प्रवनि के पिता कौन मकर के भ्राता।
कहां मदन की देह कहा कमला की माता॥
कै वार स्रिष्टी प्रलय भई कै वर सिया रघुवर वरी।
व्यास जनम कै वर लियो कै वर वसुधा फिर धरी।

श्रो सवाळ सुणता ई पिंडतजी ढीला हुया भ्रर सगळा रै सामनै मजूर कियो के जगदीस महाराज साचाई पोंचवान वचनसिद्ध पुरुष है। जे कोई इणा नै मूरख, अपढ भ्रथवा गवार समझै वै खुद गवार है। उण दिन सूं महाराज की कीरत वस्ती मे दिन दूणी रात चोगुणी फैलगी।

जगदीस महाराज भ्रेकर एक वैदजी रै दवाखानै वैठा हा। जमालघोटा री गोळिया त्यार हुय री ही। पागती खडा लोगड़ा मजाक करी के महाराज तो 50-60 गोली खाय जावै। महाराज पेली तो मुळक्या फेर उणा मिनखा री वात राखणै खातर 50-60 गोळी जमालघोटा री खायली भ्रर दो घटा ताई उठैई विराजमान रैया। कस्वा री खासी भीड़ उठै भ्रेकठी हुयगी। महाराज तो हंसता रैया भ्रर इसारा सू वात करता रैया पण उण विप रो भ्रसर महाराज पर नीं हुयो।

महाराज री सारी जिनगानी घणकरी गुप्त रैवती। योग, श्रासन, प्राणायाम, नेति-धोती पर उणारो पूरो भरो सो हो। वे इण तरै विप नै समन कर देवता। इण कस्वै सूं दूर-दूर ताई म्हाराज रै चमत्कार रा किस्सा चालै पण महाराज तो चमत्कार सूं हमेसा ई दूर रैवता। दिन-दिन महाराज

रो सरीर घणो बोदो पुराणो पड़णै लागो पण जठै ताई जिया कड़प नी गई। आखिर 115 बरस री आयु मांय श्रो उत्तम पुरुष आपरो दैनिक कर्म अर पूजा करतो-करतो देही रो विसर्जन कर्यो जदै मकर रो सूरज उत्तरायण आयग्यो क्यूं कै म्हाराज आपरी मृत्यु री तिथि, समय, लग्न सब कुछ पेली ई बता दीवी। जगदीस महाराज री समाधि इण बावड़ी रै किनारे हाल ताई खडी दिखाई देवै अर बावड़ी रै गरज सू अजूं तांई अवाज आवै—
"राम निरजन सब दुःख भंजन।" ऐड़ा सत्पुरुषा नै जुगां रो जुग-जुग परणाम।

□□

पुरस्कार अर मुकलावो

□

नानूराम संस्कर्ता

जीवणराम काम सू काम राखै; बेमतलब की सू ही बोलै, न भाकै। छोटी ऊमर, मामूली घर अर अक्कल सू मास्टर वणग्यो। रौबीलो-मुहणो, धोयो मंज्यो दिल राखणियो, ऊजळै विचारा सूं मीठो बोलणियो, दयाधारी अर सेवा भाव सारू गरीबा रो दास। पण धुन रो धणी इत्तो गाढ़ो कै कस्वै मे चायै कू ही हुवो, उवो आपरै धंधै रै सिवाय की री कूड़ी खुसामद करणी अर हाजरी भरणी जाबक नी जाणै! आप खुदरै भणणै अर टाबर भणाणै में ही राजी रैवै। जकै कारण ही बी० ए० पास है—नहीं तो अठै स्कूल रा मास्टर दसवीं-इग्यारहवीं में ही हीडै; मकोड़ां-अकोड़ां ज्यू आंटा ठूंढ हुया नेतागिरि मे गैगद घूमता फिरै। वै आपरै मन मोटा है; लोकल टीचर रै गुणां नै काई साहरो कुरब-कायदो दे सकै। उवै तो उणरी हर समै चुगली-चाटी अर ऊपर अफसरा तांई विसरावणा ही करता रैवै है। गाव रा डांगी भायेलां सूं सिकायत भळै भेजा देवै।

पूरी छुट्टी हुई, दफ्तर मे बुलायो। सागड़दी हुस्या। वो नूवैं नैचै हाजर हुयो। हैडमास्टर सा'व, आव मुख उवै री बदळी रो हुक्म ओळियो फरमाय-दराय दियो। जीवणराम चुपचाप हुक्म रो कागज झाल'र घरां आय पूगो। पोथी-पानड़ा कागजियै साथै सिरांथै नाख'र झट मांचै माथै दै पड़्यो। सोच्यो—"जिला शिक्षा अधिकारी जी यो दूसरी बार आॅर्डर भिजवायो है। पण हम्मकाळो मसौदो डाढ़ो करडो है। लिख्यो है—"मास्टर स्थानीय नही चायै।" हैडमास्टर जी हर-गज रिलीव कर्यां विना छोडै नही। पैळड़ी बिरिया तो प्रधानाध्यापक श्रीजो व्यास हा। उवा पाछो चट्टो उथळो लिखवा दियो कै—"म्हारी पाठशाळा मे अध्यापका री आगूच कमी पड़ै; सो जीवणराम जाट नै रिलीव नी कर सकूंला!"

मा आई। थाळी में दाळ-रोटी घाल'र लाई। पाणी रो लोटो मेल'र बूझ्यो

—"बेटा के बात है ? आज उदास हुयोड़ो क्यूं आयो है ?नागड़ैखादां नेतियां भळै वदळी करवायदी दीखै ! वीस-तीस उवां री छाती में मार देणा। मुकलावौ ही हुयौ नही ! बीनणी छः मीं'णा सूं पीहर बैठी है। भळै दो हांडी रो लूण ही पूरवै नहीं ! बेटा ! हाथा-जोड़ी राखणी चायै ! आज जमानो कुण है ?" जीवण सूं सागी पड़ उथळो सुण'र उवा ही जठै ही आकळ-व्याकळ अर निरढ़ाळ होय'र गुणगुणावती बैठगी—

गुण-ओगण जिण गांव, वसता रो वेरो नहीं।
उण नगरी इन्याव—रोही आछी राजिया ॥

मास्टर जीवणराम सूतौ-सूतौ भळै सोचै के—"म्हैं जाणू इयै कस्वै री स्कूळां मे घणखरा मास्टर कक्षा में वेमनां जावै, मन सूं नी पढ़ावै। ट्यूसण वाळा टाबरां नै आणूतौ महतव देवै अर घरां उवारी टोळ भेळी कर लेवैं। उवा नै इम्हितान में पास करवा देवण री गारंटी खातर तो नकल जैड़ी भूंडी कुरीत्यां वधारै। इसा तकड़ा नामी, पास री मोहर-छाप राखणियां अठै रा जूना मास्टर जुगां सूं इयै कस्वै मे सागण ठौड़-जागा जम्या वैठा है। वै आपरै बूढ़ै अनुभव अर पक्की नौकरी रै घमण्ड में धरा पढ'र नी आवै तथा विद्यारथ्यां रै प्रस्नां नै साचै उथळै री वजाय टाळ देणा घणा चावै। उणा नै बै घरू कामां में सारो दिन तगड़ता रेवै। स्थानीय जाण'र ट्यूसण खोसण रै भूठै भरम सूं म्हारै लकड़ी कर विदकावै। बाळक तो बरोबर सगळा नै बूझै; पण वै घर-घर मानीता मास्टर इयै वात सू घणा वळै-भूजै है। म्हैं रास्तै जाऊ-आवू अर कक्षा में मन लगाय'र दिन भर पढ़ावतो रैवूं। इयै कस्वै रो वासिन्दो नूंवो मास्टर वण्यो हूं। इयै वास्तै 'गांव रै छोरै अर बारलै वीन' री जाण-चीन जोइजूं। जदी आखा अध्यापक सळिया अर म्है अळियो! उवै सैंग सरवग्य; एक म्है साधारण अलपग्य ! गुमनावा, कूड़ां दस्तखता तथा मोटा विद्यारथ्यां रै आखरां सूं दरख्वास्त-पानड़ा चालै। पण म्है सवाल बूझण वेगी घरां आयोड़ा टावरां नैं कोरा पाछा कया काढूं ? म्हारो काम खोटी कर परा'र ही आछी तरां समझाय'र मेलूं। म्हारै मन पइसा रो जावक लोभ नी; अकर-मण्यता ओळावण री जुवान सोभ है।"

जीवणराम रो तातो माथो आज रै समाज री राजनीत माथै जुंझळाय उठ्यो। झट मोठा री दाळ में दो सोगरा मरोड़'र चेपग्यौ। मां, स्याणी उवै रै मना-ग्यानां बात वदळी। जीवण री कांस कुढ़ण नै जाणती थकी बोली—"बेटा ! चिन्ता-फिकर कर्‌या सूं कईं काम नी वणै। चिन्ता माड़ी है। नौकरी री जड़ पत्थर माथै हुवै।

"नौ-करी अर एक न करी—बरोबर !"
"नौकरी न कीजे बेटा, घास खोद खाइये।
और लावै आस-पास, दूर सूं थू लाइये ॥"

"बेटा ! तेरो यो 'बेतन' बे-तन कर्यां छोड़ै । नाव ही ई रो 'तन-खा' है । इयै मूंढै मिनख रो घणो तन खाइजै । कैण ही आछो ग्यान कयो है—

चुप रैवै नौकर तो, मालिक कै गूगो है,
ज्यादा बोलै तो कैवै, मूरख बकवादी है ।
हाजर रैवै तो कैवै, ढीठ छै अनाड़ी छूछो,
दूर जाणै सू कैवै, कैड़ो मूढ़ वादी है ।
नींद आवै तो नौकर-कैया विनां सोवै कद,
भूख भारी लागै जद कैवै-श्रो तो स्वादी है ।
नहीं बोल्या डरपोक-बोलै तो बतावै नीच,
नौकरी रा भाव छोटा रैवै ना आजादी है ।

इयै रा किता खोटा खगदा नांवा बताऊं ? पगार कैवो भलां ही तलब; सैंले री कैवो भला ही दरमावो । मी'णो डाढ़ो दो' रो मिळै है—

भावै सो घालै नहीं; घालै सो नीं भावै ।
करै नौकरी पारकी; मेलै बित्त जावै ।।

"बेटाजी ! घरा रैवणो है तो घर रा उद्योग-धन्धा पनपावो अर माईता रो किसाणीपो उजाळ दिखाळो । नही तो घर सू बरतण-बिछावणा उठावो अर मागलै गाव री स्कूल सिधावो ।"

जीवण रै मधुर चित्त मजबूती पकड़ी । तरळ-सरळ अर धवळ ग्यान रो चानणो हुयो । दिढ़ निस्चै अर करड़ी तपस्या री स्थिर भावना उवै रै सूकै मुरझा-योड़ै म्हैंदरै माथै मंडगी । बोल्यो—"मां कालै बदळी माथै चल्यो जासूं । आगलो गाव म्हारै वास्तै चोखो रैसी ।"

"अध्यापनं ब्रह्म यज्ञः" बाळक भणावण रो काम ब्रह्मजिग्य रै बरोबरियो पुण्य मानीजै । पढ़ावणो तथा विद्या दान देवणो सैंसू ऊजळो काज कहीजै है । फुरतीलै ग्यान अर बधकी कर्मवीरता रै खातर मास्टर जीवणराम री आगै आछी व्यवस्था जमगी । गावांऊ भाईचारो सेवा भाव रै बख मे आयग्यो । किरतव्य पाळण री भरसक चेस्टा में जीवण नांवो साचै माइनै मे सारथक होग्यो ।

गांव गोपाळगढ़, वड़ो मिळताऊ; इयै साल ही आठवी ताईरो मदरसो मंड्यो है । मास्टर नै अठै देवता रूप मानै । धान-चून, घी-दूध अर साग-तरकारी रा खळा-पळा तथा गेड़ सू थेड़-सा लाग्योडा रैवै । गांव रा सैंग लोग खेत बीजै अर धन-पसु पाळै ।

नगरां रा मास्टर अठैरी स्कूल में आवै; पण सोसाइटी नै झुरै, बीजळी, बगला तथा पाइप जळ रै अभाव मे टिक'र नही रैवै । गांव रै माण-ताण नै बै काई जाणै ? इन्स्पेक्टर सा'व रै दौरै नै अडीकै । आपरी बदळी वापस शहर में करावणी चावै है ।

जोग-संजोग---गोपाळगढ़ रै मदरसै मे मास्टर जीवणराम जाट आ ढूक्यो। बीस रै जुवान कांवै बूढ़ो माथो, कठमठीलो-लामो, गोरै मूंढ़ै मोटी-मोटी आंख्या, काळा भंवरा अर भरभरीलो लिलाड़, मठोर तन-कठोर वसन; शिक्षा रै सजीव-च्हैरै सूरत भाखलै-कामळियै अर थाळी लोटैरो अडोळ-गैंठड़ी स्कूल रै वरंडै में त्या मेल्यो।

गांव रा लोगां जीवण रो आणो सुण्यो, हर्‌या हुग्या। आपरै जुगरो भण्यो-गुण्यो मास्टर आयो जाण'र मिलण जमघट जुड़ग्यो। घर-मकान, मांचै-डेलै जैड़ै आखै अटवर रा न्योरा करणै लाग्या। जीवणराम ही हेत-मिमता सू मिल्यो। भण-नियां टावरां रा नांवा पूछ्या अर सगळां सूं हिल-मिलग्यो। उवैरी वताई मोटी-मोटी वातां बाळकां रै माथै में वैठगी, सोनळियै गांव रै प्रधानाध्यपक री मीठी रखापत में तथा विद्यारथ्यां रै अद्‌भुत प्रस्नां अर अनोखी जिग्यासावां सू जीवण री पूरी जी जमग्यी। वो मिनख नैं मिनख मानै, उवैरी थेड़ी लोगां रै आणै-जाणै री तांती वणग्यी। अस्पताळ री काम हुवो भलां ही राज-तेजरी-जीवणराम आयोड़ै मिनखा नैं सला जोग-कागज-पतर लेखा-पढ़ी रा काम इत्याद राजी-राजी कर देवै है। कदे वदे थाणै तैसील तांई साथै ही जा आवै। हम्मै दूर-दूर रा लोग, टावर अर साख-सम्बन्ध री जाणकारी वेगी, जीवण खनै आवणै लाग्या है। जीवणराम जी जिन्दादिली पूरो नामून प्रकासै, वो समै री इत्तौ पावन्द के हैडमास्टर होठ नीं हला सकै। पण आपरी स्वाघ्याय वृति में ही जीवण जरूर आगै वगै।

सेजड़ां री जाड़-दड़ीब गांव, ज्होड़ा-कूआं रै सुख कैलास कहीजै। पसारट-पंचायत, मिंदर अर मदरसै रै पाण तो गोपाळगढ रो महतव सिखर मानीजै।

"भाख पाटी खोल टाटी; जागी जीया जूण; दे चतरभुज चूण!" धीणां री धार अर थीणै री घमक, सुघियां घर-घर बोलारा सरु कर देवै, च्यारूं मेर रै गावां रा बाळक गोपाळगढ रै मदरसै भणणै आ ढूकै। जीवणराम गुरुजी वास्तै दूध री लोटौ अर दही रो कुलड़ियौ लियां बारला टावर आवै है। गुरुजी सीधा-सादा, घणी मनाही करै; पण मूंढ़ै चढ़्योड़ा बाळक थेड़ी रै पड़वै में धिंगाणै घर जावै। मन लगाय'र घणी ताळ पढावै अर मिडिल स्कूल, ग्राम सहकारी, डेरी तथा कार-वोवारी करजै रा फारम इत्याद गांव वधापै रै आखा कामां मे जीवणराम आपरै जी सूं भाग लेवै।

मदरसो इयै साल ही राजकीय उच्च प्राथमिक हुयो है। मिनखां रै हरख-कोड पग-पग अर रग-रग नाचै। विद्यारथी नूंवां गाभा पैर्‌यां अड़ी कै। ब्याह वाळै घर री-सी फर्‌यां टंग रयी है। आज जिला शिक्षा अधिकारी जो मुआयनै पधारै। हैडमास्टरजी तथा गांव मुखियोजी हाथां माळा लिया ऊभा है। मास्टर लोग हाथ बंध्या-सा खड़ा है। जीवणराम हरिजनां नैं एक पासै जाजम माथै वैठावै है अर लड़कां रै कंठा सुवागत गाण पकावै है। सर्‌रर्‌र सट!

मदरसै रै दरूजै ग्रागै भट जीप ग्राय'र रुकै, माळा पैराइजै, हाथ मिलाइजै। परेड ग्रर सुवागत गाण सांचै ज्यूं ढळै। पछै मास्टरां रो प'रिचै चालै। जीवणराम गुरुजी नै एक निजर जोंवता हुया इन्सपेक्टर सा'व टोन सूं हुंस'र कवै—"ग्राप श्रीमान जी ग्रठै ?"।

गाव रो मुखियोजी बोलै—"जी हां ! जीवणराम जी ईं साल ही ग्रठै ग्राया है, बड़ा मेहनती ग्रर मिलतारू है। म्हारै तो ईया रै ग्राणै सूं सारो स्कूल ही सुरंगो होग्यो।"

हैडमास्टरजी बोल्या—"सुरंगो ही नहीं; स्कूल की व्यवस्था में चार चाद लग गये हैं। मेरे तो जीवणरामजी सच्चे सहयोगी है। हर काम में हर समय हाजिर रहते हैं। ग्राज का स्वागत गान ग्रौर परेड इन्हीं की कला के नव्य नमूने हैं।"

जिला शिक्षा ग्रधिकारीजी ग्रनुभवी, पुखता-प्रबुद्ध ग्रर जागतां विचारा रा घणी; जीवणराम रो चरित-चलण तथा ग्यान-गाढ़ पूरी तरा समभग्या। उवा सोच्यो—ग्राजताणी पुराणा मास्टर ही ग्रागीवाळ तथा ऊंचा मानीज्या है, सँग संमाण ग्रर पुरस्कार उवा नै ही मिल्या है। पर वरिष्टता रै जूनै ग्रहं में उवै लोग हर तरां सू शिक्षा रै स्तर नै नीचौ नाखता रैया है। इयै वास्तै स्तर नैं कायम राखणै खातर जवान ग्रर कारज सील मास्टरां रो जोस उछाव वधाणो जरूरी है। उवा नै सँजोग ही काफी नहीं; माण मोधाव तथा पुरस्कारां में ही ग्रागै ल्यावणा है। शिक्षा ग्रधिकारी जी ग्रापरै स्कूल मुग्रायनै में गांव मुखिया ग्रर प्रधान ग्रध्यापक जी री राय समेत श्री जीवणराम जाट सहायक ग्रध्यापक रा० उ० प्रा० विद्यालय, गोपळगढ री योग्यता रो ग्रावेदन श्री निदेशक, शिक्षा विभाग, राजस्थान री प्रतिष्ठा में प्रेषित कर दियो। जीप स्टार्ट समरथन दियो ग्रर भोंपू रै ग्रनुमोदन सू सरसराट करती पुरस्कार कार्यवाही प्रगति पथ जा लागी।

राजस्थान राज्य स्तर सू पुरस्कार खातर सगळी जागावां रा शिक्षक नावा विगत वध, निदेशालय सूं ग्राया। जि० शि० ग्र० जी रा० उ० प्रा० विद्यालय, गोपाळगढ़ रै प्रधान ग्रध्यापक नै वधाई रूप सूचना भेजी ग्रर लिख्यो—"श्री जीवणराम सहा० ग्रध्या० को ग्राप 5 सितम्बर के दिन ग्रायोजित शिक्षक सम्मान समारोह, जयपुर में सम्मिलित होने के लिए रिलीव कर दीजिये।"

हैडमास्टर साहब 2 सितम्बर(84) नै विद्यालय री छुट्टी हुया पछै एक सभा बुलाई। उवा जैंपुर जावणै वास्तै जीवणराम स० ग्रध्यापक रै नांव री प्रामाणिकता बताई। रिलीव करतां थका कयो—"हमारे राज्य मे यहां पुराने मास्टरो को ही पुरस्कृत एवं सम्मानित करने की सिफारिशें ग्रौर योजनाएँ चलती ग्रायी हैं, जिन से शिक्षा नीति तथा कार्यान्वयन मे एक सतत बाधा उपस्थित रही है। इस वर्ष श्री जीवणराम के पुरस्कृत हो जाने से उक्त जीर्ण सूत्र संलग्न नव्य मुक्ता-मणि पिरोये जायेंगे। मैं इस प्रारम्भिक नवीन परम्परा के लिए मेरे सहयोगी श्री जीवणरामजी

को वधाई देता हूं।"

पछै दूसरा मास्टरा ग्राप रा विचार प्रकटाया ग्रर सभा विसरजित हुई।

जीवणराम गुरुजी जैपर जावण री त्यारी खातर घरा ग्राया। ग्रागै उवां रै घर सूं एक ग्रादमी ग्रायो बैठो मिल्यो। जीवणराम सू राम-रमी करतो हुयो वो बोल्यौ—"मास्टरजी थांनै मां जी ग्राज ही घरा बुलाया है। कालै सासरै जावणो पड़सी, वठै जळ भूळणी इग्यारस रो मुकलावो देसी। ग्रागै दुवरसो लागै; बीनणी पीहर ही थोड़ी रैसी ?"

जीवणराम बोल्यौ—"भाई ! मां जी नै म्हारा पगेलागणा कै दीजे; म्है पुराणी प्रथावा नै जावक नी' मानू। दुवरसै मे ग्रया ही ग्रावो-जावो हो तो रैसी !

जळ भूलणी एकादशी(2041) नै तो मनै 'शिक्षक सम्मान समारोह' मे जैपुर पोचणो है। हम्मै म्हारा मास्टरी रा तीन साल ही पूरा हो रया है। यो तिवरसो तकड़ो है। पछै स्थायी हो जासू। मा री इग्या सिर माथै है; समझा दीजे। पुरस्कार ग्रर मुकलावौ एक दिन कया ले सकू ?"

□□

चूक चिरमी-सी, पछतावौ हिमाळै सो

□

अन्नाराम 'सुदामा'

दिन री साढी दस बजी हुसी। सुरेस आपरी बैठक मे बैठौ, पुराणी सारिका री कोई कहाणी पढ़ै हो। अचाणचुकां बीनै आपरी अठवरसी बेटी बरजी री बोली सुणीजी।

"बापू जीमलौ, मां थाळी पुरस दी।"

बण आख्यां ऊपर उठाई अर बी सागै चौनिजर हुंतौ वो बोल्यौ, "चाल, आऊं हूं।"

बण पैरौ पूरो कर, पत्रिका नै ही बन्द कर दी अर बैठक नै ही। दो एक पग जिया ही बण आगी नै राख्या, बीनै आपरी चौकी पर, केळा रा केई छूंतका दीख्या—बेतरतीब अर बिना सोच्यां फैंकीज्योड़ा। बण की सोचतै, बांनै सावळ भेळा कर, गळी में खड़ी एक गाय रै मू मे दे दिया, पाछौ आ'र, चौकी पर खड़ै-खड़ै पाचवी मे पढ़तै आप रै बेटै नै हेलौ कियौ—

"बिमलिया, ओ बिमलिया।"

माय सू आवाज आई, "हां बापू।"

"बारै आव तो।"

बिमलियै कनै बरजी ई बैठी ही, बण सोच्यौ, 'बापू इया बुलावै है जठै, की न की मू—मीठै रौ जुगाड़ है वां कनै, आ नी व्है हूं ठोके भाग ही रहूं, मोरचौ बिमलियौ एकलौ ही नी मारलै। बा बिना बुलाई ही बीरै लार री लार किवाड़ कनै आ ऊभी अर निजर आपरी बापू सामी कर दी।

सुरेस बिमलियै नै पूछयौ, "थोड़ी ताळ पैलां, मैं केळो दियौ हो नी तनै?"

"हां," वो बोल्यौ।

"खा लियो?"

"हाऊं।"

"छूतको कठै फैंक्यो बीरो ?"

ढीलै मूंडै सूं वण कयो, "चौकी पर।" कह तो वण दियो पण हवा रो रुख देखता ग्रासार कीं उल्टा लाग्या बीनै, एक पल रुक'र वो भळै बोल्यो, "बापू, ग्रा बर जी ही वठै ही नाख दियो। ग्रर सिवलै ही।"

"ग्रौरां री तूं रैण दै, थारी निवेड़ पैलां, तै तो चौकी पर ही नांख्यो हो नी ?" पारो कीं ऊंचौ चाढतो वो बोल्यो।

माय-माय कीं भीचीजतो सो, छोरो कीं नी बोल्यो, नीचै देखण लागग्यो। बीरै उतरतै मूं कानी देख'र, बरजी री मूं-मीठै री लालसा बिदा हुवण मतै ही, वा खिसकू ही, खाली मौको तकै ही। सुरेस भळै बोल्यो, "पण केळा रै छूतका खातर मै कांई कह राख्यो है तनै ?"

"कै छूतका ठाण का ग्रौटाणियै में नाख्यां कर, चौक ग्रर सडक पर नी।"

"क्योनी, ग्रो ही तो की बतायो है लो ?"

"तिसळ'र कोई पड़ै नी ईं खातर।"

"एकर ही समभायो हो का केई दफै ?"

"केई दफै।"

"तो म्हारो सिर खपायोड़ो इंया ही गयो ?" बींरी ग्रांख्या में तर्राटो तिरण लागग्यो। बोल्यो, "वे सहूरा, सोनलिया सीख री इत्ती ग्रणमोली माळा तैं गळै में घाल'र ग्रर्घमिट रै ग्राळस खातर तोड़'र धूड़ में फैंकदी! ग्रबार सूं ही इत्तो लापरवा तो ग्रागै जा'र तूं कांई न्याल करसी ? कैतां कैतां भौवां बिचाळै बीरै हळकी-सी एक त्रिसूळ खिचगी, वण ग्राव देख्यो न ताव, भाल-कान बींरो, एक इसी चेपी सातरी-सी, कै ग्रांसू ग्रर सेडो सै सागै ही बारै ग्रा पड़्या। छोरै बाको फाड़ दियो। छोरी कांनी ही वण देख्यो पण, वा कांई ठा कद खिसकी, बीनै ठा ही नी लाग्यो।

मा नै वेटै री कूक जिया ही सुणीजी, वा वटीजतो फलको चकळै पर ग्रर सिकतो तवै पर ही छोड़, बारै ग्राई ग्रर बोली, "भींचीजता, भीचीजता दो-च्यार केळिया कदे कणास टींगरां नै ग्राख्यां दिखावो हो, बे वानै कूटण खातर खरीदो हो कांई ? काठा राखो थांरा, नीं चाईजै मनै इसो थोथो लाड।"

"ग्ररे, कूटू केळां खातर हूं का बारा छूतका गळत जाग्यां फैंकण खातर ?"

"गळत जाग्यां फैंक'र किसा थारी थाळी में फैंक दिया। चौकी पर ही तो फैंक्या, कांई गळत है ईं में ?"

"गळत—बेगळत तो, थारो पग कीं छूंतकै पर टिकतो तो ठा लागतो तनै ?"

ईया टिकतो कांईं ग्रांधी हूं का वेतो नीसर्योड़ो है म्हारो ?"

"टिक्यां तो वेतो ग्रर चोसरा सै सागै ही नीसरता।"

"हा थे तो इत्तं नैं ही उडीको हो।"

"खावैं कोई ग्रर छूतका चुग-चुग जाग्यां सर हूं नांखूं, फेर ही इत्तै नैं ही उडीकूं हूं। थारी समझ ही जबरी है ?"

ईं पर बीरी रीस की मौळी पड़गी, बोली, "नी उडीकौ तो ग्राछी ही बात है। घर में पधारौ, बा थाळी उडीकै थांनै, पुरसी पड़ी कदेन री।"

"हां इंया कह, पण कदेई टाबरां नैं ही तो समझाया कर कै छूतका इंयां पगा विचाळै मत नांख्या करै, कोई ग्राखड़ै-पड़ै तो काई भाव बीतै ग्रगलै मे ?"

"समझावण सूं कुण नाराज है पण थारै हाथ लगायोड़ी मनैं नीं सदै, रोटी दोरी घणी घालूं हूं।" कह'र वण दो पतासा दे'र पंलां तो कियौ विमलियै नैं राजी ग्रर पछै संभाळ्यौ चूल्हौ। ईं ग्रापसी रड़-भड़ मे चूल्हौ हुग्यो ठण्डो ग्रर फलको ऊपरलो हुग्यो, चिप'र तवै जिसो। वा जळदी-जळदी फलका त्यार करण मे लागगी।

रोटी जीम'र बो पाछौ ही बैठक मे ग्रा लियो ग्रर सागण पत्रिका रै छूटै कालम मे डूबग्यो। रोवण री की छणती ग्रावाज, ग्रचानक बीरै काना सू टकराई। बो बैठक सू बारै ग्रायो ग्रर कान ग्रापरा ग्रावती कूक कानी कर दिया। बीरी बहू बारै सूं खिडक में बड़ती, मू लटकाया धीरै-सै बोली, "कांई कान लगावौ हो, गीता विचारी गई धरती छोड'र।"

ग्रधीर ग्रर निढाळ हुतै सै वण कैयौ, "हैं, ग्रा कद हुई ?"

"परसू रात।"

"हफ्तै पैंला तो देखी ही मैं बीनै, लागै हो बुझी-बुझी ग्रर सरीर में सांकळ हुयोड़ी। पूछू हो बीनै के बेटी, इत्तो बेगौ ही हूलियौ इंया किया ? पण म्हारा होठ की खुलै बीसू पैंला ही वा हाथ जोड़'र उदास डाळी-सी थोड़ी झुकी ग्रर निजर नीची करती उतावळी-सी निकळगी—बिना की प्रकास्या। एकर तो जी में ग्राई कै हेलौ मार'र बुलाऊं बीनै, ग्रर दो मिट की पूछू सुख-दु:ख री पण तुळी लागगी होठा रै, मन मतौ कर लियौ तो वैं नी खुल्या मौकै पर। सोच्यौ, "ग्रबकै बात कदेई।"

"थारै हाथा में छोटी-मोटी हुयोडी ग्रर थांरै कनै सू पढ्योड़ी ग्रर पूछता की तो कित्ती तो बा राजी हुंती, ग्रर कित्ती थारी ग्रपणायत दीखती ?"

"दीखती घणी ही, पण मनै कांई ठा कै भळे बीरा दरसण ही ग्रदीठ हुग्यासी हमेसा खातर, बड़ो घोखौ ग्रावै है पण कांई उपाव ?"

"विचारी नै छव महीनां ही तो नी हुया ग्राटा लिया, काई देख्यौ बण ससार मे ग्रा'र ?"

"काळजै बीरै चीरफाड कोई लूठी ही।"

लूठी काई, समझलो सूधी टोपड़ी, कोई कसाई रै बधगी, लोही रै लोभ्या नै दूध ग्राछो थोड़ो ही लागै ? ग्रगली लुगाई नैं ही वा ताछ दे-दे'र इया ही मारी

बतावै है पण ग्रै सकै बांरो वो पुराणो वख ले बैठसी बांनै, लारो सायत टापरो विक्या ही नी छूटै ।"

"कियां ?"

"वा ग्रात्मघात कर'र मतै थोड़ी ही मरी है, घरग्राळां मारी है वीनै तो बाळ'र।"

"तनै काईं ठा ?"

"दो सजग पाड़ोसणा पुलिस नै बयान दिया है।"

"कांई ?"

"वा दवती पीचीजती-सी एकर की ग्रावाज सुणी हैकै ग्ररे मनै बाळै, बचावो कोई।"

"पीचीजती रो मतलब मू मे पूर दाव्या है वीरै ग्ररहाथ ही बाध्या है बीरा?"

"ग्राप कानी सूं तो वां सगळा ही किया है। लास उठायां सू की पैलां हीं पुलिस पूगगी बतावै है; ग्रबार तीनू नणदा, सासू ग्रर धणी पाचूं हवालात में है।"

"इंया तो खैर मनै ही की ठा ही कै ग्रो परिवार है पोचो ही, पण वात ग्रठै ताईं पूग जासी, ग्रा मैं सपनै में ही नी सोची, वड़ी माड़ी हुई।"

बीरी बहू धीरै-धीरै पग राखती ग्रळसाई-सी घर मे वड़गी ग्रर वो पाछो ही ग्रापरी जाग्या ग्रा बैठो—ग्रधीर ग्रर उदास। ग्रवार कीनै तो पत्रिका रा कालम ग्राछा लागै हा ग्रर कीनै दुनिया रा दूजा धंधा। वो ग्रापरै विचारा में डूबग्यो ऊंडो, खूब ऊडो।

सोचै ही कै वीरै ईं ग्रकाळ ग्रन्त हुवण में सगळां सूं लूठो कारण बीरी ही एक चिनी-सी चूक है, ईं खातर दोसी ग्रसली वो है; वीरो रूं-रूं कापग्यो एकर। ग्रापरी बी ग्रणचाही चूक नै याद कर। डोढ़ वरस पैला री एक रील वीरी ग्राख्या ग्रागै सजीव हुगी। ज्यू-ज्यूं वा सिरकै ही एक गाढीजती उदासी बीरी ग्राखो चेतना नै ढकै ही।

याद रै पड़दै पर रील सुरु हुवै। सतरै वरसा री है वा। दसवी पास गेहुंवो रग, नाक-नक्स मे सोभती। ग्राख्या में सैंज संकोच ग्रर एडी सू चोटी ताई सरलता सूं ढकी है वा। वीरै रै घर रै चिपाचिप ही बीरो घर। वाप वीरो कोई दूकान में तोला-जोखो करै। ढाई सै रुपिया मिळै बीनै। मा वेटी मिल-मिला'र रोज च्यार-पांच रा पापड़ बटलै। गाडो घिकै पण पसीनो पूरो ले'र। ग्रै तीन वैना ग्रर दो भाई। सगळा सू बड़ी ग्रा। गणित ग्रर ग्रग्रेजी पूछण नै ग्रा, घणी दफै ग्रावै ईं कनै—नवमी सूं ही। दसवी रो इमतयांन हुयै नै दिन हुग्या। एक दिन वो ग्रापरै कमरै मे, एकलो ही बैठो, की लिखै है तन्मै हु'र। वा धीरै-धीरै कद बड़ै है कमरै में, वीनै ठा ही नी। वा जिया ही बीरा पग छुवै, वो एकदम सूं चमकै, ग्राख्या ऊपर उठै, बोलै है, "ग्ररे, गीता ? ग्राव वेटी, कद ग्राई, ठा ही नी लाग्यो बोल किया ग्राई ?"

वा की नी बोलै, पाव नेड़ो, पेड़ां रो एक ठूगो वीरै हाथां में थामदै। वो पूछै, "म्रो क्यांरो वाई ?"

वा निजर नीची राखती होळै सें बोलै है, हड़मान बावै रो प्रसाद बोल्यो हो, पास हुगो।

"पास ही हुई का डिवीजन ही लाई कोई ?"

"सैकिंड डिवीजन।"

"नम्बर कित्ता भ्राया ?"

"दोयसै निव्वै।"

वो अर्घमिट की हिसाव फळा'र मोद सूं बोलै है, "जद तो अट्ठावन परसैंट हुया ए। सावास, जी तूं जुग-जुग फेर तो प्रसाद जरूर हुणो चाईजै पण, भ्रो तो, प्रसाद काई पूरो जीमण है ?"

"भ्रो तो थां खातर ही है, घर में की न्यारो दे दियो।"

"घर भळै न्यारो ही रै लियो कांई, की भ्रौरानै ही चखासी'क नी ?"

एक सैंज राग फूटतो वीरै म्राखे चैरै पर पसरै है—होठां पर की बेसी। वा सागी पगा पाछी निकळै है। वो सोचै है कै "घर रो सगळो धंधो भ्रा करती, छुट्टी म्राळै दिन तो भ्रौर ही वत्तो। घोबी-घाट पूरो मांडती। घड़ी-दो-घड़ी बैन भाया नै ही टैम देवती दो म्राक सिखावण में, की मा कानी ही सोचती, तो भ्राप फेर कद पढती ? कांई ताळ कीं पढती जरूर हुसी पण नींद रो मोह छोड़ रात रै कोई सान्त-सूनै पहर में ही। ईं हिसाब पकड़ ईंरी कित्ती तेज है भ्रर समझ कित्ती ऊंडी। ईं चालती-फिरती मानवी सिद्धि नै ले जासी कोई भागी ही।" वो बडो गदगद हुवै है, ठूगै में समाई श्रद्धा नै सोच-सोच भ्रौर ही जादा।

रील वधै, पण भ्रगलो सीन बिच्छू रै भ्रोळभा सो वडो दर्दनाक। मिगसर में ब्याव मडै है वीरो। लड़को बी०ए०, सुसील भ्रर रुजगार सुदा है। मा-बाप रै एक ही, न लूंठी जान, भ्रर न कोई दायजै री सर्त ही। लड़की वण खुद पसन्द करी है। लड़की नै वण देखी ही नी। ब्यावस सूं बीं सागै दो मिट बात ही करी है, तबियत वीरी किनारा ताईं भरीजगी।

वान वैठी नै भ्राज पैलो ही दिन है। वा बीरै धरे भ्रावै है मुळकती-मटकती। भ्रापरी खिड़क भ्रागै खड़ो है वो। वा पग छुवै है वीरा। भ्रापरी भ्रांख्यां, बीरै चैरै पर सावळ टेक'र, भ्रर्घमिट वो देखै है बीनै। पीठी कियोड़ै चैरै पर कित्तो निखार; सील भ्रर संकोच री गैरी छांया में वो भ्रौर गैरीजतो लागै बीनै। मन-ही-मन वो थुथकारो नाखै है बीनै, वा फुर्ती सूं घर में वड़ै है भ्रर वो वठै ही खड़ो है, वीरी सरलता रै मिठास मे डूब्यो।

ऊपरलै चौड़ै पगोथियै पर कैळै रो एक छूंतको पड़्यो है। भ्रणदेख में वीरो खाथो पग टिकै है वी पर। बा तिसळ'र बुरी तरै पड़ै है—भाठै रै पगोथियां पर। भ्रांख्या

वींरी भींचीजै है, आगै अधेरै रो एक पहाड़ खड़ो हुवै है। अर एक चीख आकास में फैलै है। पड़ण री आवाज सुणता ही बिजळी री सी फुर्ती सूं वो पगोथियां कनै जा पूगै। हक्की-वक्की-सी बींरै घर आळी ही आवै अर देखता-देखतां बींरा मा-बाप ही। पत्थर री कोर बींरी नळी में बुरी तरै बैठै है लोही पड़ै है, पीड़ अर उदासी, सूं ढकी वा कूकै है कोभी तरै। जाडै, झरतै खून रा चाठा गछ रै चैठता गाढ़ा पड़ता सूकै है। बींरी मा री अवस्था पूछो ही मत, न कंठ थमै, न आंख्यां। विलताप देख्यां पत्थर पिघळै। छोटा-छोटा भाई-बैन ही आ खड़ा हुवै—वै ही कूकै। खड़ाहै जित्ता, धीरज सगळां रो ही टूटै है। आंसुवां रो मर्गरियो मंडै है—व्यथा रै घेरै में।

बा अस्पताळ लेजाईजै, सागै वो ही है, पण चेतना मे बींरी पछतावै री एक, अणमावती पीड मथीजै। ईंरै पड़ण सूं पाच ही मिंट पैला, बो छूंतको वण फैंक्यो है—बारी में बैठै, बिना—बिना समझे—खाली अधमिंट उठण रै आळस मे। पक्को पाटो बंधै है, डौढ़-महीनै खातर। पग-पग पर पइसो लागै, घर री हालत खस्ता है अौर हुवै है।

पाटो आज खुलै है, पग मे की कसर लागै है, चालै जद थोड़ी ढचरकावै है। पैलो सगपण तो पड़न रो सुणतां ही छूटै है, अर नुवैं सिरै सूं दीपतो वर कोई आख्या दीखती कसर सागै जोड़ी वणावण रो दुस्साहस कद करै? उथप'र बाप छेकड़ दूज वर बाबू लारै बीनै करदै। नी-नीं करता, फूल सारू पाखड़ी, डौढ़-दो हजार नैडो दायजो ही वो देवै। देवण री इच्छा तो की अौर है पण दियां सूं पैला ही वो इसो पीचीज्यो है कै लारै बचै है मा कनै आंसू अर बाप कनै उदासी।

दो महीना तो चुप्पी रा निकळै है किया ही, पछै सासू अर तीन नणदा मिल'र बीनै रोज तळै—विना तेल, बिना कड़ालियै, रोज सेकै-बिना खीरा, बिना भोभर। की-न-की मिस, वा रोज सुणै है कै खोड़ी खीलो चेपदी म्हारै। देवण नै रोवण जोगां रै नव चूल्हां री राख ही नी? इसो ठा हुंतो तो कुण घीसतो ई बीन बिगाड़ अळबत्त नै? बिचारी आखी तो रसोई करै, फूस काढ़ै, सगळा रा पूर निचोवै अर अैठा-जूठा सैं वर्तण रगड़ै। दो छोरी अगली री है, अधावण में कम पाध वै ही क्यों राखै? ईं ऊपर घाटै सूं चूटीजतो, चिड़ोकलो अर भागेड़ी भरतार, इक्यांतरै दूजै बीनै कूटै।

सजळ आंख्यां, एकर वा मा नै कैवै। मां समझावै बीनै, "बेटी धणी ही दोरी हूं, पण अणहूत भाठै सूं काठी, काई उपाव? कैवै दो थोक तो सुणलिया कर, हाथ सामो करै कदेई तो सह लिया कर, धन तो वता कठै सूं लाऊं, अठै तो घर रो पेटा-चट्टो ही मसां पार पड़ै। थारी बीमारी री चांदी की सूकण मतै हुई तो ब्याव री अौर पड़गी, ई उपरांत ही तू एक दुवै तो दोरो-सोरो काई ठा, मूढ़ो कीं खाड सूं हीं भराऊं?" मियै री दौड़ मस्जिद तांई, आगै कठै जावै बा। निश्चै कर लियो

वणं। दिन-रात एक कर'र ही धिकास्यूं कियां ही, मिलसी जिसो खास्यूं, कैसी वो सुणस्यूं, अर मारपीट ही अगेजस्यूं। कुमाणसर फेर ही नीं जीवण दी वीर्नं।

सुरेस अवार गाढ़ीजती पीड़ में सोचै हो कै देखो बीरी चीनी-सी चूक बीरै ही फूल सै हंसतै सपना नै राख में बदळ दिया—हमेसा-हमेसा खातर। अबै तो वो घणों ही सावधान है—किसी चूक नीं हुंवण देण खातर, पण गळगी वा गल पाछी कियां वावड़ै ? पीड़ वधण लागणी। वो कमरै सूं बारै आयो तो रोवण री आवाजा आपस में गूथीजती गैरी हुवै ही अर बीरी चेतना भारी।

□□

घर रा आदमी

□

जनक राज पारीक

मुड़ती जनेत रै साथै म्हारै मन मांय उथळ-पुथळ मचगी। काई करूं ? वरात रै साथै घरां पूग ज्याऊं या गेलै मांय उतर'र मिलणौ-जुलणौ करल्यूं ? तीन दिनां री छुट्टी तो लेई राखी है, काम आ ज्यासी। हूं मोटर री खिड़की सू सिर काढ़'र मील रो पत्थर देख्यो—मलोट सोला किलोमीटर।

ठीक है, थोड़ी देर पछै मलोट आ ज्यासी, वठैई उतर ज्यासूं। वा'रा वरसां पछै निर्मला सूं मिलणो हुवैलो, पतो नी वीरै मन मांय किसी'क अनुभूति हुवैली अर म्हानै भी किण-किण मानसिकतावां सूं गुजरणो पड़सी। वा'रा वरस पै'लीं हूं निर्मला नै सदा खातर अलविदा कह दी ही। आज वी सूं अचाणचक मिलणो कितणो कष्टदायक हुवैलो ! जिकी निर्मला खातर हू तूफानां माय रेत रा घरौंदा खड़्या कर्‌या हा, वीं निर्मला री विदाई मौकै म्हारी आंख्यां सू आंसू रो एक कतरो भी नईं गिर्‌यो हो।

ब्याव सूं तीन-चार बरस पछै निर्मला जद दुवारा मिली, तो लारली बातां री पोथी खोलतां थकां बोली ही, "भासी, जिनगाणी री दौड मांय तू सदा'ई सुस्त रैयौ, हूं औरतजात, म्हानैं देख। जिकी तेजी सू खेजड़्या पर चढ'र खोखा तोड लेती, वी तेजो सूं आज जिनगाणी भी जीवणै री कोसीस करूं।" फेर कीं गळगळी हो'र बोली ही, "कदे मलोट आ, ओसवाळ धरमसाळा रै लारै मकान है—वारजै वाळो वां'रो नाम ले'र कीनै'ई पूछ लेई, वता देसी।"

"कोसीस करस्यूं।" हूं कह्यौ हो।

वीं निर्मला सूं आज मिलस्यूं। थोड़ी देर वाद मलोट आ ज्यासी। 'पण…पण वीं रो घर हाळो कांई सोचसी ? कदे वुरो ना मान ज्यावै।' हूं सोच्यौ, 'फेर मलोट सूं घरां पूगणै ताईं रोडवेज री बस पकड़नी पड़सी, दस-ग्यारा रिपिया तो भाड़ै

रा लाग ज्यासी अर म्हारी जेब माय फगत वीस रिपिया है। पाच रिपिया तो निर्मला री छोरी नैं ई देवणा पड़सी। दस्तूर है दुनिया रो, दिखावो तो करणो'ई पड़ै, अर ई दिखावै-दिखावै माय हूं पंदरा-वीस रिपिया हेठैं आ ज्यासू। आं पंदरा वीस रिपिया सूं घर रा कई अटक्योड़ा काम निकल सकै···निवार धुवावणो···सूट री ड्राइक्लीन···खैर, वीसीयूं काम है।

फेर उतरणो ई है, तो अबुल खुराणैं उतरूं। टाबरां सूं मिळ लेस्यू, 'वा' भी राजी हुज्यासी अर ठीक रैयो तो साथै ले'र ई चाल पड़स्यूं। पीहर आवां एक मी' नो तो हुग्यो। नीटू री तो छः माही परीक्षा भी सिर पर है।

आ' ई जची। सासरै उतरणो'ई ठीक रैसी।' हूं अबुल खुराणैं उतरणै री योजना बणावतो-बणावतो लारै छूटतो मलोट देखतो रैयो। जसवंत-थियेटर··· विश्वकर्मा वर्कशॉप···हलाली मीट की दूकान···ओसवाल धर्मशाळा···आह! ओसवाल धर्मसाळा···मन माय भावनावां हलाल हुंतै मुर्गै दाई फड़फड़ाई अर होळै-होळै चेतना हीन हो'र निर्जीव हुगी।

दरखत, गाव, अड्डा लारै छूटता रैया। वस रै भोंपू री डरावणी आवाज कानां माय गूंजती रैई···कबर वाळा···टीकमगढ़···पंज पियारे···चन्नण खेड़ा··· अर अगलो अड्डो अबुल खुराणै रो है।

अबुल खुराणै भी उतर'र काई करस्यूं? नीटू री मां गुड्डो खातर गरम कपड़ा री माग करसी अर छोटी साळी फिलम री। नीटू चिज्जी मागसी अर सासरै खाली हाथ जाणो वीयां ई ठीक कोनी। पाच-सात रिपियां री मिठाई-सिठाई तो ले जाणी ई पड़सी। फेर तो शायद किरायो भी नीटू री मा सूं ई मागणो पड़ै। हूं ऽऽऽ, खत लिखणो ई ठीक रसी। लिख देस्यूं कै टाबरां रा इम्तिहान है, नीटू अर गुड्डो नैं साथै ले'र आ ज्याग्रो। मोटोडो साळो आप ई पुगा ज्यसी, किरायै री बचत हुसी—था न्यारी।

अचाणचक वस एक झटकै रै साथै थमी अर चा'-चा' रो रोळो मचग्यो।

"हैं ऽ अ? अवोहर आग्यो?" हूं हैरानगी सू पड़ोसी सूं पूछ्यो, "अबुल खुराणो गयो?"

"वाह मास्टरजी, नींद आयी ही काई?" वण म्हारै प्रसन-नै-प्रसन सूं काट दियो।

"तो अवोहर आग्यो···हूं अठै सूं ट्रेनिंग करी ही।" हू पड़ोसी नैं बतायो अर सात वरस पुराणै अतीत रै कुम्रं माय यादा री लाव पकड़'र होळै-होळै उतरतो गयो। प्रेम अवोहरवी री याद बिजली दांई कड़की अर अतीत री अंधेरी गुफा एक तेज उजास सूं भरगी।

प्रेम अवोहरवी! पंजाबी भासा रो मानीतो सायर। म्हारै सुख-दुःख रो साथी, म्हारो खास दोस्त। अठै हूं ट्रेनिंग करी ही जद प्रेम अवोहरवी अवोहर री

वेदरद सड़कां उपर रिक्शो चलाया करतो अर कवितावां लिखतो। सांय-सांय करतै दरखता रै नीचै रिक्शै पर बैठ्यो प्रेम कविता लिखतो—'मैं जीण लई किसे दा सहारा नईं मंगदा', अर एक ओली पूरी करतां-करतां कोई सवारी आ ज्याती—"नुईं आबादी ?"

प्रेम पडुत्तर देतो, "पचास पीसा।" अर कापी-पिल्सण रिक्शै री सीट नीचै छोड़'र वो कल्पना लोक सू डम्बर री वळती सड़क माथै उतरियातो। साहब दित्तै रै ढाबै सामी रिक्शो थाम'र म्हें 'चा' पीण ढूकता अर धरती पर सुरग उतारणै री कल्पनावां करता। देस री राजनीति, अर्थनीति, विकास अर मिनख नै सोसण सू मुक्त करावण री ऊंची-ऊंची कल्पनावा रै सिखरां पर चढ़'र आखी मानवता रौ इतिहास कलम री तागत सूं वदलण री दम भरता, कै इतणै में कोई हेलौ पाड़ देतो—'रिक्शा, ऐ रिक्शा।' प्रेम ईं हेलै रौ पडूत्तर म्हानै देवतौ—"अच्छा यार, अब सिफ्या रा मिळस्या।" म्हानै लागतौ—'रिक्शा' प्रेम अबोहरवी रौ उपनाम है। वो जितरौ चौकस 'रिक्शा' आम सुण'र हुतौ, उतरौ खुद रौ नाम सुण'र कोनी हुंतो। सिफ्या वी री जवान पर की गज़ल रौ मतलो या कविता रौ चरण हुंतौ।

"आह! प्रेम आज थानै मिलस्यूं।" हूं सोच्यौ। चा' पी'र प्रेम सू मिलण जासूं तो वो देखतो रै जासी। मयूर रैस्टोरैंट सूं चा' मगा'र दोन्यू सार्थै-सार्थै मुड़कस्या अर 'रिक्शा-रिक्शा' री पागल पुकार सुणस्यां।

"ल्योजी, चाय।" कै'र एक आदमी म्हारै हाथ मांय चा' रो कप थमाग्यौ। दूजो एक प्लेट पकड़ाग्यौ जी रै मांय एक गुलाब जामण, दो बरफी रा टुकडा अर की पकौड़ा हा। तीजै एक लिफाफो दियो, जी में एक केळो, एक संतरौ अर दो चीकू निकळ्या।

सारा जनेती प्लेटां अर चा' रै प्यालां पर टूट पड्या। चा' री सुडक-सुड़क वातावरण रौ एक हिस्सौ बणगी अर देखता ई देखतां केळै अर संतरै रै छूतकां रा ढेर लागग्या। हूं खाली लिफाफै सूं हाथ पूंछ'र एक लंबी डकार ली।

"चालौ, चालौ," रौ रौळौ सुण'र जनेतिया में हुडवड़ी मचगी। बीड़ी अर सिगरेटा फैंक-फैंक'र लोग सीटां माथै लद्दू-पद्दू हो'र पड़ग्या।

'तो अठै रुक ज्याऊं ?' हूं अपणै आप सूं प्रसन कर्यौ। दूजी डकार बोली, 'अब चा' पीणै री तो जी माय रैयी कोनी, फेर प्रेम रात-रात रोक लियौ तो तेजिदर कौर री ट्यूसन नईं पढ़ा सकूंला। वी री मा झिक-झिक करसी अर सिर-दार जी तो एक-एक दिन रो हिसाव राखै। मीं'नै सूं एक दिन कम हुयौ अर पीसा काट्या।'

'चाल मनां। काई करसी अठै ? प्रेम सूं फेर कदेई सही। फेर अठै सूं घर ताई पूगणै रा पांच रिपिया तो भाड़ै रा लाग ज्यासी। आं पीसां रो रासन री चीजां ल्यास्यां, तौ पांच-सात दिन निकळ ज्यासी।' हूं मन नै समझायो, 'चालणो ई

ठीक रैसी।' अर होळै-होळै सरकती बस रै माय ज़ा बैठ्यो। यातरा रो सिल-सिलो फेरूं सरू हुयो। प्रेम सूं नी मिलणै रै दुःख नै हूं दूसरै सुखां सूं काटतो रैयो। छोटा-छोटा अड्डा लारै छूटता रैया—दौलतपुरा'''प्रेम सूं माफी माग लेस्यू। खत लिख देस्यू कै बीन रै बाप उतरण' ई कोनी दियो, हूं तो घणी'ई जिद करी।

उस्मान खेड़ा'''बुरो ना मानी यार, कदे छुट्टी रै दिन आस्यू। मील रो पत्थर ! मौजगढ़ दो किलोमीटर'''घरै'''घरै'''कल्लर खेड़ा—तेरा किलोमीटर। 'कल्लर खेड़ा !' हूं चिमक्यो। थोड़ी देर मांय कल्लर खेड़ा आ ज्यासी ? पाच-छै मी'ना पै'ली मिंदर रा पंडित जी गोपास्टमी पर म्हानै अठै ले'र आया हा। भजन-कीर्त्तन रो कार्यक्रम हो। पंडित जी सरपंच नै म्हारी जाणकारी रेडियो-सिंगर रै रूप में करवाई ही। कैयो हो, "सुभास विकल जी हैं, जैपुर रेडियो पर परोगराम दिया करै। अठै आयोड़ा हा, घणी मिनता अर हाथा-जोड़ी कर'र आज रै परोगराम मुजब ल्यायो हूं।" थोड़ा थम'र बोल्या हा, "बीयां तो आनै बुलावणै री आपणी हैसियत कोनी। सीधा जैपुर सूं बुलावता तो खरचै सूं कड़तू टूट ज्याती, पण अबै तो थोड़ै सूं काम सर ज्यासी।"

फेर तो जिकी खातिरदारी अर मनुवार हुई बीरो कांई कैवणो ? हूं मीरा बाई अर सूरदास जी रा तीन-च्यार भजन सुणाया हा। गाव रा लोग सुण'र घणा राजी हुया। मुड़ती थका सरपच रिणवा सा'ब हाथ जोड़'र कैयो हो, "विकल जी, थारी सेवा करण री तो म्हारी औकात कठै ? अै सौ रिपिया है, पान-फूल समझ'र ले लेस्यो तो म्हे अहसान मानस्यां। बाकी कभी फेर कदे'ई पूरी कर देस्यां।" फेर की थम'र बोल्या हा, "थे कबीरदास जी रो कोई भजन कोनी सुणायो ? गांव रा घणकरा'क लोग राधास्वामी है। अब कदे'ई चक्कर लगावो, तो कबीरजी रा भजन सुणल्या।"

गाव रै पांच-सात मिनखां साथै खुद सरपंच सा'ब म्हानै मोटर अड्डे ताईं छोडण आया। मुड़ती बिरिया कैयो हो, "कदे फेरूं चक्कर लगाज्यो। जैपुर रै भाडै री कांई बात है ? अबकाळै आछी सेवा करदेस्या। पाच-पच्चीस ठीक ई देस्या, जद भी टैम मिलै, आवणै री किरपा जरूर करज्यो।"

कल्लर खेड़ा'''एक किलोमीटर। हूं खिड़की सूं झाक'र देख्यो अर मुळक्यो, 'म्हानै अठै रुकणो चाहिजै। सरपंच सा'ब साचै दिल सूं कैयो हो। गाव रा लोग बी राजी हुसी।'

हूं खड़्यो हुयो अर मोटर री छात थपथपा'र जोर सूं चिरली मे'ली, "कल्लर खेडा रोक् के।"

बीन रै बाप म्हारै कानी अचंभै सू देख्यो। बै शायद की पूछणो चावै हा। हू पै'लां ई बोल पड़्यो, "अठै रा सरपंच सा'ब घर रा आदमी है। मिल'र नी गयो

तो नाराज हुज्यासी। थोड़ी बस रुकवाद्यो।"

"प्लीज···" हूं बदहवासी मांय गिड़गिड़ायो अर बस पक्की सड़क सूं कच्चै में हो'र एक झटकै सूं थमगी। "थैंक्यू वैरी मच।" बड़बड़ातो हूं नीचै उतर्‌यो। भड़ाक् सूं खिड़की बंद हुगी। अड्डे पर म्हारै सिवा और कोई चिड़ी-काग तक नईं हो। बस धूड़ उड़ाती, घरघराती आगै निकलगी अर हूं आंख्यां मिचमिचा'र सड़क रै दूजै छेड़ै देख्यो—लारै नै जिनगाणी री खुली पोथी रा अध्याय हा अर आगी नै बस सूं भी तेज भाजती जिनगाणी। बीच-बिचाळै हूं खड़्यो हो—धूड़ सूं लथपथ, कबीर री रमैणियां अर पदां मांय गोता खांवतो।

□□

भीखू री परिवार

□

धनञ्जय वर्मा

भीखू री भूख जद किवाड़ नैं भी पापड़ समभण लागी तो पाड़ोसी कंवण लाग्या कै इवकै दुनिया में कोई नैं कोई परळै होके रैवैगी। सारै गाव में एक पखवाड़ै सू चरचा हो री है कै भीखू रै दो जुड़वा छोरी होई है। ग्रर दोनू ही पालणै राजी खुशी किलकार्‍यां मारती उछळै-कूदै है। भीखू कदै तो इण छोर्‍या कानी देखै तो कदै खूणै में बैठ्या भूखा मरता पैलड़ा आठ टावरा नैं देख-देख मन ई मन रोवै। भगवान आगै जोर कोनी चालै। कठैई घी घणा तो, कठैई मुट्ठी चणा। कुल मिला'र सात छोर्‍या ग्रर तीन छोरा होयग्या। ग्रौर इबी तो राम राजी है। पैंतीसी पूरी को ढळी है नी। भगवान री इणी तरै ही किरपा रै'ई तो ५-७ वरसा मे पूरी पलटण त्यार हो ज्यावैगी।

भीखू नैं च्यार रुपिया दैनगी मिलै है। च्यार रुपिया, १० टावर ग्रर दो लोग-लुगाई। ग्राजकल च्यार रुपिया रो चारो तो एक-दो डागरा नैं भी कम पड़ै। पाड़ौसी लोग भीखू नैं ग्राये दिन समभावै कै भीखू तो वड़भागी है। कोई धन नै रोवै तो कोई ग्रौलाद नै। भीखू रै ग्रौलाद ही धन है। भगवान जठै चूच दी है वठै चुग्गो भी देसी। ग्रर भीखू ईंयानकी वाता सुण-सुण' काळजौ ठंडो करतो रै'वतो।

ग्रादमी करम ग्राप कमावै, भगवान नैं वी वात रो दोप देवै—ग्रै दुरंगी चाला ग्रादमी री वी रै संस्कारा सू ही नीपजै। ईं बात मे ग्रादमी रो भी कोई दोप नी। प्रकृति तो ग्रपणौ काम करै ही है। मिनख-लुगाई जद भेळा उठै-वैठै तो सन्तान रो वरदान कुदरत दिया विना नी रै सकै। ग्रो कुदरत रो नियम है। कुदरत किरपा-मेहरवानी भी घणी करै पण कुदरत सागै जिको संयम सू नी चालै वी नैं कुदरत ग्राप रो चमत्कार दिखाया बिना नी रै वै। फेर वा गरीव-ग्रमीर नी देखै। क्यू कै—कुदरत रै नियम में भेद-भाव री गुंजाइस कठै ही कोनी।

धरती धरम-नेम पर ही टिक्योड़ी है। धरम-नेम मे फेर पड़तांई कुदरत री भी करम बदळ जावैं।

भीखू बापड़ो दिन उगता ही काम पर चाल पड़तौ। सीझ्या नैं थक्यौ-मांदौ आवतौ तो टाबरिया भूख सूं बिल-बिलाता मिलता। भीखू री घरवाळी रामप्यारी भांभरकै सूं ले'र आधी रात तक घर री काम करती पण ओसाण कोनी मिलतौ। कदै तो रामूड़ै रैं बुखार हो जातो तो कदै धापली रैं खुलखुलियौ, कदै धूड़ियैं रैं आंख्यां दुखणी आ जाती तो कदै चूनकी रैं पचिया हो जाता। कोई रैं सेडो आ रयो है तो कोई सारैं ही दिन खावैं ग्रौर घड़ी-दो-घड़ी पछैं पेट खाली कर आवैं अर फेरूं कं'वै—"मां! ल्या रोटी दे।" बिचारी रामप्यारी सूख'र डांखळी होगी। आधी रात पड़ैं पछैं खाटली पर जाय'र पड़ती तो दोनूं जोड़ली छोर्‌या एक मिनट बोबो नीं छोड़ती। चसड़-चसड़ करती रैं'ती अर बी री हाड्या रौ खून पीती रैं'ती।

भीखू री थकान इसैं बखत में थोड़ी नई चेतना ले'र जाग पड़ती। दारू तो कोनी पीवौ पण सरीर री भूख तो डांगरा तकात नैं भी सतावैं। घड़ी दो घडी रामप्यारी सूं बात करतौ ग्रौर थकथका'र नैं सो जावतौ। महीनैं दो महीनैं पछैं फेर ठा लागती कै रामप्यारी रौ पग भारी है।

रामप्यारी री आधी जिन्दगी आ जावा ही खागी। देखता-देखतां च्यार आना री चीज रुपियैं मे विकण लागी तो रामप्यारी नैं अब टाबरा री चिंता खावण लागी। ऐस तो रामजी राजी भी घणौ होयौ पण बिराजी भी होवण लाग्यौ। गाव में टाबरा नैं सूखो लागण लाग्यौ अर दो टाबर रामप्यारी भी खाडैं में धर दिया। आड़ोसी-पाड़ोसी धीरज बंधावण आया अर बोल्या—"टाबर राम नैं प्यारा होया…कोई जोर नी पण सावरियैं री किरपा होई तो गोदी फेर भर-जासी।" रामप्यारी नैं इसी आसीस खारी-जैं'र लागती पण दुख-दरद मे भेळा बैठणियां सागैं लड़्‌यो थोडी जावैं।

भीखू भी अब टाबरा सूं धापग्यौ हो। आगला ही कोनी संभळैं हा इब भळैं होसी तो कोई आछी बात थोड़ी है।

दूसरे दिन दिनूगैं ही भीखू रोजीना जावतौ बीयां ही काम पर चाल पड्‌यौ। गळी मे सूं निसर'र चौक में आयौ ही हो कै सामनैं सूं दो गोदा लड़ता भीखू पर आ पड्‌या। भीखू री एक टाग घायल होगी, पीठ छुलगी अर हाथ री आगळिया में भी चोट आई। पड़ौसी लोग भीखू नैं खनलैं गांव रैं अस्पताळ में लेग्या। बठैं मलम-पट्टी होई। डॉक्टर सीझ्या-सवेर आता अर भीखू री राजी-खुसी पूछ जाता। दस-पनरा दिनां में भीखू ठीक होग्यौ अर अस्पताळ में इन्नैं-बिन्नैं ढूकण लाग्यौ। सामनैं सूं डॉक्टर सा'ब आ रया हा। सागै एक नरस ही। बोल्या—

"भीखू ! आज म्हे थारै गांव जार्या हां। तनै भी छुट्टी है। चालै है तो चाल। म्हे तनै गाडी में बिठा'र गांव ले चालस्यां।"

"घणी किरपा मेहरबानी डाक्टर सा'ब, म्हारो ऊँट भाड़ो बच जासी। घर मे म्हारा टाबरिया भी बीमार पड़्या है। वां नै भी चाल'र देखल्यो तो भगवान आपनै एक बेटो देसी।"

बेटै री बात सुणता ही डॉक्टर सा'ब हंस पड़्या। कनै खड़ी नरस भी खिल-खिला'र हस पड़ी। डॉक्टर सा'ब बोल्या—"भीखू ! इसी आसीस मत दे।" भीखू—"क्यू डाक्टर सा'ब। औलाद तो कोई भगवान राजी होवै जद ही मिलै।"

डॉक्टर—"आ बात ठीक है कै औलाद भगवान री किरपा सूं ही होवै पण भगवान आ थोड़ी कै'वै कै घर मे टाबरा री पलटन ही बणाल्यो।" भीखू आ बात सुण'र सरमाग्यो बोल्यो—"किसी'क बात करो हो डाक्टर सा'ब ? आ कोई आदमी रै बस में थोडी है कै चावै जद ही औलाद होवै।"

"हा भीखू ! अब तो विज्ञान इतणी तरक्की कर ली है के आदमी चावै जद ही औलाद पैदा कर सकै अर मरजी हो उतणा ही बाळ-बच्चा नै मा जलम सकै है।"

"डाक्टर सा'ब ! आप तो मोटा माणस हो। आपनै इसी बाता थोपै है। पण म्हारै तो अै बाता जची कोनीं। जे आदमी रै हाथ में इसी बात होवै तो म्हारै घर में इत्ता टाबरा री कांई जरूरत ही। दिन मे ३-४ रुपिया री दैनगी मिलै। खावणिया म्हे १२ जणा। आधी-आधी रोटी भी पाती कोनी आवै। जे भगवान २-३ टाबर दे देता तो म्हे भी लोग-लुगाई धाप'र रोटी खावता अर टाबर भी सुख सू पळता।"

डॉक्टर सा'ब बोल्या—"भीखू ! तू तो बोत समझदार आदमी दीखै है। थारै जिसा आदमी जे गांवा मे हो जावै तो 'परिवार नियोजन' रो काम मिटा मे कामयाब हो जावै अर देस मे गरीबी इतणी नी रै'वै जितणी आज है।"

"डाक्टर सा'ब ! गरीबी कोई घणा टाबरा रै कारणै थोड़ै ही है।"

"हां भीखू ! गरीबी घणा टाबर अर बिनखा कारण ही तो है। आपणै देस में आदमी घणा पण उपज कम है। इसी हालत मे जिया तू गरीब है अर बच्चा नैं नी पाळ सकै, बिया ही देस भी गरीब है और आदमिया नैं पाळ नी सकै। अर इं रो एक ही उपाव है—'परिवार नियोजन'।"

"डाक्टर सा'ब ! ओ परिवार नियोजन काई बलाय है—की म्हनै भी समझाओ।"

"भीखू ! परिवार नियोजन रो मतलब कुटुम्ब में मनचाया, गिण्या-मिण्या आदमी और टाबर और मनचायो सुख।"

"मनचायो सुख किंया डाक्टर सा'ब ! थोड़ो खुलासा कर'र समझाओ।"

डॉक्टर सा'व वोल्या—"भीखू ! सब सुख ईं सरीर गैल हो है । आप राजी तो दुनिया राजी । जे घर मे थोड़ा आदमी होवै तो सबनै तो धपाऊ रोटी मिलै, सब री निरोगी काया रेवै । और रामजी रो नाव भी फुरसत रै टेम लेईजै ।"

भीखू बोल्यो—"डाक्टर सा'व ! आपनै नै काई चाईजै ? हूं थारै पगा पड़ू हू । ओ परिवार नियोजन रो रस्तो तो म्हनै भी बतावो । थारा गुण नी भूलू । म्हारा टाबर भी थानै आसीस देसी । बापडी रामप्यारी भी स्यात् मरती-मरती बच जावै ।"

डॉक्टर सा'व आ बात नै सुण बौत राजी होया । और भीखू नै जीप में बैठाय लियो अर गाव कानीं चाल पड्या । गांव मे परिवार नियोजन पर नुमाइस ही, जगां-जगा डॉक्टरा रा कैम्प लाग रह्या हा, नरसा-लुगाइयां नै भेळी कर'र परिवार नियोजन रा फायदा समझावै ही । भीखू री भी बारी आयी । वो रो भी आपरेसन होयो । दो मिनट लाग्या । सुई जितरो भी दरद नी होयो । डॉक्टर सा'व भीखू नै दवाइया अर दूसरी चीजा भी दी । भीखू समझ्यो 'परिवार नियोजन' ही गाव मे सच्ची सुख-शान्ति ला सकै है । परिवार नियोजन केन्द्र मे भीखू नै नौकरी मिलगी ।

दो-तीन बरस होग्या । भीखू आज बौत सुखी है । गांव वाळा भी भीखू री बडाई करै । भीखू गाव वाळा री जो सेवा करै है वी सू गांव रो हरेक परिवार सुखी और सम्पन्न है ।

सुणा तो हा कै इबकै साल भीखू नै सरकार दो इनाम देसी । एक तो परिवार नियोजन नै कामयाब करण वास्तै अर दूसरो अपणै टाबरा न सबसू ज्यादा तन्दरुस्त राखण वास्तै ।

□□

रिंकू

□

रामनिवास शर्मा

"काई ! साचे ई जीवण एक लाम्बो मारग है जकै माथै घणी विपदावा है। मनै तो अत्ती आफता कोनी दीखै जत्ती वतावण आळा वतावै है। मारग तो सीधो-सादो है पण वतावण आळा ही आफत दैवण आळा है। नी तो मारग लाम्बो है अर नी आफता सू भरियो है। ओ मारग तो अत्तो छोटो है कै आज-काळ माय सगलो पूरो हुय जावै। करण आळा घणकराक काम अधूरा रैय जावै आ कि पत्तो ही कोनी चालै कै ओ जीवण घणकरोक किया गुजरग्यो। मन माय सोचेड़ी वोळी वाता मन माय ही रैय जावै। सगळी वाता माथै सोचा जणा पत्तो चालै कै जीवण कत्तो ओछो अर मीठो है। पण आ काई वात है कै सगळी जूण एक ही वात कैवै कै जूण आफता सूं भरी है। मनै ओ तो पत्तो कोनी पण लुगाई री जूण विपदावा सू जरूर भरी है। जै कोई भरी जुवानी माय रांड हुय जावै तो वीरी आफतारो तो कैवणू ही कै। घर-गुवाड़ सगळा एक ही वात कैवै जमानू वड़ो खराव है। ईं री किया पार पड़सी। कणा ही पण ऊचो-नीचौ पड ज्यासी तो घर री नाक कट ज्यासी। काई नाक अत्ती छोटी है कै अत्तीसी वात सू कट ज्यासी। कोई औ भी जरूरी है कै एक'र वसायोड़ो घर नी वसे तो दूजा वसायोड़ो घर वस ज्यासी। ठा तौ एक पल री नी पड़ै पण वात सौ जुगा री करै। दुनिया वड़ी स्याणी है। घर वळती कोनै ही को दीखै नी अर डूगर वळती सगळा नै दीखै। मिनख नी तो जमानै न वदल सकै अर नी लोगां री जुवान पकड़ सकै।" विमला सूती सूती आ सगळा वातां माथै सोचे ही। मीठी ठंड पड़वा लागगी ही। सगळा ढकेड़ ठाव मांय सोवा लागग्या हा। ओरे माय घुप अन्धार हो। कनै सूतो रिंकू सिया मरतौ आपरी मा सूं चिपतौ जावै हौ। मा री सगळी ममता भेळी हुयनै रिंकू माथै पटै ही। विमला आपरो हाथ रिंकू रै डील माथै फेरवा लागगी। रिंकू आपरी

मां री छतर छियां मांय मैं'री नीद लेवै हो। विमला को सूत्ती ही कोंजागै ही। आधी नीद माय सुप्यौ। "अबार ही घबरायगी। हालताई तो जीवण री सरूआत है। लोग दीखै जिस्या कोनी। माड़ा दीखै जका चोखा हुवैला अर चोखा दीखै जका माड़ा निकळै ला। दुनियां नै देख, सुण, बूझ अर पछै मनरी कर। नी तो जीवणं सोरो है आर नी मरणू।" आ सुणता ही आंख्यां सूं मोती ढुळकनै गिदरै माथै बिखरग्या।

विमला बिखरगी। कालजो थमक्यो। सिसक्यां भरती रिंकू री पीठ माथै हाथ फैरवा लागगी। फैर सोचवा लागगी—लारली वाता माथै। "घर आळा दिनगै वेगा उठता। पढण लिखण रो काम करता पछै पढावण सारू जावंता। भात वळया पाछा आवता। खाणू खानै स्कूल जावतां। आखो दिन बठै रैवता। सिझ्या पाछा आंवता। खाणू खांयनै पाछा पढावण व पढण रै पाछा चल्या जावता। पांर एक गयौ पछै पाछा घरै आवता। आखै दिन धाणी रै बैळ दाई चालता रैवता। कदैही कदैही सासू पुचकार नै कैवती—बेटा। ईं यां कांई करै! रात दिन बलद दाई पच पच मरै। थोडो भोत आराम करिया कर। नीं तो गोडा टूट ज्यासी। आपणै कै घणी जाव विखरेड़ी है?"

"घरै बैठा रैवणै सूं गोडा जुड़ ज्यासी। मिनख तो हालता चालता ही चोखा। हूं कोई घणी मेहनत नी करूं हू। आपरी आसीस चाहिजै।" वै हंसनै कैवता। सासूजी सगळी बात समझता हा। बेटे री चतराई अर आपरी ममता माथै चुप हुय ज्यावता। विमला फैर सोचवा लागगी—"कांई म्हारो जीवण काळै घोर अन्धैरा माय ही रैसी। ईं माय कदैही सूरज री किरण नी आवैली। मानल्यो सूरज री किरण नी आवैं ली तो हू ईयां ही ईं अन्धेर माय भटकती रैस्यू। म्हारो आगोतर विगडै चाहे सुधरै मनै भी तो सुधारणू ही है। कठैही म्हारी ना समझी सूं म्हारो आ रिंकू रो भो भी नी विगड़ जावै। म्हारै भाग मांय जको लिख्योड़ो है जको हुसी पण रिंकू रो भागतो वणावणू ही है। मनै तो आखै जीवण रोवणू है पण म्हारो जायोडो म्हारै थका क्यू रोवै। मरयो है तो ईं रो बाप। मा तो जीवै है। हूं रोस्यू क्यूं कै म्हारो मोट्यार मरग्यो जकै सूं।" ईं कै सागै ही वीरै हिवड़ै माय आग लागगी। तळतळीजबा लागगी। आख्या माय एक मिनख री छिया तैरबा लागगी। फैर वो वोल्यो "क्यू? हिम्मत हारगी! कांई तनै थारै माथै विस्वास कोनी। आ दुनिया है। चढै माथै हसै अर ऊपाळै माथै। ईं सू आपणू अतो ही रिस्तो है जतो आ आपणै सू राखै। आ दुनिया पाळी तांईं रंगहीन है। थारा विचार चोखा हुवेला तो आ दुनिया चोखी दीखेली। नी तो माड़ी। इण वास्तै चोखा विचार राख नै काम करै। आ दुनिया तनै कांई कैवै आ कांई नी कैवै ईं माथै विचार ना करी। ईं नै पूछ पूछ नै काम करलेला तो आ तनै कूए मांय नाख देवैली अर ऊपर सूं हंसेली।" सगळो दुख भेळो हुयनै आंसू वण नै विखरव

लागग्यो। समय रो मारग लाम्बो घणू है आ मिनख रा पावडा छोटा। पण जे मिनख हिम्मत सूं काम लेवै तो वो सगळै मारग नै हंसतो हंसतो पार कर देवै। ईया ही म्हारे घर आळा हंसता हंसता समय रै मारग चालता चालता जुआनी माय सुरग सिधारग्या अर म्हारै माथै ओ भार छोड़ग्या पूरी तरह निभावण खातर। आज री सारी देवण नै बूढी सासू है अर भविस्य री आसा रो आधार कूख रो टाबर।

पसवाड़ो फैरियो। रिंकू वीं रै काठो पूठ सूं चिपग्यो। आपरो एक नानू सो हाथ हाचल माथै राख्यो। दूध चूंगणू तो छोड दियो है पण नेह आमू वत्तो ही है। विमला पाछी सोचवा लागगी लारली वाता नै जकी री अबै छियां ही दीखै ही। काल की बाता आज रै इतिहास मांय स्थान लेवती जावै ही। थोड़ा दिना पछै वे सगळी री सगळी यादगार रै फाटक सू बार हुय नै आपरी छोटी-मोटी सैनाणी ही छोड़ देवै। रिंकू नै पालखी माय बिठाण नै चूरमूं खुवाती जणा वो चिड़ी चाच जतो खावतो धणकरो विखेर देवतो। अर चिमठी भरनै आपरी मा रै होटां रै लगावतो। जणां मां आपरै अहम् नै भुलाय नै वीरो लाड करण लाग ज्यावती। विमला पाछो पसवाडो फैरियो अर रिंकू ने छाती सू लगाय नै हाथ-फेरवा लागगी आपरो हाचल देय नै नेह मांय आपरो अस्तित्व भुलावणू चावती ही। रिंकू सूखा हाचळ से चूसवा लागग्यो।

विमला लारलै जीवण रै पाना नै पाछा वेगा वेगा पलटवा लागगी। लार लै पाना नै पढवा लागगी - जद आस बन्धी ही सासू ने घणू हरख हुयो। सगळा देवी देवता री कड़ाई बोली, जात झडूलो बोल्यो। जे कदेई खाती चालती फट रोकती— बेटा सावण चाल। अती कै जल्दी है। थोड़ो ध्यान राख्या कर। तनै पतो है थारो पग भारी है। हूं लाजसूं मर जावती। पाछी सावळ चालवा लाग ज्यावती। मन माय सोचती ई स्यूं कै हुवै। पण बारो मान राखण सारू वोंही काम करती जकी वे केवता। समय पाय नै रिंकू हुयो। वास गुवाड माय गुड़ बाट्यो। लोग कह्यौ डोकरी औ खरच क्यू करै। जणै वा पडूतर दियो बरसा बाद घर माय-सोने रो सूरज उग्यो है। वडेरा रै भाग सूं घर माय थाळी वाजी है। म्हारी कै ओकात है। भगवान ही सब कुछ करावै है। आदमी रो कै माजनू है। भगवान ही सगळा री पत राखै। अबै डोकरी सोचवा लागगी ही बेटे-पोते रै काधै माथै हू चली ज्याऊं। पण भागरो लेखो बड़ो अजीव है। जाणू कैनै ही हो, गयो कोई। तीन बरस बडी मुस्कल सू गया हुसी। डोकरी री छाती माथै दुखरो पाहड़ टूट पड़ियो। रिंकू रा बाबूजी थोडा सा बिमार पड़ नै चल बस्या। घर माय कुह-राम मचग्यो। डोकरी टूटगी। पण हिम्मत नीं हारी। एक आस धोखो देयगी तो बीरी ओलाद नै आधार बणायो। अर मनै धीरज दियो। डोकरी आ परै मोट्यार रै दुख नै भुलाय नै बेटो पाळ्यो। आ जाण वो अध-बिचै धोखो देयग्यो

तो बीनै करड़ी छाती करनै दबायो अर पोते नै आसरो आधार बणायो। आपरो सगळो-सगळो दुख भूल नै रिंकू नै अर मनै छाती सूं लगाया। डोकरी आपरे सगळा दुखा नै कंठा ताही नी आवण दिया। सगळै जहर नै अमरित करने पीवा लागगी। पण डोकरी रो डील होळै-होळै टूटवा लाग्यो।

समय रै सागै घाव भरवा लागग्या। पीरै आवणू-जावणू सरू हुयो। दोय एक बरस मुस्कल सूं निसरिया हा कै म्हारै सामै एक जीवण रो नूवो मारग खोलण री बात हुयवा लागगी। ईया किया पार पड़सी। अबार अवस्था ही कै हुई है। दूजी गुवाडी वसाय लेवणी चाहिजै। अबार खावण-पीवण अर पेरण-ओढण रा दिन है। जमानू वडो खराब है। मा-बाप अबै कत्ताक वरस रा।

भाई-भोजाई आगे किया राखसी कै पतो चालै। काल कदैई की हुय ज्यासी तो कुओ-फासी करणो पड़सी। वी कै पैं'ली भले आदमी नै देखनै घर माड लेवणू समझदारी हुसी। ओ सगळी वाता सुणता-सुणतां कान बैरा हुयवा लागग्या। "नी! नी!! म्हारो जीवण अत्तो आछो कोनी। हू विस्वासघात कोनी करू। डोकरी ने म्हारे हाथ सू मौत रै मूडै माय कोनी धकेलू अर म्हारी कूख नै लावारिस जिया सडक माथै कोनी फैंकू। हू कुतिया ज्यू पूछ हिलावती फिरुं···आ नीहुय सकै। हू कमास्यू—अर दादी पोते नै पाळस्यू।"

□□

जिण विध राखै राम

□

शिवराज छंगाणी

रात री वेळा। सरणाटौ। अधार घुप्प। हाथ नैं हाथ कोनी देख सकै। च्यारू मेर निजर फैलावा। ऊंचा-ऊंचा, डीगा-डीगा धोरा। धोरा रै असवाड़े-पसवाड़ै कठैई बुई रा चूंखला, कठैई सिणियौ अर-कठैई खींप। थोड़ीसीक देर पाछै आभै रै उतरादै सू धव-धव अवाज करती आंधी वाजणी सरू हुयी।

गोळ-गोळ झूपा अर—लाम्बी-मोटी-झूपड़्यां ईं राखसणी नैं देख'र कापणी सरू हुयगी। इसौ लागर्‌यौ हो जाणै किणी तपोवन माय भूल सूं जगळी हाथी आय वडग्यौ हुवै अर जीव-जिनावर, पाख-पखेरू डरू-फरू हुयग्या हुवैं। आंधी अर खखाड रै बीच अेक जाणी-पिछाणी आवाज आवै।

आ अवाज धाफूड़ी रै टसकणै री ही। धाफूड़ी कोलायत रै नजीक पिलाप गाव री रैवण वाळी। अैं दो वैन्यां ही। दूजी रौ—नाव गोमती। गोमती भोळी-भाळी अर निरमळ सुभाव आळी ही। पण धाफूड़ी थोड़ी चट अर चपर-चपर करण वाळी।

पिलाप रै बंधै रै नजीक वाळै गाव मांय इयैं रै घर री जमीण। धाफूड़ी रा मा-बाप किरसाण अर काम-धधौ किरसाणी।

धाफूड़ी रूपाळी गणगौर ज्यूं लागती। इयैं रौ बाप हरखौ ईं चिडकोळी नैं देख-देख'र कवळ खिलै ज्यूं खिलतौ। धाफूड़ी बाळपणै मे जद-कदे ई कोई जिनस मागती, हरखौ बीनै लायर देवतौ। हरखै रै धाफूड़ी मूडै लाग्योड़ी ही पण गोमती भी बीरी लाडली ही। लाड़-कोड में कोई कमी नई रैवती। धाफूड़ी रै एक भाई हो जिकै रो नाव सुगनो। ओ वडो सुगना सूं जलम्यो। जिकी घड़ी इयं रौ जलम हुयौ धाफूड़ी रै बाप रै तीनू-चारूं खेतां मे मणोवध बाजरी, गवार, मोठ अ'र तिल हुया। बीणो भी धापतौ। धाफूड़ी री मा वड़ी कामेतण। बीरे घर मे

हरचन्द वाळा हुयग्या । सुगनियौ वाकै मे ई सुगनावाळी ई हो। धाफूड़ी री मां रै अन्न-धन रौ कोई पार नईं। सगळा अखूट भंडार भर्या हा—तीन टावरां सूं वधीक माईता रै ग्रौर काई हुय सकै। गाडी-वळध, ऊंट अ'र गायां-भैंस्या सगळा ई वोत सौरा रैवै। दिनां पछै जद धाफूड़ी नैं ग्रा ठा पड़ी कै पिलाप रै नजीक कोलायत गांव में मेळौ लागैं। मोकळा—मिनख अर तीरथ जातरी दूर-दूर सूं ग्रावै। साधू—सन्यासी सरधा ग्रर भगती भाव सूं वठै ग्रावै ग्रर—तळाव मे सिनान करै।

एक दिन धाफूड़ी ग्रापरी माँ सू बोली—"ए माऊ म्हनै कोलायत रौ मेळौ दिखादै।

म्हारी सहेल्यां ग्रर वांरां मा-वाप सगळाई मेळै-मगरियै जावै। म्हनै, गोमती ग्रर सुगनै नै भी मेळो दिखाव।

मा—बेटी, म्हें तो ग्रठै ग्राय'र ई कदैई मेळो-मगरियौ कोनी देख्यौ। ग्रो घर भलो ग्रर हूं भली। थारै वाप रै ग्रठै ऊभी ग्राई ही ग्र'र ग्राड़ी हुय'र ई घर सू निकळीजसी। नां कोई मेळौ ग्रर ना कोई डवोळौ।

धाफूड़ी लाड़—कोड मांय पळयोडी। इयैं कारणै थोड़ी जिद्दण ही हुयगी। वी जिद धार लियौ। ग्राप वाळी वात माथैं सिंधी ऊंठ ग्रड़ै ज्यूं ग्रडगी। रोवण लागी। हाथ-पग पटक्या। पण मा माथै कोई वात रो ग्रसर कोनी। जाणै वा तो चीकणो भाटो वणगी हुवै।

इतरी देर मांय वीरौ वाप ग्रायग्यो। धाफूडी नै रोंवती देख'र माथै ऊपर हाथ फैर'र वोल्यौ—क्यूं वेटी धाफू! थनै कुण मारी? म्हारी चिड़कोळी नैं कुण छेड़ी?

वाप रै लाड़-कौड़ पळयोड़ी धाफू—दूणी बुसक्या फाड़णी सरू कर दी। वीरो गळौ भरीजग्यो, पण वाप नै मेळे रे वारे में कईं कोनी कैय सकी।

उणा धाफूड़ी री मा नै पूछ्यौ, "ग्ररे सुणै है नी, ग्रा धाफू किया वुसक्यां फाड़ रैयी है। इंनै कुण मारी-कूटी। ग्रा कईं मांगणौ चावै है। वोलतो सई।

वा वोली—ग्रा छोरी घणी नादीदी है। इयैं सुलखणी नै जमानै री हवा लाग रैयी है।

धाफू रौ वाप वोल्यौ—ग्ररे लिछमी! म्हारी बात तो सुण। सुणै विनाईं हड़-हड़ होय नै कईं करै ईंया। छोरी लायण स्याणी है। काईं चावै है? म्हने मालम तो पड़े?

वी उथळो दियौ—धाफू री सहेल्या ग्रर वारा—मा-वाप सगळै कोलायत रै मेळे वहीर हुग्रा है। इयैं रौ भी मन चाल रैयो है। म्हनै कैवै कै मेळो दिखाय दै। ग्रवै दिखावो इयैं कोड-कोडाळी, लाड-लडायी, डोल वायरी ने मेळौ। वाळण-जोगडी घणी माथै सू हालण लाग रैयी है। इयैं रै हुक्म हिलाया किया हालसी।

धापू री बाप बोल्यौ—वाह् थे वाह्''' इत्तीसीक बात अ'र इत्ती रोवा-वणौ। म्हारी फूलां-सी कंवळी—छोरी नैं जे बाप मेळो नईं दिखासी तो कुण दिखासी ?

धापूडी री बाप धापूड़ी नैं लाड सूं रमावतां—रमावतो गोमती अर सुगनै नैं बुलावौ भेज्यौ। गोमती अर सुगनो दोनूं आयग्या।

बोल्या, बापू, किया बुलाया है म्हानैं ? ओ-हो धापूडी रा लाड-कोड हुय रैया है। धापू थारी घणी लाडली है। बापड़ी मिसरी बोल ज्यूं बोलै। कदेई रोवै कूकै कोनी। मिन्नी ज्यूं चुप रैवै। अ'र जे कदेई रोवै तो जाणै घर माथै कोई कोयल कूक रैयी हुवै इसी थां नैं लागै।

धापूडी रै बाप उथळायौ—नईं बेटा, आ धापूड़ी जित्ती वाली लागै उत्ताई थैं सगळा। म्हारै लाडू री कोर मे कुण खारो अर कुण मीठौ।

गोमती बोली—बापू ई धापूडी री आख्यां में मोती किया बिखर रैया है ? जाणै कोई पटराणीजी रूठग्या हुवै। बताओ ई री मिन्नी किया छळकगी ?

बापू कैयो—आपारै गांव सूं थोड़ी दूर माथै कोलायत रो मेळो लागै। घोत-सा लोग भेळा हुवै। गांव-गाव अ'र सैर-सैर रा जात्री आवै। दुकाना लागै। इयै मेळा में आपारै गांव रा लोग-लुगायां भी जासी। धापूड़ी मेळो देखण री जिद करै। काई थैं सगळा चालसौ ?

वां उथळो दियौ—हा, म्हे सगळा चालसां। माऊ नैं सागै ले लेसां। वठै घोरा माथै रमसा, गीत गासा अर धूमसा। इंया सगळो परिवार बळघा-गाड़ी माथै मेळो देखण वहीर हुवै। धापूडी अर वीरो भाई, मा-बाप बी दिन सूं मेळा-मगरिया, तीज-तिवार सगळा खुशी-खुशी मनावता।

धापूडी चादे री चानणी वधै ज्यूं वधणी सरू हुयी। सोरी रैवै। थोड़ो सोरो खावोडो-पीयोडो डील माथै निजर आवण लाग र्यो हो।

धापूडी रा ब्याव माडणरी त्यारी। सगपण पूगळ गांव माय हूग्यों। धापू रै वाप—धूम-धाम सूं ब्याव कर्‌यो। वीरा हाथ रग्या। मोकळो धन-धीणो बी रै सासरै आछा नैं राजी-राजी दियो। आव-भगत अ'र मिजमाणी इत्ती चोखी करी जाणै किणी गावरै आछै ठाकर करी हुसी। धापू री वाप हरखौ वी नैं सासरै मेल'र अळगौ हुयौ जद सूं वी'रै चैरै माथै उदासी छाय रैयी ही। वो सोचण लाग्यौ—अबै गोमती रो नंबर आसी। पछै सुगनै नै फेरा दिरासा।

पाछौ मेनत सूं खेत बोवण—जोतण अर धीणै री रुखाळी माय जुटग्यौ। जद कदै खाली वैठतो, धापू री ओळू अर गोमती रो चैरो आख्या आगे चक्कर काटतो।

कुण जाणै धापूड़ी सोरी-सुखी होसी या नईं। पूगळ सूं समचार आवै-जावै जिकै नै पूछतो रैवतो।

इया मोकळा दिन बीतग्या । धाफूड़ी रै सासरे वाळा ग्रेकर-दो बार ई बींनै भेजी हुसी फेरूं ग्रापरै धंधै में लगाय दीवी ।

सगळां रै ब्याव करणै रो सरंजाम करतां—करतां हरखो थाक'र ढांचो हुयग्यो। पण ग्रासा तीज मायै गोमती ग्र'र सुगनै रा ब्याव माड'र हरखो घणो हरखायो। बो सोच्यो— बन-बन रा काठ भेळा हुयोड़ा, ठा नीं किया ससार सागर सूं बेड़ी पार लंघासी ।

उदास-उदास चैरो हुयोड़ै हरखै नै कई बरस बीतग्या हा। पण ग्रबकै बीमार पड्यो तो पाछो ठीक हुयोई कोनी। हरखो सुरग सिधारग्यो।

ई वेळा धाफूड़ी हाजर कोनी ही । बीं बापू रै मरणै रा समचार सुण्या तो फूट-फूट'र रोवण लागी ग्र'र चेता-चूक होयगी । होस मे ग्रायी जद सासरै वाळा बीनै बी रै पीरै कोनी भेजी।

हरखै रै मरणै सूं धाफूड़ी री मा नै भी धक्को लाग्यो। बो मांचो झाल्यो। पछै उठी कोनी। सगळो सुरग सो गाव बारी बास्तै भेंसाण मारै। ग्रठीनै सुगनै रा हवाल माडा हुयग्या। पाछलै दो बरसां सू ग्रकाळरी काळी छैंया धीणै नै ग्रापरै सागै लपेटे मे ले लीनो। गायां-भैंस्या ग्रर ऊंट की कोनी रैया। केई तो चारै ग्र'र पाणी बिना मरग्या ग्रार केइया नै बेचर ग्राप रो पेट पालणो पड़ियो।

विणगी धाफूड़ी रै टाबर—टीगर बिखर गया हा। पण ग्रकाळ विण नै फोड़ा घाल रैयो हो।

सुगनै रै कैवणे सूं धाफूड़ी टाबर-टीगरा सागै केई बरसा पाछै गाव ग्रायी। ग्रबै गाव रा कोझा हवाल देख'र बा ग्रचूंभै में पड़गी।

कठै तो फूटरो बस्योड़ो गाव जठै राम-राज हो ग्र'र कठै काळ सूं कुटीज्योड़ो गाव। दिन-रात रो ग्रातरो।

धाफूड़ी नै गाव रै घर में मांचो ढाळ'र सोवण रो काम पड्यो जद विण नै ग्राप रै बालपणै रा सै चितराम ध्यान मे ग्रावै। धाफूड़ी कदै मन-मन मे मुळकै ग्रर कदै बुसक्या फाड़ती रोवै।

धाफूड़ी घणी सोरी रैयोड़ी ही। दोरा दिन जावक ई देख्या कोनी हा। पण ग्रबकै बाळे विखै सूं बी रै फड़कै री बीमारी लागगी।

जिकी रात जोर सूं ग्रंधड़ बाजणो सरू हुयो, धाफूड़ी री सास भी ऊंचो चढ़ण लाग रैयो हो। धाफूड़ी माचै माथै पड़ी टसक रैयी है। बीरी ग्रांख्या माय सू ग्रासू ढुलक रैया है।

ग्रंधारी रात रा बीरे टसकणै नै सुण'र पाडोसण बूढी दादी ग्रायी। बी देख्यो। ग्रा कईं बात है? कुण टसकै है? ग्रागै ग्राय'र देखै है तो ग्रा धाफूड़ी। डोकरी हेलो मार्यो, ग्ररे धाफूड़ी! काईं हुयग्यो, बेटी थारै डील नै। धाफूड़ी सुण सकै है, पण उथळो कोनी दिरीजै।

डोकरी धाफूड़ी रै खनै बैठ जावै अ'र धीमै-धीमै, होलै-होलै बीरै माथै ऊपर हाथ फेरै अ'र कैवे—वा भगवान काई हो अ'र काई होयग्यो ? खैर ! जिण विध राखै राम तेई विध रहीये । धाफूड़ी रो फड़को डोकरी रै लाड-कोड सूं ठीक हुवण लाग रैयो हो । पण ओ अधड़ अर सखार फेलं अकाळ रा लखण बता रैयो है ।

□□

जमराजा री निजर

□

छगन लाल व्यास

ठाकुर विजैसिंघजी खाट माथै बैठ्या हा ! खनै पगा माथै ऊभौ हो भीमो दरोगो अ'र आळे मांयनै चिमनी धूंआ साथै ऊजाळौ रैंय-रैंय नै कर रयी ही। भरियो भादवो हुवण सूं आकास मांय ने घटाटोप वादळा मंडरीज रह्या हा ! मेह री गाज सूं मोरिया कूकता अ'र विजळी र पळाका सूं काळी अंधारी रात वी दिन सूं सवाई लागती। रिमझिम-रिमझिम छांट्या रै साथै वरसाळू पवन संजीवण री भात चाल रही ही। सगळा जीव-जन्तुंआ रै चेहरा माथै अणूती मुळक ही जांणै सुरग रा पाट खुळ रह्या व्है। ठाकुर मूंछा माथै अणूता वट भरता वोल्या—भीमा ! दारू री गुटकौ तो लाव···आज तो वैरी मोसम पीवण रो वण रह्यौ है।

—भीमो—'*जो हुकम' केवता रावळा मायनै घुस्यौ अ'र छांटां माय भीजतौ*-भीजतौ दारू री वोतळ लेय'र आख झपकै जित्ती जेज मांय पाछौ हाजर व्हियौ।

—तिम्मची माथै पड़ी वेड़की मायनै सू लोटौ भरियौ अ'र हाथ धोय'र काच री गिलास खंगाळी। साफ गिलास माय वोतळ उंडेल'र भरी अ'र ठाकुर रै हाथा डोडौ हाथ कर झलायी।

—'लेरावौ अन्नदाता···।'

—ठाकुर अनामिका-आंगळी सूं अणगिणत देवतावां नै छाटा नाखिया अ'र मूंडै लगायी। खाली हुवण माथै पाछी गिळास भरी अ'र गटकाय लीनी। तीजी गिलास जद दरोगो भरण लागौ तो ठाकुर मूंछा माडता वोल्या—आधीज भरजै रै···जोगमाया री गुटकौ तो थूं ई लेवेला।

—आप अरोगौ···लारा सू म्हूं अेक-आध घूंट लेय लेवूंला, आपरो उतार अ'र म्हारौ सिणगार···केवता भीमै तीजी गिलास भर लीनी···।

खेंखारौ करता ठाकुर मूडै लगायी पण सुमत दीनी भगवान जिकौ आधी

गिलास इज गुटकायी। आधी भीमैं खा'नी कीनी।

—भीमैं 'जै माताजी' री कीनी अ'र मूंडै लगायी।

—झीणो-झीणो छाद्या हाळ आय रही ही पण हवा रुक जावण सू जीव घुमरीजण लागो। ठाकुर घड़ी पळक अठी-उठी हुवता बोल्या—'भीमा। घोड़ै माथै उळी नाख अ'र माय नैं केय दे के' रावळै घूमण नैं जाय रह्या है, मास प्यार करैं।'

—'हुकम अन्नदाता' केवता हाजरियो भीमो विजळी रे पळाका दाई ऊभौ व्हियो अ'र घोडै नैं ठाण माथै सू लायो।

—घोडौ काळो-लम्बो-पुस्तो···। माथा माथै धोलो टीकौ···। परगणा मायनैं अैड़ौ घोडौ नी। घणखरा घोडियां लेय'र अठै आवता ! ठाकुर दिल रौ दरियाव हुवण सू आया नैं आवकार देवण मायनै कीं कसर नी राखता। ब्राह्मण नैं रोटा-दाळ'र खाजरु वाळै नैं खाज, दारू अ'र अमलदार नैं अमल मिल जावतो। कदैई नाराजगी उणा रैं चैरा माथै नी दिखती। हर समैं मुळकता रैवता···। जद'ज मिनख केवता—ठाकुर काईं है देवता है···इणा री तो चटुड़ी-आगळी री भी होड़ नी कर सकै।

आज नशा मायनैं ठाकुर वैर-भूत व्हियोड़ा हुवण सू उणां नैं आभौ टोपसी जित्तौ लाग रह्यौ हो। घोडै माथै टाग वाळता आज ठाकुर उण रैं अैड़ी लगाई पछै कुण कैवै ब्याव भूडौ···। घोड़ौ कोस भर माथै आयो। गाव रै फळसै माथै जाय'र घोडो धीमौ पड़ियौ···। ठाकुर सोच्यौ गांव रै उण खानी नदी चालै है, आज उण रैं किनारा माथै इज घड़ी-पलक घूमाला···। आ सोच'र उणा घोड़ै नैं गाव रैं मायनैं घाल्यो। रात रा करीब दस बजिया व्हैळा पण बरसाळू रात हुवण सूं लागतो जाणै आधी रात हुयगी। चिडी रो जायो नी फुरकै···कूतरा भी जाणै अचेत हुय'र पड़ग्या। गळिया मायनैं अणूतो कीचड अर अंधारो घोर···। घोड़ौ भी नी दिसतौ···। ठाकुर विजैसिंघजी जद अेक गळी मायनैं सूं निकल्या तो किणी रे बूबीभरण री आवाज उणा रैं काना मायनै पड़ी। घोडा नै रोक्यौ अ'र कान लगायो। बात सोलू आना साची ही। कोई आदी तरिया बूबीभ रह्यौ है। ठाकुर रौ खून उकळण लागौ। आख्या रा डोळा लाल-सोळ व्हैयगा "अर···र···किणीरी इज्जत लूटी जै दिखै। आवाज किणी लुगाई री दिखै···। म्हारै ऊभा ओ कीकर व्है सकै ! अैड़ो दोय माथाळौ कुण आयग्यो जिको म्हारैं ऊभा किणी री इज्जत लूट। राजपूत रो धरम है कै मुसीवत मांयनै मदद करै। जे आज म्हूं इण नैं नी बचाय सकू तो म्हारा माईत सुरग सू म्हारै माथै थूकैळा—थस्स···।

ठाकुर घोड़ै सूं नीचौ उतरियौ अ'र मकान मायनैं जावण री रस्तो देखण लाग्यौ। इत्तै मायनै तो अेक विजळी रो पळाको व्हियो अ'र दरवाजे खनै कोई आदमी लुक्योडो दिख्यौ।

—कुण है रे हरामजादो…? पूछतां ठाकुर नी ग्राव देख्यौ नीं ताव ठोकी ग्रेक थप्पड़ सड़ड्…ऽऽऽ ग्र'र ग्रादमी गुटा खावण लागौ। गुटा खावतै रै ग्रेक ग्रौरूं लात ठोकता बोल्या…नालायक…कमीण …मादर…

ठाकुर भीत कूद'र मायनै घुस्या तो बारै वाळौ तो माथा माथै पग लेय'र तैतीसा मनायो ग्र'र मायनै वाळा गाळी-गळोच सुण समझग्या के' रग मायनै भंग पड़ग्यौ दिखै ? पण ग्रवै छोड़ै तो जावै ग्र'र पकड़ै तो खावै वाळी बात व्हैगी ही, जिण सूं ठाकुर नै देख उणा जावतै खातर डडा उच्चकावणा सरू कीना। ठाकुर ग्राछौ खिलाड़ी हो उण ग्रागळ व्है विचारा झक्ख मारै पण मरतौ काइं करै? राजपूत रे मूडै भयंकर गाळ ग्र'र मियांन मायनै सूं तळवार निकळी। जे' चोर मांयनै छतीस कळावां नी व्है तो ग्रेक ग्राध रौ मायौ जमी सूं मिळ जावतौ पण व्है नी जांणै किणकर वाळ-वाळ वचग्या ग्र'र पछै तो जीव लेय'र न्हाठा। घरती मां ग्रापरै ग्रोरणै री लाज रैय जावण सूं मुळकण लागी, विजळी रो पळाकौ व्हियौ तो उठै ग्रेक लुगाई दिखी। ठाकुर उण लुगाई खनै ग्यौ तो लुगाई वकरी घूजै ज्यू घूज रही ही, ग्रो सोच'र के' सेर रो सवा सेर ग्रायग्यो। ठाकुर विजैसिंघ उण री हालत देखी तो ग्रकल कह्यौ नी करै—वाळ विखरयोड़ा, कपड़ा जगै-जगै सू फाट्योड़ा, शरीर रै झरूंट्या निकाल्योड़ा ग्र'र मूंडा मांयनै कपडौ ठूंस्योड़ो। ठाकुर मूडा मांयनै सूं कपड़ौ निकाळता बूझ्यौ—

—काइं वात है म्हारी घरम री वैन…?

—'घरम री वैन' सुणतां लुगाई रै जीव मांयनै जीव ग्रायौ ग्रर' वा दुसकै भरीजती वोली—भाया ! चोर तिजोरी री चाबिया मागता हा म्है नी बताई, तो राड जिणिया इज्जत लूटण लागा ग्र'र छाती माथै ग्राय'र वैठ्ग्या…।

—ठाकुर सोचण लागौ मिनख धन खातर कित्तौ ग्राधौ हुय जावै ग्र'र कित्तौ दुःख सहन कर लेवै। इनैज तो कैवै चमडी जाय पण दमड़ी नी…। वाह लिछमी थारौ जजाल। मारण वाळां करतां तारण वाळौ वत्तौ व्है। भगवांन थारी लाज वचावण खातर म्हनै टैमसर भेज दीनौ। ग्रवै उणा नै निकाळ दीना है। थूं ग्रवै निरभै हुय'र रैय सकै। व्है तो जीवता इ' ग्रठी नै मूडौ नी करैला…। ग्रवै जाय सकू…?

लुगाई रौ काळजौ ठाकुर नै जावतां देख'र धडकण लाग्यौ—धड़क…धड़क। वा वोली—म्हनै वै छोड़ेला नीं। क्यू के उणा रै मूडै ग्रेक बार खून लाग चुकग्यौ है…? ग्रवै म्हारी लाज ग्रापरै हाथां है…।

—ग्ररे बेनड़ ? ग्रवै थनै पेट मांय सू पाणी हलावण री जरूरत नी है, पण जे ग्रवै भरोसौ नी व्है तो चाल म्हारै साथै…बाकी तो थारी इ काइं।

—हा वापसी ! थोड़ा दिना ताईं ग्रापरी दासी, वण'र रेवूला ! जिण सूं म्हारौ जीव ठिकाणै ग्राय जावेला…।

—ग्रांगळी पकड़तां ग्रो तो पूणचो पकडीज्यो पण कांई व्है। दोन्यूं घोड़ा माथै बैठ्या ग्रर रावळै पूग्या। ठकराणी मेहळां मायनैं ग्रंवळाती-ग्रंवळाती सोयगी ही ग्रर' दरोगो भीमो भी बैठ्यो-बैठ्यो लुढ़क्यो हो। ठाकुर नैं देख भीमो ऊभो व्हियो ग्र'र साफो ठीक कीनो। ठाकुर उण लुगाई नै रावळा माय लेय जावण रो हुकम कीनो। वा लुगाई भीमा साथै रावळा माय गई ग्र'र ठाकुर हाथ धोय'र खाणा नै उडीकण लागा। ग्रेक पंथ दोय काज रै ज्यूं भीमो ग्रावतां री वखत थाळ लेय ग्रायो। ठाकुर मन इ मन खुद नै धिनवाद देय रह्या हो कै धिन्न है म्हारी जिनगाणी, के' ग्राज किणी री इज्जत बचाय लीनी। खाणो खायो ग्रर हाथ धोया तो भीमै उठाय लीनो। रात घणी बीतगी ही जिण सू ठाकुर सीधो मेहळां पूग्यो। ठकराणी मूंडो फेर'र सोयगी। ठाकुर बूझ्यो—

—"कांई बात है, ग्राज मूंडो कीकर चढ़ग्यो। राणीजी नै कुण काणी जी कैय दियो!'

'…' वा कीं नीं बोली।

—कांई बात है रूपाळी लाडी…? ठाकुर पाछो पूछ्यो।

—ग्रापरै सागै ग्रा कुण है? ठकराणी सवाल कीनो।

—ठाकुर पूरी कहा'णी सुणायी ग्र'र पछै बोल्या—यू कांई व्हेम राखै…।

ठकराणी नै हाळ पूरो भरोसो नी जिण सू वा ऊपरळा मन सू थोड़ी मुळकी ग्र'र ऊंघ रो बहानो कर विचारा माय गोता खावण लागी…। इण रूप रै खजाना नैं जरूर हेताळू कर लायो है ग्र'र ग्रबै म्हनैं चिगाय रह्या है, कालै म्हनैं कूतरी री भांत राखेला ग्र'र इण नें काळजै रो टुकड़ो…पण ग्रबै कांई व्है इण नै कीकर खतम करणी…

—दूजै दिन वा लुगाई सिनान करण खातर सिनानघर माय धुसी। ठकराणी ग्रागणै माय बैठी ही। इत्तै मांय नैं ठाकुर किणी काम सू सिनानघर खानी पग राख्यो ग्र'र ठकराणी देख लीनो…। 'ग्रर…र…दाळ माय जरूर काळो है…ग्रेक मियान मांय दोय तलवारा नी रैय सकै…इण को तो खातमो करणो इज पड़सी। ज्यूं-ज्यू भीजै कांवळी ग्र'र त्यूं-त्यूं भारी होय…इण रंडी रो तो खातमो कियां इज नेहचो व्है ताकि पछै नीं रेवै बांस ग्र'र नी बाजै बासुरी…ठाकुर जरूर रूप रो दीवानो व्हियो है, इण नै कांई रूप दियो है परमात्मा। जाणै परम नेहचै सू घड़ी व्है, पण ग्रबार पाछी परमात्मा खनै भेज दू—ग्रळिया थारा बळिया।

ग्रो विचार ग्रावता इ ठकराणी ऊभी व्ही ग्रर नागी तलवार हाथ माय लेय नैं सिनानघर रो दरवाजो खटखटायो—खट…खट…

ग्रबार ग्रोरणो ग्रोढ'र दरवाजो खोलूं…। मांय सूं पडूत्तर ग्रायो।

घड़ी पळक मायनैं ज्योंही दरवाजो खुल्यो। रीसै बळ्योड़ी ठकराणी रो तलवार वाळो हाथ विजळी रै करट ज्यूं उण लुगाई री गावड़ माथै चाल्यो ग्र'र उण

रौ माथौ, सरीर सू आधौ व्हैग्यौ। ठकराणी रौ जीव हाळ नी घाप्यौ। उण छुरी लेय'र उण री सायळ रौ मांस काट्यौ अ'र पकायौ।

मास थाळ मायनै लेय'र सिझ्या रा खुद इज ठाकुर नै जिमावण नै चाली।

—पैलो कवौ लेवता' इ ठाकुर पूछ्यौ—'आज किण रौ मांस पकायौ है।

—अठै मास री कांई कमी···घणकरा इ मिनख आवै···।

—मिनख रौ मांस···। ठाकुर रै हाथ रौ कवौ हाथ मायनै इज रैयग्यौ अ'र गळै रौ कवौ गळै मांयनै अटकग्यौ···।'

—हा,उण रूपाळी रौ मांस है···ठकराणी रा दात पडूत्तर मांयनै किट्-किट् करण लागा।

—हे भगवान! म्है औ काईं कीनौ उण नै क्यू छुड़वायी, खावती, पीवती डोकरी अर' घर मायनै घोड़ौ क्यूं घाल्यौ! धरम करतां-करता पाप रो घड़ो म्हारै माथै इज फूटग्यौ···। हे भगवान थू भी जोर है—उस्तादां रो उस्ताद। अेमदियै री टोपी मेमदियै माथै जोर चढ़ावै···वै बड़बड़ावण लाग्या। भाणौ हराम कीनौ···। मास खावण रौ हाथ पाणी ळीनौ।

आखर ओ सोच'र शाति कीनी के' जमराजा री निजरा मायनै जिकौ चढ़ग्यौ उणनै कुण बचाय सकै! पाछा, सोचता सोचता ठाकुर ठकराणी कानी कातर निजरां सूं देख रह्या है। जाणै अबार डावौ भर उण रौ मांस खाय जावैला अ'र सौगन्ध टूट जावैला···। अबै तौ ठकराणी भी उभी धूजी जाणै चावी भर्योड़ौ रमेकडौ। ठकराणी नीची धूण घाल्या जमी कुरेद रही ही—इण डर सूं के' कठै'इ उण नै भी तौ जमराजा री निजर नी लागगी है।

□□

आं पोथ्यां री ग्यान

□

रमेशचन्द्र शर्मा

ठक···ठक री आवाज सूं म्हारी नींद उछट'र टूटगी। म्हारो मन अेक अण चाही कड़ुवाहट सू भरग्यो नै माथै में दरद सरु व्हेग्यो। मैं सोचू राम! या अदीतवार रै दिन म्हारी नींद कुण हराम कर दीनी। म्हारा जिस्या अल्प वेतन पावणिया मास्टरां री नींद तो इयां ही उड़ी रै वै है।

अबै मैं रीस खार नै म्हारी श्रीमती नै हेलो पाड़यो। पण उणा म्हारी आवाज ही नी सुणी। म्हारी आवाज तो कूट्योड़ा पीपै री आवाज सूं टकरार ओटी सी आवती लगै ही। जिणां नै ठां नी कुण बे-रहमी सू दणा-दण कूटर्यो हो। वा वठै सू नी टुरी!

अबै म्हारो पारो आसमान पै चढ़ग्यो। मैं झुंझळावतो रजाई नै परै फैंक'र रीस खावतो वारै आयो! वठै देखूतो—श्रीमतीजी दरवाजै नै पूठ दियां, पालती माड'र बैठा हा। उणा री चंचल आंगळ्या में सळाई सर-सर चालै ही, गोदी मे पड्या ऊन रा पिण्डा अयां उछळता हा जाणै हाल ब्यायोड़ी कूतड़ी रा नरम-नरम चितकबरा पिल्ला। घणा फूटरा।

उणां रै दो-तीन पगोथिया रै आंतरै अेक अठारैक बरस रो बाळक पीपै नै सुधारतो हो। उणा रै बगल टूटी-सी सिन्दूक उघाड़ी पड़ी ही, जिका में उणरा काटणै-पीटणै रा ओजार-पाती बे-तरतीब बिखर्या पड्या हा। अर अेक कानी उणरी साईकल खडी ही। जी पै पीपारा बीसूं ढ़कणां, ताळा, चीमटा, चाकू-छुरी नै बीजी घर-गिरस्त री चीजा लट्क्योड़ी ही। बो पट्टे रो पाजामो नै बुरसंट पैर्या हो। उणरा बाळ सूखा हा। बो आपणै काम माय पूरा मन सू लाग्योड़ो हो। अर इण हीज वास्तै वानै म्हारै आवणै री ठां नी पड़ी।

अबै मैं आवता ही रीस खार बोल्यो—"थानै कित्ती आवाज दी ही? पण

थे तौ सुणौ ही कोनी। अठै कांई करौ ? वे मतलब रा कामां मांय पीसा बिगाड़ौ हौ।"

—"थानै काईं पत्तौ धरां माय काई-काई चीजां री जरूरत पड़ै। था सू तौ मैं कैय'र हारगी कै…पीपै रौ ढ़कणौ टूटग्यौ, ऊंदरा (मूसा) चूण खावै है, पण थे हौ कै इण कान सुणी नै उण कान निकाळी।" अर सागै ही उणा इण वगत म्हारी लापरवाही री ग्रादतां रौ सबूत देवता थका बतायौ कै, टूटी सिन्दूक नी सुदरा'र ल्यावा सूं मूसा म्हारा कैई गाबा-लत्ता, पेन्ट-कोट नै साड़ी-जम्फरां मांय झरोका-वारी बणा दिया हा।

म्हारै इण निकम्मै पणै री यो खुलौ दरसाव सुण'र अबै म्हारै मूडै माथै ताळौ पड़्यौ, अर मैं बांया हाथ सूं चश्मौ उतार'र जीवणै हाथ सू ग्राख्यां मसळतौ ग्रापणी झैंप मिटावतौ ऊभौ रह्ग्यौ।

इणी वगत उणा टावरां म्हारै कानी देख'र हाथ जोड़'र नमस्ते करी अर म्हारै मूंडै कानी की गौर सू देख्यौ। की ताळ पछै वो वोल्यौ—"गरुजी ! म्हनै पिछाण्यौ" क नी ?"

ग्रा सुंण्या परान्त मैं म्हारै चश्मा नै ग्राख्यां रै लगा'र उण रै मूडै कानी की गौर सू देख'र वोल्यौ—"ना भाई ना। किस्यौ गांव है थारौ ?"

बौ वोल्यौ—"हड़ूमान वास है सा"।

ग्रा सुणता ही म्हारौ विगत रौ टैम ग्राख्यां सामी ग्रावणौ सरु व्हैग्यौ। जाणै हूं अेकर वठै ही पूग ग्यौ नै इस्कूल रै माय किलास पढ़ारयौ हूं। अर म्हारै सामी सै टावर वैठ्या भणरिया है। पग इण टाबर रौ मूंडौ की साफ-साफ नीं लखावै जिकौ अबै म्हारी सामी वैठ'र पीपौ सुधारतौ हौ। सोचू कांई ग्रो सरीर रै बदळाव रौ फरक तो नी है।

ग्रबे मैं कह्यौ—"कांई नाव है थारौ ?"

"मैं जंगळियौ हूं न साऽब…। विसन्या सिकलीगर ग्राळौ।" उणां म्हानै याद दिरायौ।

"ग्ररै" जगळियौ है कांई थू ?"—ग्रर मै ग्राख्या नै फाड'र ग्रचूम्बै सूं वीरै मूडै कानी देखतौ रैयग्यौ।

ग्रबै म्हानै याद ग्रायौ के स्कूल रै माय म्हारै गोदरेज रै ताळै री चावी कठै ही गुमगी ही।

सारा ही गाव री ताळ्या माग'र ताळौ खोलणै री कोमिस ग्रसफल हुगी। ग्रर उणी वगत किणी टावर म्हारै सामी इण "जंगळियां" नै ल्यार ऊभौ करता थका बतायौ कै…साऽब…ग्रो इण ताळै नै खोल सकै है। साच्याही वौ उण ताळै नै खोल'र वीजां सैं टावरा रै मांय गमेज सूं हरखतौ म्हारी ग्राख्या सामी ऊभौ हौ। इण रै पछ वो म्हारी कृपा रौ पात्र वण'र नेंड़ै ग्रावणै रौ प्रयत्न कर्‌यौ। उण

वगत वो चौथी जमात मांय भणतो हो। उणा म्हनैं केई चीजां जिकां-काई—रोपटो, दातळी, चीमटो, खुरपी नैं अटकळी अर घर-गिरस्ती री वीजी चीजा त्यार दी ही। अबैं म्हैं आगळयां री पोरा माथैं 'गिण' र हिसाब लगायो कै सात बरस सू को वेसी वगत होग्यो हो।

उणरो बाप विसन्यो सिकलीगर घणो भलो मिनख हो। गाव में अेकलो ही घर। सगळा गाव रा किसाना-जिजमाना रो लोह-लकड़ रो काम कर'र पेट भरतो।

जंगळिया री मा उण रैं अलावा तीन डीकरी छोड़'र भरपूर जुवानी मे रामजी रैं घरा पधारगी ही। अर उण री दादी-विसन्यारी मा। राम जाणैं किण ईछ्या नैं लै'र जीवै ही। वापड़ी करमा रा फळ भोगै ही। "बूढ़ी-फूस नैं आवी-भीत ही।" विसन्यो ब्याव नी कर्यो। बाळका नैं वो ही रोटी-टूक करतो, न्हावतो-धुवावतो नैं कपडा-लत्ता धोवतो। अर धणी जिजमाना रो काम करतो वो अलग। वी री इच्छा ही कै किणीज भात जगळियो पढ़ जावै तो वा गंगा नाह्या ज्यू हो जावै। अर उणारो विस्वास हो कै भण्या पछैं कठै न कठै जगळिया नैं नौकरी जरूर मिल जासी। नीं तो कठैं ही पीसा-टक्का दे-दिवार ही नौकरी दिलाऊला। अर इणीज वास्तैं वा सैं सकटा सूं जुझारु ज्यू झूझतो हो।

म्हनैं याद है कै उण वगत जगळियो किलास मांय सगळा टावरा सू हुस्यार हो। खिलाड़ी लम्बर एक रो। अर जिका काई दौड़तो तो उणारा पग हिरणा जू गुळाचा भरता। पून सू बाता करता निजर आवता। वातैं देखरं म्हारो मन करतो क "रामजी…जैं कदैस्…जंगळियो म्हारो टावर हो तो…"।

मैं सोचतो, ओ जरूर आगैं जार'र नाम कमावैला। अर इण बात री वगत-वगत माथै विसन्या सूं उणरी वड़ाई अणथक जुबान सूं करतो। कहतो—"विसन्या इण री पढ़ाई नी छूटणी चाई जैं। ओ जरूर थारैं कुळ रो नाव करसी।"

अर या सुण्या पछै विसन्या रा दात विहूणां पपोळ मूडा माथैं खुसी री विरखा ज्यू होवती निजर आवती। अर आख्या माय हरख रा आसू चिम-चिमावता दीखता। वो कहतो—"थारा पगा तळै काई वण जावै तो वड़ा भाग सा। म्हारी वणती लग तो इण री पूरी पढ़ाई कराऊला। आगैं इणरो भाग।"

वठै सू म्हारो गाव दूर हो। अर इण कारण सूं मैं दौड़-धूप कर'र म्हारो ट्रासफर अठै सैर मांय करा लियो हो। अबैं अठै री व्यस्त जिनगाणी अर लूण-तेल रा चक्करी माय सारा ही राग-रंग नैं वठै रा लोगा नैं भूलग्यो हो।

अबैं मैं सावचेत हो'र घराळी नैं चाय वणावण नैं कही अर वा वठै सू ऊठ'र रसोई माय टुरगी।

पछैं मैं प्रसंग नैं बदल'र वोल्यो—"तो जंगळिया, सुणा घरा काई हाल-चाल है। डोकरी (दादी) जीवैं क…। अर थारो काका री काई खैर-खबरा है।" अर सागै ही गाव रा बीजा लोगा रा हाल-चाल पूछ्या। जिका नैं हूं जाण तो हो।

सागै ही बोल्यौ—"अर तू आपणी पढ़ाई क्यू छोड़ दी ? म्हनै तो थासू घणी कर आस ही।"

अबै उणा गावरा लोगां रा हाल-चाल सुणाया। सागै ही आपरै घरा रा हाल सुणावतां थका बोल्यौ—"साऽब ! डोकरी तो जीवै है, पण मास रौ अचळ लोथड़ौ ही है। उठाया ऊठै नै सुवाया सोवै। अर लार लै वरस काका रा जीवणै आधै सरीर मे लकवौ व्हेग्यौ। थानै म्हारी माळी हालत तो छानी नी है।"

उणा निसकारौ काढ'र कहणौ सरु कर्‌यौ—"अबै म्हानै दूवड़ी नै दो साढ़ होर्‌यां हैं। जिया बापरी मरणौ र काळ रौ पडणौ। काकै र लकवै सू आमद रौ जरियौ अबै खतम व्हेग्यौ। दसवीं जमात पास कर्‌या पछै किया पढ़तौ। नौकरी रै वास्तै अणथक घूम्यौ, मिन्नता कीन्ही पण कठैई पार कोनी पड़ी। सै ठौर सिफारस नै मोटी रकम रौ राकस मूडौ फाड्‌या ऊभौ दीखतौ। सारा सुपना बगूड़ा जिया उठ्‌या हा वा चक्कर काट'र आभै सू जमी माथै धम्म सूं आ पड़्या। भूखै मरण आळी नौवत आपूगी। उधार कोई देवै नी। अबै कीकर पार पड़ै ?"

उणा आगै कैवणौ जारी रख्यौ—"साऽब दस वरसा ई सिक्षा खातर स्कूल री छत नीचै छाया में बैठ्‌या पछै म्हारौ डील इस्यौ निकस्यौ होग्यौ क तावडौ मैं मेहनत रौ काम देखता ही जीव कापै। पोथ्या में भण्योडी चन्द्रगुप्त नै अकबर सू लगार आजादीं री लड़ाई, सविधान रा मौलिक अधिकारा म्हारै कठै ही काम नी आया। सूरदास रा पद नै मीराबाई रा पद गाया सू म्हारी भूख कद ताई मिटती। कबीरदास रा चूटक्या न नूवी-जूनी प्रगतिशील विचार धारा वाळी कवितावा भी म्हारै-अछूत पणै नै हीन समझणै आळी समाज री निजर सूं रक्षा कौनी कर सकी। विज्ञान रा चमत्कारां आळी बाता म्हारौ तन नी ढक सकी। आगै काई पूछौ। गणित रौ ग्यान रिक्खीसाह रै ब्याज सामी कान पकड़'र हार मान ली। उणा री चाल "चक्कर-वधी" व्याज सूं कैई गुणा वत्ती ही अर अबै वा म्हारी पोखर आळी दड़ी (खेत) ताई पूग'र उणां नै हड़प लियौ है।"

उणा निस्कारौ कढ़'र कैवणौ जारी रख्यौ—"इण दस वरसा माय जै कांई पेट भरण आळी शिक्षा मिलती तो आ दिन क्यू देखणा पड़ता। अबै काका आळौ काम फेर सरु कर दियौ है। जी सू काई पेट भराई हो जावै है।"

मैं पूछी—"इण काम माय कित्ताक पइसा री मजूरी व्है जावै है ?" इण रै पछै, म्हारी इच्छा ही क कठै ही किणी दुकान माथै अठै शहर मे नौकरी दिवाय दू।

इणा पड़ूत्तर देवतां थका बतायौ'क वा इण काम सभाळ्या पछै घर खरच नै चालाया पछै एक हजार रुपिया बचा लिया है और दिल्ली सूं चार सौ रुपिया रा औजार भी ले आयो, वे अलग। सागै ई उणा विस्तार सू काम रो विवरण नै इण सू प्राप्त मजदूरी भी बताई। उणा कह्‌यो—आखै दिन काम कर'र पन्द्रह-बीस रिपिया ले'र नै घरा जावूं हूं नै कवू-कवार इण सूं भी वत्ती कमा लेऊं हूं।"

या सुण्या परान्त म्हारी उण रै प्रति सहानुभूति में उमड़्यो स्नेह फुर्र व्हेगयो हो। जिका वानै एकर फेरूं कठै ही किणी सेठ रै घरा वधक बणावण सारूं उतावळो होम नै उमट्यो हो।

अबै वा पीपा नै सुधार'र काम सूं निवड़्यो हो अर म्हारी घर आळी चा बणा ल्याई ही। मैं बोल्यो—"लै जगळिया चा पी।" अर उणां रै हाथ में ना-ना करता थका चाय री प्याली जबरां-जोरी थमा दियो। वो चाय पी'र न प्याला नै धोवण वास्तै पाणी माग्यो। मैं कह्यो रखदै भाया ! सब साफ हो जासी।" पण वो नी मान्यो।

मैं घरआळी नै पाणी रै वास्तै हेलो दियो—"अजी सुणो हो ! यानै कांई पीसा-टका तो देवो, जी सूं या आपणै घरा जावै। अर सागै ही एक लोट्यो पाणी भी लेत्या आज्यो।" या सुणता ही जंगळियो बोल्यो—"अजी सा'व थां सू कांई पीसा-टका लेवा ? थे तो म्हारा गुरु हो। शिक्षा देणियां, जी सू मिनख रो जलम सुधर जावै। म्हानै ठां नी पड़ती तो आ चूक हो जाती। म्हानै कित्तोक दोष लगतो। या राम जी म्हारै सागै भली करी।"

वो चाय री प्याली नै धो'र रखदी ही। म्हारै द्वारा जबरा-जोरी कर्‌या पछै भी उणां पीसा नी लिया हा। अबै वो अपणो सामान सभाळ'र साईकिल माथै धरतो हो। अर वारै मूडै पै घणो हरख नै संतोष हो।

उणा'रा विचार आज भी म्हारै प्रति नै इण शिक्षा रै प्रति किता'क ऊजळा नै उत्तम हा ? अर म्हानै उण टैम ओ पोथ्यां रो ज्ञान, नै आ शिक्षा कित्तीक भूंडी नै कूड़ लगै ही, जिण सू आदमी अपणो पेट तक नी भरसकै। अर इण सू कित्ताक जंगळिया रा भविस्या बिगड़्यो है। अर वे पशुआ सूं कूड़ जिन्दगी, हीन भावना सू भर्‌या मन नै लियां जिन्दगी नै ढोवै है। अर म्हारा जिस्या आधड़ा गुरु-मतर बांटणिया गुरु हाल ताई इण शिक्षा नै आज भी देवा हा।

म्हारो मन एक'र फेर इण अणचाही पीड़ा सूं भर्‌यो हो। वो जावता थका भी म्हारी आख्या सामी इण सिक्षा अर सिक्षण-पद्धति माथै एक प्रश्न चिह्न बणा'र म्हानै सोचण सारू छोड़ग्यो हो। म्हानै अपणै सू अर इण काम सू नफरतसी होगी, पण कियां करा ? थे कांई बता सको तो बोलो।

अबै मैं बाठो वण'र ऊवो हो अर वो म्हारी आंख्या सामी एक'र फेर स्वाभिमान सू सिर उठायां आवाज देतो साईकिल पकड़्या जावै हो। उणा री आवाज म्हारै काना मे हो'र नै हिये में उतरै ही···ढक्कण···लगवाल्यो, ताळा सुधराल्यो, ···चाकूल्यो···चीमटा···छुरी···ल्यो।

□□

लघु कथा

□

उदयवीर शर्मा

एक तपसीजी रौ आश्रम। भांत-भांत रा पेड़ खड्या, झुरमुट लागर्या। वा मे चिड़ियां चूंचाट करै। पाख-पंखेरू बेरोक-टोक मस्ती छाणै। सारै दिन भगता रै आणै-जाणै रौ तांतौ लाग्यो रैवै। मैं भी एक दिन सतसंग रौ आणद लेण नै गयौ। महात्माजी सतसंग मे बिराजर्या। भावा री ल्हैर जोरा पर चढरी। सारै वातावरण में रामजी रमर्या।

सतसंग में एक वडौ अफसर आयौ। आंख्या पर चसमौ, पैंट-कोट धार्या, मोटो डील, मुखड़ौ तेज, पण भगती सूं झुक्योड़ौ। भगती री चरचा चालू ही। बैं पूछ्यो, "महात्माजी, आप तौ पूग्योड़ा सत हो। मेरै मन मे कदै-कदै एक साथै घणेरा प्रश्न उठै—परमात्मा किसौ है, कठै विराजै, बैनै कुण देख्यौ, बी नै कोई कंइया देख सकै है?"

महात्माजी थोड़ी देर मून धार्या रैया। मुखड़ै पर गभीरता छायगी। सारौ वातावरण शान्त होयगौ। थोडी देर पछै, पलक खोलता वै मून तोड्यौ, "थे सरकारी अफसर हौ। कदे सरकार नै देखी काई? थारी सरकार किसी है? कठै विराजै। थे कुण नै बता सको कै या सरकार है। सरकार थारै मे भी है अर थांरै सूं वडै अर छोटै अफसर में भी है। सरकार सारै फैल्योड़ी है। इंयाल ही भगवान है। इव थे विचारल्यो। स्याणा आदमी हौ।

यो प्रवचन सुण'र सै री आतमा में एक नुई चेतना जागी। या वात सैं रा चमकता मुखड़ा प्रगट करै हा।

□□

एक वगीचै में मस्ती सूं झूमतो-हीडतौ फूल आपरौ रोब गाठतो वोल्यौ, "अरे काटा, तूं म्हारै साथै रैय'र भी कोमलता धारण कोनी करी। थारै पर

म्हारी संगत रौ कोई असर कोनी पड़्यौ। थारौ मन तौ घणौ कठोर है।"

काटौ काई पड़ूत्तर देवतौ। चुप।

फूल बोलतौ रह्यौ, "म्हारी कोमळता उपवन री सोभा है, म्हारो सुरगो रूप सै नै मोहित करै। तूं म्हारै कनै रैय'र काई सीख्यौ ? तूं चुप क्यू है, क्यूं तौ जवाब दे।"

काटौ हळवा-सी बोल्यौ, "मैं तो थारी रखोप खातर हू। रखोप करणियै नै नरम हुया किया सरै ! हूं तो थारी सोभा बधावण मे सहायता करूं हूं।"

आ सुण, फूल घणै जोर सूं हँस्यो। पांखड़ी-पांखडी फरफराट करै लागी।

कांटौ फेरू चुप। फूल हसतौ रैयौ। खिलतौ रैयौ।

थोडी देर पछै तावडो तपण लाग्यौ। फूल मुरझावण लाग्यौ।

करड़ौ काटो अडिग भाव सू देखै हो। देखतां-देखतां फूल चुरमुर हुयग्यो, रंग-रूप रुळग्यो पण काटो अडिग।

□□

सही वंटवाड़ौ

□

सोहनलाल प्रजापति

वात वौळी जूनी है। पण है साची। एक गांव में एक सेठ हौ। सेठ घणौ स्याणौ हौ। चोखौ विणज करै हौ। वीरै चार वेटा हा। तीन वेटा कमाऊ हा अर एक वेटौ ऊत हौ। वाप री कैणी को मानतौ नी। वुरै आदम्या री सगत करतौ। सेठ घणौ धनवान हौ। माया मोकळी ही। जमीन-जायदाद, मैल-माळिया, हीरा-पन्ना, हाथी-घोड़ा, नौकर-चाकर मोकळा हा। गांव में सेठ मानीजतो हो। लोगा रै दु.ख-दरद में आड़ो आतौ। ओड़ी-विल्या, ब्याव-सादी अर काळ में लोगा री मदद करतो।

चौथे वेटै रा हाल-चाल देख'र सेठ दुःखी हौ। सेठ समझदार हौ। सौ वरस पूरणै ऊँ पैली आपरी वही में सम्पति री तीन वरावर पात्या करग्यौ। पण वेटा च्यार हा। सेठ रै मरणै रै वाद वेटा गाजै-वाजैऊँ चलावौ कर्‌यौ। चौथो वेटौ भी पाती रै लालच रै कारण आणनै लाग्यो। सेठ रा फूल गगाजी में वैवाया। आपरै कुटम्ब-कवीला नै भोजन करायौ। वामण-साम्यां नै भोजन करायौ। दान-दिखणा दी। मंगतै-भिखार्‌या नै दान दियौ। वारा दिन पूरा हुग्या। अव चारूं भाई धन-दौलत रौ वंटवारौ करणै खातर भेळा हुया। सेठां री वही खोल'र देखी। वही में तीन पात्यां री फाड़गती देख'र च्यारूं वेटा सोच मे पड़ग्या। भाई च्यार। पात्या तीन। आखिर ई वात रो फैसलो करणै वास्ते गाँव रै पंचा नै भेळा कर्‌या। ओ फैसलो सुणर्णं रै वास्ते गाँव रा लोग भेळा हुग्या।

पच भेळा हुआ। सेठ री वही में फाड़गती देखी-पढी। वेटा च्यार अर पाती तीन। पंचा विचार कर्‌यौ। वात तो टेढी है पण सेठ वड़ौ समझदार हौ। वोगो को होनी। सेठ समझ-वूझ'र पात्यां तीन लिखी है। आपाने फैसलौ सेठ री भावना मुजव करणौ है। आ आपगी परख है।

पंच विचार करता-करता हारग्या। कोई फैसलो दिमाग में को ग्रायोनी। ग्राखिर एक बूढो पंच उठ्यो। बीं सेठ रैं च्यारूं वेटां नैं बुला'र कयो, "सेठ री फाडगती रैं मुजब फैसलो तो म्है कर देस्यां पण थानैं च्यारां नैं मंजूर होणो चाइजै।" च्यारू बेटा हांमळ भर ली।

सै पंचा रैं मूंडै सामैं देखैहा क' कै फैसलो देवै। ग्रास-पास सैं गांवा रा लोग भी ग्रो ग्रजीव फैसलो सुणणैं खातर ग्रायग्या।

बूढो पंच बोल्यो, "एक बडी परात में 10 किलो गेहुवां रो ग्राटो ल्याग्रो।" कैवणैं री देर ही। ग्राटो ग्रायग्यो। वड़ी परात मे ग्राटो काठो-काठो गूद्यो। ग्राटैं री सेठ री मूरत वणाई। मूरत वणा'र गुवाड़ रैं वीच वाजोट पर खड़ी कर दीनी। बूढ़ो पच वोल्यो, "च्यारू वेटा ईं नैं कपड़ा पैराग्रो, ग्रो थांरो वाप है।" वड़ो वेटो भाग'र दरजी नैं वुला ल्यायो। दुकान में ऊँ कपडे रो थान ग्रायग्यो। दरजी नूंवा कपड़ा वणा'र पैराया। मूरत सेठ की-सी लागण लागी।

लोग इचरज ऊँ बूढ़े पच रैं मूडैं सामैं देखैं हा कै ग्रव कै फैसलो सुणावैं ? सेठ रैं च्यारू वेटा नै वुलाया। च्यारूं वेटा पंचां रैं सामनैं हाजिर हुया। वूढो पंच वोल्यो "ग्रा मूरत थारैं वाप री है। ग्राहीज मानो कै ग्रोया रो वाप है। ईं रैं जको सात जूत्या री मेलसी वी नैं पाती मिलसी। जको जूत्या री नीं मेलसी वीनैं धन में ऊँ पाती को मिलैनी ?" ग्रा वात कै'र बूढ़े पच पैली वडैं वेटैं नैं वुलायो। बडो वेटो वाप री मूरत नैं हाथ जोड'र वोल्यो, "पाती भलईं मत मिलो भरैं गुवाड़ में वाप रैं जूत्या री को मेलूनी। जीवता थका वाप रो ग्रणकयो को कर्योनी। सामनैं को देख्यो नी। ग्रव ग्रा वात किया हुवैं। वाप पाळ-पोस'र, पढ़ा-लिखा'र वड़ा कर्या। कमार खास्यां। वापूजी री मूरत पर हाथ को ऊठाऊनी।" दूसरे ग्रर तीसरैं वेटा भी पचाने ग्राही वात कही। हाथ जोड़'र एकानैं खड़ा हुग्या। ग्रवैं वारी चौथे वेटैरी। चौथो वेटो खाथो-खाथो ग्रायो। वीनैं ही पांती न मिलणैं रो ग्रदेशो हो। बूढो पच वोल्यो, "सुण, ग्रा थारैं वाप री मूरत है। ग्राहीज मान कै ग्रो थारो वाप है। इं रैं जको सात जूत्यांरी मेलसी वीनैं पाती मिलसी।"

चौथैं वेटैं पडूत्तर दियो, "थे सात री कैवो हो हूँ इक्कीस जूत्यारी धर देस्यू। जीवता थका ही हूँ लठ ले'र सामू हुग्यो हो ग्रा तो ग्राटे री मूरत है। ईं रैं कै लागै है।" ग्रा वात कै'र वी फड़ा-फड़ इक्कीस जूत्या री मेल दी।

पचा सर्वसम्मति सू फैसलो दियो, "सेठ स्याणा हा। या ग्रापरी फाड़गती मे साची बात लिखी है। छोटो वेटो सेठ रो बेटो वणणैंरो हकदार कोनी। ऐ तीन्यू पात्यां तीनू वडैं बेटा री है। छोटो वेटो पाती रो हकदार कोनी। तीनू वडा वेटा सम्पति रो बटवाडो कर लेवे।"

पंचा रैं फैसलै री सगला लोगा सराहना कीनी। लोगां रैं मूंडैऊं नीसरी कै "पचा रैं मूडैं परमेसर वोलैं।" □□

कुंवर साब

□

छाजूलाल जांगिड़

साढी आठ बजण में आयगी, पण इब ताणी कुंवर साब खूटी ताण्या सूत्या पड़्या है। गुड्डी तीन बेर ऊपर जाय'र भाइ साब नैं जगायाई, पण कुंवर साब री कुम्भकरणी नीद रौ तातौ नी तूट्यौ। वकीलाणी वड़-बड़टा कर धापी। कुवर साब रैं सामी हाथा-जोड़ी कर धापी, पण कुवर साब रैं माथैं जू नी रैंगी। वकीलाणी रौ बस नीं चालै। बा आपरी पाड़ोसण नैं कहवौ करैं—बेटा काई जलभिया, जी घुटणी रैं मांय आयग्यौ। वयू कह नी सका। जरा-सी ऊची-नीच बात कैवा तौ कुवर साब कुत्तारी तरिया कंठ पकड़वानैं त्यार रहवौ करैं। जंवाई की तरिया खातरदारी करणी पड़ै।

दिन में सैर-सपाटा करवौ करै। भेजा कॉलेज अर लाधै स्टेशन रैं पलेट फार्म पर। छोरा रैं झुण्ड माय अमर बकरा री तरियां दूर सैं ही दिखवौ करैं। रात नै सिनेमा में नीद गमावै। डिस्को फिलम काई चाली। अेक महीना सैं भूकलो रोळा मचा राख्या है। रामा री पढ़ाई काई चाली। खोनास चालग्यो। फैशन रैं माय छोरा घर तबाह् कर दिया।

विचारा वकील जी कोर्ट रैं मांय भूठी साची जिरह् कर आवैं। माथौ सूनौ हो ज्यावैं। कुवर साब रौ ओलभौ सुण कर चक्कर आवण लाग ज्यावैं। कदै-कदै वकील जी कैह् बैठे, "काई बतावा घर रैं माय साप पाळ लियौ। ओर कोई होवै तो इ बार कोर्ट री हवा खुवा द्यू। सीकचा रैं माय घरा द्यू। पण आगै-पाछै री बात सोचणी पड़ै।" इबकै कुंवर साब अेक ठाडी-सी अकड़ाई तोड़ी अर बैटरी रा बल्ब की तरिया आंख्या नै दो च्यार बार भत्रभवाई। वाळा पर दो-चार बेर हाथ फेर कर कागसिया नै बाळा में घुमाण लाग्या। बाळा में चटड-चटड़ री आवाज कै सागै बास्ते उपड़वा लागी। बेबी नैं अेक लाम्बी-सी आवाज मारी।

वकीलाणी घर-थर, हर-हर करती वेवी रै हाथ चाय रो गिलास ऊपर भेज्यो। कुवर साव शिवजी री तरियां चाय रो गिलास दो-च्यार भटकां रै मांय खाली कर दियो। इवं चड्डी पैर्‌यां निरत सो करवा लाग्या। बस डमरू री कमी ही। पैंट पैर कर तीन आगळ ऊची एडी आळा बूट पैर्‌या खट-खट करतां नीचै उतरिया। सूटी रै ऊपर काळै नाग-सो लटकतो कमर पेटी कमर पर बाध्यो। वड़ा डोबला आळो चश्मो आंख्यां पर टाग्यो। कमर पेटा रै ऊपर पिस्तौल आळा-सा कारतूस लगा राख्या हा। एक लाम्बो सो छुरो भी तंगड़ पटिया रै सागै टांग्यो। कुवर साव रा तौर पूरा डाकू री भांत लागै। इवं लोका घोडा रै माथै चढ़ कर घर आळा पर ग्रेक डाट मारी—"मैं एक बार बाजार जाकर आता हूं। खाना बन जाना चाहिए। मुझे कॉलिज जाना है।"

वकीलाणी चोका रै माय आमूड़ा ढळका रई ही। मन रै मांय विचार होर्‌यो ही। मेरो जायोड़ो तो ऊत ग्यो। इ मंहगाई रा जमाना मे कुवर साव नै खावण नै माल-मलीदा चायै, कठैसैं आवे। दो-च्यार साल सैं लगता ही काळ पड़ रिया है। वकीलजी री वकीलाई ठण्डी पडगी। मुकदमा कम होग्या। बिचारा गाह्का रा गोज्या फाडवो करै है। पण तो भी पार नीं पड़ै। घर रै मांय जंवाई पैदा होग्यो। इवं ई सैं पिण्डो भी नी छूटै। आज कुवर साव फेल होता दूसरी साल है। तीन किलासा मे तो फेल होयग्या। इरै सागै रा छोरा एम०ए० करकै निकळग्या। नौकरी करण लाग्या। सपूत रा पग तो पालणै पिछाणी जै। ई थोडी-सी जिणगानी मे कुंवर साव सारा काम कर लिया। दारू पीणो सीख्यो। गांजारी चिलम रो घूट रै माय साफ कर देवै। पूरो कूडा पथी होर्‌यो व्है। मिनख रै मारण आळो पिराछत ईंरै माथै लागणो बाकी ग्रौर रहियो है। आगलै दिन अेक छोरै रै पेट रै माय छुरो मार दियो। बिचारा वकीलजी हाथा-जोड़ी करकै पिंड छुडायो। वी छोरै रै इलाज मे अेक हजार रो न्यूतो आयो।

वकीलाणी रै मन में प्रसव री पीडा याद आयगी। वा कितरी दुःख पाई ही। आधी रात तांणी भगवान सै हाथ जोड़ अरदास करती रही। कुवर- साव रा जलम पर घणो उछव होयो। सोनै रो थाल वाज्यो। हजारा आदमिया नै गोठ दी। चोखा-चोखा फळ-फूल माल-मलीदा खुवाय कुवर साव नै वड़ो करियो। आज म्हारा धोळा दूध नै यो कपूत काळो कर दियो। वकीलाणी री कूख ऊत गई। इसा कुवर साव ईं जमाना रै माय घर-घर में पैदा होवण लाग्या।

इग कुवर साव रै कारणै जण-जीवण खतरै में पड़्यो। भाण-बेटी री रखपत सावळ नी हो सकै। ईं देश रा कुवर साव कोरै वस में आवै। मा-बाप अर कॉलेज रा मास्टर हाथा-जोड़ी सै आपरो काम चलावै है। पुलिस भी इण कुवर सावां सैं घबरावै है। सरकार रै नाका में भी दम कर राख्यो है। जिण दिन इणा कुवर सावा रै नाका रै माय नाथ घलैली, वी दिन ईं देश रो सूंघो दिन आवैलो। □ □

वडापणौ

□

दीपचन्द सुथार

लालू श्रर कालू श्रेक ईज क्लास रा संपाठी। घणौ हेत। श्रेक दांत रोटी टूटै। घर री इस्थति श्रेक दूजै सूं बिपरीत। गांव रा लोग-बाग इचरज सागै कदै ई-कदै ई श्रा कावत केवता रै—"कठै राजा भोज श्रर कठै गंगू तेली। पण प्रेम रंग-रूप श्रर पईसा नी देखै। सीधौ हियै नै ईज छूवै जठै पल-पल श्राणंद री बिरखा व्है, इछावां फलै-फूलै तो कदैयी पतझड़ रै पानां ज्यूं टूटै।

काळू चौत ईज सीदो-सादो, ईमानदार श्रर सतवादी। श्रर लालू बगत री श्रोट लेय'र चालणियो। जिण री पलड़ौ भारी श्रर श्रापरो बाटियो सिकतौ दीखै उठी नै ईज मुड़ जावै। काळू इण परकती सूं दुखी व्है'र रीति-नीति री मोकळी बाता केवै, पण चीकणै घड़ै मायै पाणी री बूंद टिकै तो वी रै हिवड़ै मांय बात टिकै। फेर भी काळू ईं बेलीपै नै निभावै। श्रेक दिन दोनूं में किणी बात मायै बैस-बाजी व्हैगी श्रर इणी बात श्रागै जाय'र श्रेड़ौ मोड़ लियो कै कातियो-पीजियो कपास व्हैग्यो।

गाव री शिक्षा पूरी कर दोनूं कालेज माय पढ़ण लागा। काळू हर बरस पैलै नम्बर सूं पास व्है तो गियो तो लालू ऊळफैळ चालण सूं दोय वार फेल व्हैग्यो। श्राखिर परेसान व्हैय'र पढ़ाई छोड़णी पड़ी। लालू ईं पछै घरेलू काम-काज करण लागो।

श्रगला दिन श्रेक सरीसा नी व्है। चौपार माय श्रेड़ौ तोटो लागो जिण सूं लालू नै परिवार रै भरण-पोषण वास्ते नौकरी करणी पड़ी। इण बिचाळै जीवण माय कई उतार-चढ़ाव श्राया जिण सूं वो काठौ कायो व्है'र बदळो सारूं मोकळी भूत्यां फाड़ दी। पीड़्यां माय पाणी पड़ग्यो पण की कारी नी लागी। छेकड़ मांतो पाय'र वो काळू कनै पूगो। वो वीं दिनां ईं रै मंकमेरो ईज मोटो प्रोफेसर

हो। काळू लालू नै तीन-च्यार दिनां तांई प्रापरै कनै राख्यो। सांतरी मान-मनवार करी। ईं पछै प्रापरै कुवै इज काळू लगाय दियो। कालू री प्रा लायकी प्रर वडापणो देख'र लालू मन मांय ज्यूं-ज्यूं पछतावतो त्यूं-त्यू रीति-नीति री वाता हिवड़ै मांय धर करती थकी हमेस नुंवो मारग वतावती रैवती।

□□

पर्सनल फाइल

☐

त्रिलोक गोयल

देवता तौ देवता हीज है, जे ब्यां मे दूजा लख चौरासी जीवां सूं क्यू वताई न हुवै तौ पछै देवता कैवै कुण ? देवता जणां वूढा-बीमार ही न हुवै तौ फेर सुरगवासी होवा री तौ सुवाल ही कठै ? ग्रै ग्रमर्‌या नाम सूं देवता, नै काम सूं लेवता है।

देवतावां रा केई दळ है। ग्रामें ग्रापस में कम ही वर्णं है। कदे काण कोई भेळी ग्रर जवरी ग्राफत ग्राया, मतलव री टेम एक हो जावै, आ बात बोजी है। कोई रात री राजा, कोई दिन रो राजा, जळ, ग्रगन, पून, घन सैं का हो स्वामी देवता है। ग्रां राजावां रा महाराजा है—देवराज इन्दर ! कान काढ्यां कुग्रा भरे ग्रां ग्रतरा दई-देवतावा में बिरमा, विष्णु, महेश ग्रै तिरदेव सैं सूं सुपर, ग्रळगा ग्रर माथ्या है।

कहुणगत है 'ठाली वैठी डूमणी गावै ताळ वेताळ'। एक वार कीं खास-खास सपडपंच देव भेळा हो'र एक नवादौ ही मंच वणायौ, पड़पंच रच्यौ, सुरपति इन्दर नैं ग्रागूच कर'र विष्णु जी कनै वैकुण्ठ-धाम पूग्या, ग्ररदास करी—"भगवन ! ग्राप तौ पुरातन-पुरुष हौ, लिछमी जी सागै ब्याव कर्‌यां ग्रापनै वोळा वरस वीतगा, ई लम्वा ग्ररसा में केई पुराणा सम्वन्ध टूट गया, नुंवा जुड़ग्या। ग्राज री पीढ़ी रा नव जुग्रान म्हाका टावर-टोळी ग्राये दिन ही माथौ उठावै, मोसा वोलै कै म्हे तौ विष्णु ग्रंकल री जान में गया ही नी, खीर खांवणी तो दूर ब्यां का सासरा रौ चा को चुळौ ही न पीयौ, म्हे उण नै कीकर माना ? क्यूं मानां ? म्हा सगळां री ग्रा डिमाण्ड है कै एक बार ग्राप ग्रोजूं ब्याव री रिफ्रेसर-कोर्स कर-ल्यो तौ मजौ ग्रा जावै। जठै म्हानैं जीमणै-जूठणै रो ग्रर टावरा ने डिस्को रो ग्रानन्द ग्रासी वठै ग्रापनै भी फेरा में दियोड़ा वचना रौ रीविजन हो जासी। ग्राप

एक्टिग-एक्सपर्ट हौ ही, लिछमी जी नैं पीर पुगार भट बीद बण जाम्रो'र फट घोडी पै चढ जाम्रो। म्रापरै मुसरे समदर जी रे क्यूं कुमी तो है ही नीं, दुवारा ही गहरौ दायजौ देसी।

दूबळै घर ब्या हाळी तो क्यूं बात ई ही नी। बीद बणण री हूंस किण नै नी म्रावै ? विष्णु जी रै हिवडे लाडू फूटवा लाग्या, पण ऊपर सूं देवतावां पै अेसान जतातां बोल्या—"जसी था सगला री मरजी, पण म्राप म्रा सूल्याणी जाणौ हौ कै ब्याव म्रर घर मांड्या ही ठा पड़े। म्रापणी पोजीसन सारूं सगळी ही व्यवस्थावां खूब ठाठ-बाट री होणी चावै। सो क्यूं था ही लोगां ने संभाळणौ है, बीद म्रापरे ब्याव रौ काम खुद ही कीया करे।"

हाई कमान सू मजूरी मिळतां ही सगळा राजी हो'र जोर-शोर सू त्यारी मे लागग्या ! छट्या-छटाया नेता टाइप रा देवतावां री एक म्रर्जेण्ट कैमरा-मीटिंग बैठी। ई बैठक मे म्रायोजन री म्राखी रूप-रेखा बणाणी ही, न ऊं ने म्रमल में ल्यावा नी, न्यारी-न्यारी व्यवस्थावा, न्यारा-न्यारा महारथ्यां रै जिम्मे करणी

जावै ? जान मे जावा रौ मोह त्यागवा तौ एक ही त्यार न हौ ! म्राखिर देव गुरु विस्पत जी एक सुझाव राख्यौ क कीया-जीया ऊंचो-नीचौ ले'र गजानन जी नैं पोटाम्रो। गोवर-गणेस ब्यां नैं ही बणायौ जा सकै है। गुरुदेव री बात रौ चारूं कानी सू ही समर्थन व्हियौ। एक बोल्यौ—"बीया भी गणेश्या नैं जान में लेचालणो ठीक नी है। म्रोछी पीड्या सू डगमग-डगमग डोलर हीडा ज्यूं चालै, नगारा सी तूद हालै, हाथी हाळी सूड हालै म्रर बीजणी-सा कानड़ा हालै, म्रस्या जोकर नै जान मे ले जार सै री भद् उडवाणी है के ?" बीजौ विरोधी बोल्यौ—"ठा नी म्रौ मरभुख्यौ छपना काळ में जलम्यौ है के ? ई भुक्खड नै सवामण मूग-चावल तो कलेवा सिरावण में, भगोला भर्या तिलकूटा चूरमा भोग मे म्रर पराता लाडू घाणी दुपेरी मे चावे, गुळरी म्राखी भेली ईयां चूखतौ रै जाणं म्राज रा टावर टीगर चिंगम-चाकलेट। म्रस्या खाऊडा नै लर लिया जडा-मूळ सूं कटसी क रहमी ? जान रौ स्टेण्डर्ड जनेत्यां सूं ही म्रांक्यौ जावै है, ई रै गया काठी ही किरकिरी, हो जाणी है, ब्याई-सगा ताल्या वजा-बजार हास सी, ब्याणा टिगल्या करती गाळ्या गासी।"

म्या भेळी म्या। गुरु जी रौ प्रस्ताव सर्व-सम्मति सूं पारित होग्यौ। चार भुजा हाळा विष्णु जी नैं ही म्रौ करडौ कारज सूप्यौ गयौ कै म्राप रूबरू जार ब्या नैं ब्याव रौ कारड भी देम्रो'र नूतणं र साथ-साथ मोहिनी मुस्कान मे उळभा'र क्यू म्रस्यौ खटकौ फिट करजो कै ई शुभ कारज में पधारै ही नीं, घरा-धरां री रुखाळी करतौ रै।

सै ने सुदर्सण चक्कर मे फांसवाळा विष्णु जी जनमत रा चक्कर में फँसगा, आपरै गरुड़ स्कूटर पै फर्राटा करता रणत भँवर गढ पूग्या ! सगळी बाता सावळ समझ'र गजानन जी नै घणै-घणै मांन सू कूकू-पतरी दी, चावल-सुपारी झिलाया, पछै चाय रा सुरड़का लगाता आपरी परेसानी बताई कै आज-काल बखत घणौ खोटौ है, जे सगळा ही जान में चल्या चालसी, अर लारे सू कोई सेसू सो क्यूं सोर-सूत'र ले जासी तो ईं मूगाडा में सै के भुआजी फिर जाणा है। सांप गया लीकटी पीटता रौ पछै पड्यौ के है ? थाणा में रपट लिखास्यां तो ऊदली री लेर दायजौ पुलिस में लाग जासी।

आप सू के छाणौ है, अै जतरा भी दई-देवता है क, माटा खावा'र सोवा रा काम रा हीज है, आं में एक ही अस्यौ माई को लाल नी है जो सावल चौकसी राख सके। इब आप ही बताओ करा तो करां के ?

भोळा भण्डारी विद्याक जी विष्णु जी रै माया-जाळ में आयग्या। बोल्या— "म्हारै छता आप भली फिकर करी, आप तौ नचीता हो'र परणवा पधारो मैं अर म्हारी सित्या सो क्यूं संभाळ लेस्यां। बींया भी रत्नाकर राजस्थान सू अलगौ ही पड़ै, भारी डील होवा सू चालणौ-हालणौ भी म्हारे सू दोरो ही हुवै, आ जन-सेवा कर्‌यां मनै जान में जाणै सूं भी बेसी हरख होसी।"

आंधो कांई चावै दो आंख्यां ! विष्णु जी मुळक'र वांरी घणी-घणी सरावणा करी, अर पिछतावणो-सो परगट करता बोल्या—"हा, आप बिना बरात अलूणी लागसी, आपने छोडणे रो हिवड़ै में वौळौ दुख है पण बेवसी कांई न करावै ? आप जंडा त्यागी, परोपकारी विरळा ही लाधै।"

ईयां फूंकणा मे फुल हवा भर'र, सहद लगा'र चाटवा नै धिनवाद दे'र विष्णु जी पाछा सिधार्‌या।

भांत-भांत रा जानी, भांत-भांत रा वाहन, भांत-भांत रा गाजा-बाजा सज-धज'र घूम-धड़ाका सू बरात चढ़ी। अठी नै बरात ढूकी'र वठी नै देव रिसि नारद, गोटक्या लडावा में बिसारद, चुपकै सू जान सू छूमंतर हो'र, खड़ाऊ खड़काता, तन्दूरी बजाता, चोटी रौ एरियल हिलाता गजानन जी कनै पूग'र—नारायण ! नारायण !! करी। रामा-स्यामा कर'र गणेस जी इचरज सू बूझ्यौ—"आप तौ विष्णु जी रा खासम-खास पी० ए०, खास चमचा, खास लाडला हौ, आप जान में कोकर नी गया ? नारद जी ओजूं नारायण ! नारायण !! करी, रहस्यमयी मुस्कान मुळक्या बोल्या, "हूं आपरै खातर ही जान सू टल'र, छानै-सी आयौ हूं। कोई सागै हुवौ, अन्याव, छळ, कपट म्हारै सूं सहणी न आवै। बींयां होवा नै तौ आप गौरा-पारवती रा मैल सूं ही बण्योड़ा हौ पण आपरै हिरदे नांव ही मैल नी, अ'र अै बारे सूं ऊजळा देवता माय सूं काठा ही मैल अरर काळूस सू भर्‌या थका है, आप आं खोडलां नै न जाणौ।" अतरी कह'र गणपति रा छाजला सा

कानां में फुस-फुसा'र गणतंत्र री आखौ षड्यंत्र खोल दियो। कैमरा-मीटिंग री गोपनीय बाता री वीडियो दिखा'र भण्डो फोड़ दियो।

इवल्यो ! गजानन जी नै वीर चढ़गा। धांटी हिला'र बोल्या, "तो आ बात है ? जे वा'र आंनै नानी याद न अणा द्यूं तो पिरलयकारी महादेव जी रो पूत नी।" ईंया कह्'र रीस सू लाल-ताता हो'र वै आवेस सूं बैल बजाई खर्र"'खर्र"'। बात की बात में एल० डी० सी०, यू० डी० सी०, थर्ड क्लास फोर्थ क्लास, सगळा ही ऊदरा भेळा हुयग्या। गणेस जी वां नै हुकम दियो, "वार की वार आखा लोक-लोकान्तरा में जाओ। भीता, तलघर, पोलरो चावै रैका, दराजा, अलमार्यां कुतरो। जीयां भी हो-हेर सोध'र हर दई-देवता री पर्सनल फाइला मूडा में दाब दूब'र अठै लियाओ।"

मूसा सरणाटै भाग्या !

थिरमज्ञानी नारद जी आगे री सोच्यूं समझग्या, पाणी में लाय लगा'र बठै सू बहीर हुयग्या।

जान तौ जनवासै री चाल चालै ही अर नारद जी हा हेलीकॉप्टर पै। जान रै नेड़ै ही ओट मे उतर, बरात्यां में ईंया रळाया, जाणै पाणी-पेसाव, पान-तमाखू मिलग्या हुवै। चोर नै कैवै घुस अ'र कूतरा नै कैवै भुस, ईं नारद-विद्या रा रचिता नारद जी आज री ताजा खबर रै नाव पै गैलै चालता-चालतां ही 'स्वर्ग-समाचार' री केई प्रत्यां जनेत्यां मे बांट दी। छापा में हेड लाइन्स मे मोटा-मोटा आखरा मे मण्ड्यौ हो "चौवेजी छब्बे जी होवा गया दुब्बै जी रह्ग्या ! देवतावां रै लेणा रा देणा पडग्या !! विष्णु जी रै ब्याव में गजानन जी रूसगा !!!" हेटै लिख्यौ हो "विश्वस्त सूत्रां सूं ठा पड़ी है कै पहरायत वणा'र पाछे छोड्योड़ा विधायक विणायक जी सगला जान्यां री पर्सनल-फाइला पार करार आपरै कब्जै कर ली है, इब सैं रा लाल फीता खुलसी, भला भलां रा पड़दा उघड़सी।"

जान में खळबळी माचगी। सगला रा पेट रो पाणी हालग्यौ, गलै मे आयगी। आ कोई सुपनै मे ही न चीती ही क ईंया चाणचक ही रंग में भंग पड़ जावैलो। दैड मे गी जान'र बेरा में गयो जीमबौ-जूंठबौ। बरात ज्यूं की त्यूं अध गैला सूं ही पाछी बावडी, सूधी गणेसपुरी पूगी। देख्यौ-मूंडा में फाइलां दाब्या कानी-कानी सू ऊदरा तिरमिर-तिरमिर भाग्या आरया है, कोठा में कागदा रा ढिगला लाग रया है, बारै दवात-कलम लिया गजानन जी एक-एक रा खरीता खोल रया है।

बीद'र बराती सगळा ही त्राहिमाम् ! त्राहिमाम् !! करता गणेस जी रा चरणां मे पड़गा, माफी मांगी, नाक-माथा रगड़्या, स्तुत्यां गाई, भेट पूजा चढ़ाई। बोल्या—"हे रिध-सिध रा दाता, जण-जण रा भाग्य विधाता ! जीयां टाबरा री पोथी री कहाणी रा राकस रा पिराण सात समदर पार भूता री हेली मे बंद हरियल सुआ मे अटक्या हुवै है, बीयां ही म्हाका जीव आं फाइलां में

अटक्योड़ा है। जे म्हाकी करतूतां जनता-जनार्दन में परगट होगी तौ पछै कुण तौ म्हानै बोट देसी'र कुण पूजसी-मानसी। ग्रै जाघा तो ढकी-ढूमी रै जतरी ही चोखी है महाराज ! नीं तो सैं नागड़ा व्है जासी, कुरस्यां उलट जासी। आपरी किरपा सूं गूंगा बातूनी व्है सकै है, पाँगला परबत चढ़ सकै है, आप हर तरा समरथ हो, चावै जो कर सको हो, म्हाका जमारा मना बिगाड़ो, लाज राखो, किरपा कराग्रो, नी तर म्हाका पेटा के लात पड़सी, टाबर रुल जासी" ईया कहता-कहता गळागळ हुयगा !

दीनबन्धु, करुणा सिन्धु गणेस जी फट पसीजग्या। सैं की फाइला ज्यूं की त्यू पाछी बगस दी। ब्या ने कोई री ग्रनरथ, ग्रहित तौ करणौ होनी, खाली आपरौ चेटक दिखाणौ हो, मजो चखाणौ हो जो चखा दियौ। हाजरा हजूर परतच्छ परचौ दे दियौ।

जाणै घडा पाणी पड्यौ हुवे ईंया सरम सू नाड नीची कर्‌यां विष्णु जी ग्रा घोषणा कीधी कै "हर छोटा-मोटा, चोखा-खोटा काम में सैं सू पैलां गजानन जी नै नूत जो, पूजजो। अफसर-अध्यापक, बाबू-चपरासी, मतरी-संतरी, नेता-अभिनेता चावै जो हो, जे महीना की महीना चौथ री बरत न कर सकै तौ सरधा सारूं मार्च, दिसम्बर, जनवरी, जुलाई री एक न एक चौथ राखणौ सैंती कम्पल-सरी है।" अतरी कह'र गणेस जी नै राजी करणै सारू पैला वानै रिसवत मे एक देसी'र एक विदेसी दो लुगाया परणाई, पछै वारी जै-जैकार करता वाने आपरा ब्याव री विंद्याकड़ौ वणा'र जान मे सैं सू आगे लेग्या, जणां जा'र वांरौ पुन-र्विवाह राजी-खुसी निमट्‌यौ।

हे विघन हरण, मंगल करण बिद्याक जी महाराज ! जीया ग्रां खुरापाती देवतावा रा गुन्ना माफ कर्‌या, संकट मोच्या, विष्णुजी रा विगड़्या कारज सार्‌या वीयां ही ईं कथा रा कहवाळा, सुणवाळा रा दिन फेरजो, वा री पर्सनल-फाइला कोई न बिगाड़ सकै, अतरी महर करजो।

□□

मूछाँ सूं डाढी ताँई

□

श्रीनन्दन चतुर्वेदी

वच्यार अर घणो अचंभो होव छ क जमानो वदल र काई को काई होतो जार्यो छ। वच्यार ढलाण पै ऊतररया छै। आपणो आन अर माल-मरजाद पैली मूछा प टकै छी अब मूछा सू सरक अर डाढी पै ऊतर र आगी। म्हूं बच्यारूं छू या दाढी सू भी नीचै न्ह ऊतर जावै। छाती ताई न्हं जा पूगै। लोगदणी बरत लेवा लाग्या छ क फलानो कारज सरै न्हं जदताई डाढी न्हं कटवाऊगो। सायद आगै टेक राखवा लागैगा क फलानो कारज सरवा सूं पैलो छाती का बाल न्हं मुंडाऊंगो। राजनेता का डाढी प्रकरन सू या सुरुवात होगी दीखै छै।

पैली मूछा को जमानो छो। मूछ्या पै वळ देवै छा। इतिहास साखी छै। राजाधिराज छत्तरपती पिरथीराज चौहान का दरबार मै सासरा का सोलकी राजपूत सरदार बराजरया छा। सभाव छो जो हाथ वाको मूछ पै पूग ग्यो अर लाग्यो वळ देवा। उत्तर भारत का विख्यात सूरमा काका कान्ह जी भी वराज्या छा। कान्ह जी सूं बरदास्त न्ह होई। वांकी तरवार चाली र खट सू सोलकी सरदार को माथो कट अर धरती पै आन पड्यो। खून का फव्वारा छूट ग्या। फेर वै वोल्या, "कुण की मजाल छै जो चोहाणा कै सामै बैठ र मूछा पै हाथ मेळै!"

मूछ न वड़ा मोटा सारा वखेड़ा ऊपजाया छै—घणा-घणा उपद्रव कर्या छै। महाराणा प्रताप मूछ को सवाल राजा मानसिंह जी सूं मळती टेम न्हं लाता तो हळदी घाटी की राड टळ जाती। पण सवाल तो मूछ ऊंची राखवा को छो न! राठौड़ पिरथीराज नै भणत माड र महाराणा जी तणी भेजी क थे बताओ म्हूं म्हारी मूछ प हाथ मेलू क डोलडा प करद पटकलूं। अर राणा जी न जवाब भेज्यो क थे मूछां मोडताइ र्यो, म्हूं लोई की नदी वहा दूगो। राजस्थानी का कवि कन्हैयालाल जी सेठिया न तो ई प्रसग की कल्पना भी करलीनी ही। वा न माड़ी छ—"राखो ये मूंछां मोड़्योड़ी, लोहू री नदी बहाद्यूला।"

या मूछ की चरचा छी। अगाडी का लोग मूच्छ्यां की ई बात करै छा। आज का लोग डाढी दांव पै लगावै छ। मन्नै घणो बच्यार आवै छै। आदमी न नीचै सूं ऊपर आडी बधनौ चावै छो। ऊ पीदै सूं ऊपरयाड़ी चालतो तो चोखी होती। मूछ्या सूं ऊपर नाक का बाळां की बात करतो फेर आख्या की भंवा अर माथा का केसां न दाव पै लगातो; पण वस्यो न्हं हो यो। बच्यार पीदै री गत पार्या छ। "अघोगामी" होर्या छ। आदमी ऊपरै सू पीदै आडी ऊतर रयो छ। वात माड़ी है पण गलत कोणी। वो सामंती जमानो हो। उब जमानो सामंता सूं उतर अर जनता पै आग्यो छै। सामत तो मूंछ का ही 'प्रतिनिधि' छा, जनता का 'प्रतिनिधि' मूंछ की बात कस्या करै। ऊं म तो जनता को अपमान हो जावै। मूछ तो एक आगली-सी पतली होवै, डाढी घणी-झब्बर छोरा-सी होवै सो जनता का प्रतिनिधि न डाढी की ई वात सोहै।

परिस्थिति पै बच्यार अर राजनीति का बाबा अब डाढी दाव पै लगावा लाग्या छ। एक बाबा न कह दी कै म्हूं पुराणा प्रधानमन्त्री के खिलाफ चुनाव लडूंगा। जीतूं न्हं तो डाढी न्ह कटाऊं अर डाढी चुनाव ताई बंधी-बधती गी। बाबो चुनाव जीत्यो जद कटी। कटी तो पूरा आडम्बर सू देवी का मदर मे हवन-जग्न कर र। घणा बाजा बजवाया बाबा न डाढी कटाबा मे। सारा का सारा देस-विदेस का अखबार बाबा की डाढी चरचा सू रंगग्या। देस का आम आदमी डाढी चरचा का रस में डूबग्या।

डाढी का परसाद सूं सत्ता भी मिल जावै छै पण डाढी चैन सू बैठवा न देवै। बैठवा भी कसा दै ? जद एक आंगल की मूछ तकरार करा सकै तो डाढी जो मूछ सूं बीस गुणी स जादा भरी अर भारी होवै, कांई न्ह करवा सकै ? डाढी आपस मे लड़ा-लड़ा अर आई उबाई सत्ता हाथा सू कढवा दै छ।

म्हूं या बाबान की इज्जत करूं छूं। मा नं धन्नवाद दूं छूं। एक जमारा सू मूछा का हथकंडा सूं ठुकराई डाढी के भेई यां न ई उंकै जोग सममाण दिवायो छै। बाबो सत्ता सूं विरोध मे पूगग्यो तो भी म्हारो शेर डाढी ईं दखातो रयो। ऊन तो भूल'र भी मूछ की बात मूडा सूं न्हं काढी। ऊं नं फेर घोसणा कर दी कै म्हारी डाढी फेरूं रंग लावगी। बाबा न नुवो दल बना नाक्यो। ऊं कै साथ भी थोड़ा-घणा लोग-लुगाई जुड़ीग्या। डाढी न घणा लोगा क भेई दल बदलवा की प्रेरणा दे दी। देस डुबै तो डुबै, इज्जत खोटी हुवै तो हुवै; डाढी ण ऊं सू कांई लेवो देवो ? डाढी तो डाढी ई छ जो ऊपरै सू नीच चालै अर ऊ क साथ चालवा हाला न ऊपरै सूं पीदै आड़ी ई ऊतारै छै। डाढी नै घणा लोग मूछा सूं नीचै उतार्या अर वै राजी-राजी ऊतरग्या। वा भायड़ान ने बच्यार ई न नीपज्यो क वै पीदै आड़ी खसक ग्या छै। धन्न छै डाढी महात्तम।

असो लागवा लाग्यो क जसां राजनीति कोई बगीचो छ जीका पेड़ां की डालां

पँ वांदराई वादरा बैठ्या होव अर सारा ई मळ अर उछल कूदकर र्‌या होव। हाल म कोई ई पेड की डाल पँ छ तो ऊछल कुद्‌यो अर पैला रूखड़ा पँ पूगग्यो। सारो बगीचो उजाड़ होग्यो पण डाढी न कांई वच्यार न्हं करयो। वावो फेर डाढी मुंडावा भेई देवी का मंदर पँ चलीग्यो। डाढी फेरू कतरी गी। मूडवा हाला नाई न भारी दच्छना मली—घणी नोछावर होई। वावो डाढी को लोहो माणग्यो ऊ का चमत्कार को कायल होग्यो। ऊं न घोषणा करवादी क वैं डाढी का वाळां न कोई संगरहाळै न दान करबो चावै।

म्हारै भेई आज ताई याद छै। वात पराणी पड़गी पण म्हूं न्हं वसर्‌यो। धूम-धड़ाको माच्यो छो—घणा जोर सूं माच्यो छो। सारा अखवार वां दना वावा अर ऊंकी डाढी की वात करै छा। वा चरचा डाढी सूं मची क वावा सूं क आपणै आप ई, कैवो कठिण छै पण चरचा छी, या सचाई छ। चरचा धरती सूं आसमान ताईं माची छी। चरचा चाळी या वच्यार की वात अतनी कोइणै पण या छै क जो यो डाढी महात्तम यूं को यूं चालतो ग्यो तो सारो देस डाढ्यां ई डाढ्यां सूं भर जावैंगो। म्हारै भेई समाज में कम अर राजनीति की चरचा मे जादा रस आवै छै। लागै छै क अगाड़ी सूं कतनाई राजनेता वणा वात ई डाढी वढावा लाग ज्या छ। जठै देखो तठै डाढ्या ई डाढ्या दीखसी। हो सकै क आगै लोकतंतर ई डाढी-तंतर को नाम मळ जावै तो घणो मजो आवै। चारूं आडी डाढ्या ई डाढ्यां दीखवो करै। अतनी डाढ्यां होवै तो ऊछलकूद भी घणी वव जावै। ठीक भी छ, जद ताई ऊछलकूद न्हं होवै वा ताईं मजो भी न्हं आवै। जिनगाणी नीरस लागवा लागै छै।

वच्यार आगै चाल्यो छ क एक डाढी छी जी ने अतना वड़ा पैमाना पँ दल-वदल करवाद्या। घणी डाढ्या होवगी तो फेर कांई होवगो ? नत नुवा राजनीति का दळ वरसाती गडोलान (कैंचुआन) की नाईं ऊपजैगा अर जनमताईं मरता भी दीखैगा। फेर सरकारा ढाई वरस भी न्हं काढ़ पावैगी। सत्ता वदल अर दळ वदळ वाईसकोप की रील ताईं दीखगा। कस्यो मजारो दीखैगो, सोच भी न्हं सका।

डाढ़ी ना ओर करम जो छ सो छ। पण एक सका म्हारा भेजा में ऊपजी छै। मूछ पकड क चाटो कपोला पै चोखो पड़ै छै डाढी। खींच अर तो सूधो हाथ कपाळ पँ ई पूचैगो। पण या म्हारी चिंता को विसै कोनी। चिन्ता करूं तो हाल सारो पंजाव धर्‌यो छ। पंजावी डाढ्यां न कसो उपद्रव मचायो छ, जो प्रमाण छ कै डाढी सावधान रैवा लायक छै, ऊं सूं वच अर चालवो चोखो।

म्हूं फेरूं आपणी वात करूं छू। म्हारी चिंता आदमी कै नीचै उतरवा सूं—'अधोगामी' होवा सूं छ। म्हूं परम-पिता परमात्मा सूं दोई कर जोड़ विनम्र बिनती करूं छू क, "हे भगवान ! जो आदमी मूछ सूं डाढी ताईं ऊतर आयो ऊ नं ओर पीदे आड़ी मती ऊतरवा दीजै। □□

घोड़लौ

□

जगदीशचन्द्र नागर

जागां : तेजाजी रौ भाव श्रावा रौ थांन । थान रै ऊपरै भाटा की दो छोटी सिल्लावा, जिणमें सूं एक र् माथै तेजाजी रौ चेरौ खुदीयोडौ है । अर दूजी सिल्ला माथै जीभ लपलपातौ एक काळमदार स्याप मंड्योडो है । तेजाजी री मूरत ऊपर माळीपानौ लागीयोडौ है । मूरत रै साव सामीं एक दो धूपेड़ा, झाडौ देवा ताई थोड़ाक् मोरपख, नारेळ, गुड़, अर् एक बजनदार चिपियौ पड़्यौ है । भाव लेवा सारूं घोड़लौ गोड्यां ढाळ'र तेजाजी री मूरत रै पागती एक फाट्योड़ो बिछावणौ बिछाय'र बठ्यौ है। पाँच-सात जात्री··· ज्यामैं दो चार लुगायां भी है···आपरा दुख-दरद रौ न्याव करावा सारूं थान कै ऊपर'ई बैठा है । वणां री निजरा घोड़ला कानी जम्योड़ी है। सब जात्री भाव आवा री वाट देखरिया है। भाव लेवा सारू घोड़लौ खुद ही तेजाजी रै सामी जोत लेय रियौ है। जोत रै पागती घी रो दीवौ जुप रियौ है। काँसी री थाळी अर ढोल बाज रियौ है । जोत श्रावतैई घोड़लौ तेजाजी री मूरत रै सामी पड़्यौ बडौ चीमटौ उठाय'र आपरै मारवौ सरू करै··· भाव आयौ देख'र सब जात्री चुप-चाप व्है जावै···घोड़लौ थोड़ी देर ताईं हाका-हूक करै अर जोर'री गरदन हिलावै ।

एक जात्री : (औरत आपरा लूगड़ा रौ पल्लौ घोड़ला सामी पसारती थकी) पधारो म्हारा जामी···आवौ अन्दाता···थाँकी ही वाट देख रिया हां।

दूजौ जात्री : (आदमी माथा ऊपर सू आपरौ पोतियौ उतार'र घोड़ला के

धोक देवतो थको) ...जे हो महाराज ...घणी खम्मा कँवरा ...आप पधार्यां सारी सोभा होवसी ।

घोड़लो : (चुप होवतो थको)—हां भाई ...जातरू लोगां ...म्हूं—थांकी सब वाता सूण मेली हूं ...क् थे ईं दुनियां माय घणो अन्याव करै रिया हो । मु आज थानै ठिकाणै लगाय'र रेस्यूं ।

पेलो जात्री : अन्दाता ...आतरो कोप मती करो ...म्हें आपरी हाजरी माय हाजर हां ... अर् हाजर रेस्यां ...आप हुकम फरमावो ।

घोड़लो : अब पूंछ थनै काई पूछणो है ?

पेलो जात्री : थे तो अन्तर जामी हो अन्दाता ...घट-घट की जाणो हो ... म्हूं आपनै काई बताऊं ?

घोड़लो : तो सुण ! थारा बेटा की वहू घास तेल नाख'र बळगी ...अर बीकी हालत घणी खराब है ...जीस्यू तूं आयो है ।

पेलो जात्री : हां म्हारा जामी । आपरो केवणो तो वाजव है ।

घोड़लो : (जात्री पर रीस करतो थको । अर् चीमटो देखावतो थको)... थारै तूळी लगाऊ लोभीड़ा ...यूं थारै वेटा री वहू नै रोज डायज्या सारू तंग कर ...ओ किसा घर को न्याव रे । ...चाल भाग अठेऊं । म्हू थारो न्याव नी करू ।

पेलो जात्री : (डर'र हाथ जोड़तो थको) आपरो केवणो तो ठीक है ...म्हारा जामी ...पण अबकी बार तो आपनै म्हारी लाज राखणी पड़सी ... म्हें आसा लेय'र आयो हूं ... अबकै ठीक हुया पच्छै म्हूं वणनै डायज्या सारू कदेई तंग नी करू ।

घोड़लो : (जात्री नै समझावतो थको) देख भाई, यूं ब्याव-शादी जिस्या सुभ कामां नै सोदो समझ्या बैठो है ...डायज्या री आ रीत तो एक सामाजिक बुराई है ...अणसू तूं वर्वाद हो जासी । डायज्यो लेणो अर् देणो दोन्यू गुना है । अबकी बार तो म्हूं थारी वेटा री वहू नै बचा लेस्यूं अर् थारी भी लाज राख लेस्यू पण अण रै बाद थूं वणने डायजा सारू तंग करी है तो मू थारा कुटुम नं झटको बताय देस्यूं ।

पेलो जात्री : ई वार तो मनै डूबता नै बचाओ अन्दाता ...पछै म्हूं डायजा को नाम भी नीं ल्यूं ।

घोड़लो : (फेर हूक-हूक'र चीमटा री खांवतो थको) ...हां भाई, दूजा जात्री आवो ।

दूजो जात्री : (औरत) महाराज ...म्हूं म्हारा घर का धणी को अर् म्हारो जीव-तांई नुक्तो करवो चाऊं ...मनै हुकम फरमावो ।

घोड़लौ : (गुस्सा मांय गरजतौ थकौ)···कुण है रै थू··· ग्रायो है—जीवताईं नुक्तो करवाळी···उतर म्हारा थान ऊपर सू। नही तो म्हारो करोध खराब है। दुनियाँ माय केई लोगा कनै तो ओढ़वा पेरवा सारू कपड़ा ग्रर् दो टैम खावा सारू धान कोनी···ग्रर् ग्रा वापड़ी घणी-लुगायां रा जीवतांई नुक्ता कर'र सुरग जासी··· तूं कदेई सरग देख्यौ ए···किस्यौ क् है···लै चाल, मनै भी सुरग दिखा।

दूजौ जात्री : ग्रन्दाता ग्रापणा समाज रा केई रीति-रिवाज इस्या है ज्यानें ग्रापा टाळ नीं सकां।

घोड़लौ : (फेर गरजतौ थकौ) समाज पड़ग्यो चूला माय···ग्रर् थूं भी वी के साथ पडज्या···पण म्हूँ तो थनै जीवता थकां ग्रर् मर्या पछै भी नुक्ता करवा को हुकम नी द्यूं। ग्राज रौ टैम घणौ बदळग्यौ है···इणं सारूं ग्रापरी परिस्थित्या नें देख'र चालवौ जरूरी है। म्हारौ थानै ग्रोई हुकम है के जीवता ग्रर् मर्या पछै···बाको··· नुक्तौ या मिरतु भोज रै नाँव खरच करवौ एक सामाजिक बुराई है। थानै इणनै मिटावणौ चावै···घर-घर जाय'र इणै रै विपरीत जागरण री जोत जगावणी चावै···नी तो थे कदेई ऊंचा नी ग्रावोला···ग्रो म्हारौ सराप है।

दूजौ जात्री : ग्राछौ बापजी···घणी खम्भा ग्रन्दाता···ग्रापरौ हुकम सिर माथै।

घोड़लौ : *(तीजा जात्री नै पूछतौ थकौ)* हाँ भाई थारै काई है ?

तीसरौ जात्री : बाप जी ! म्हूँ जात रौ मुसळमान हूँ···ग्रण गाँव रा हिन्दू म्हारै सू घणौ दुरभाव राखै···म्हनै ग्रकेलौ देख'र सतावणौ चावै। काई उपाव करूं ?

घोड़लौ : (ग्रांख्याँ फाड़'र जोर सूं हूं-हूं करतौ थकौ)···काई कियौ··· म्हारा भाई लोग थारै साथै घणौ दुरभाव राखै !

तीसरौ जात्री : हाँ, हुकम।

घोड़लौ : (पास पड़्या चीमटा सूं ग्रापरै सरीर माथै लगातार जोरदार मारतौ थकौ ग्रर् रीस खांवतौ थकौ)···थे क्यू मनै कायौ करौ हौ ···ग्राज री ग्रणपढ़्यौड़ी दुनियाँ मांय कुण हिन्दू है···ग्रर् कुण मुसळमान···? ग्राप्पा सब एक भगवान री ग्रौलाद हाँ। राम भी वोई है ग्रर रहमान भी वोई है। फेर···कुतरां···थे क्यू भेदभाव राखो···क्यू थाका दूजी जात हाळा भाया सूं दुरभाव करौ हौ··· ग्रण लड़ाई माय थानै किसी मौज मिळै है···वा भी बतावौ ?

चौथौ जात्री : नही म्हारा जार्मी। हरेक ग्रादमी चाहे वो कोई भी जात स्यू मेळ

खातौ हुवै···ग्रापणो भाई है···ग्रापणी तरें वो भी इण देस रो नागरिक है।

घोड़लौ : तो जावौ ग्राज स्यूं थे यो नेमल्यौ क् थे भगड़ौ नी करौला··· भाईचारा रा सू रेस्यौ···ग्रर् जो नी रिया तो म्हारै कनै दूजौ उपाव भी है।···जिणस्यूं थे तुरता-तुरत लाईण पर ग्रास्यो। (पाचवां जात्री नै बतळावतौ-थकौ) हां भाई थारै काई न्याव कराणौ है··· जल्दी बोल?

पाँचवौ जात्री : बाप जी? ग्रव गाँव रा ऊँची जात हाळा मन कुग्रा परस्यू पाणी नी खीचवा देवै।···ग्रर नी भगवान रा मिन्दरां माय जावा देवै··· गाँव री गळ्या माय सूं निकळू जद् कोई तो कैवे ग्रो मेतर है··· इस्यू दूर र्‌यौ···ग्रर् कोई कैवे ग्रो भगी है···ग्रणनै गाँव सूं बारै काढो।

घोड़लौ : (फेर रीस करतौ थकौ) भारत री जनता तो जानवरा सूं भी गई बीती है।···दुनिया ग्राकासा मांय घर वणाणै री सोच री है···ग्रर् ग्रे धरती पर भी लडता-मरता नी धापै। गण्डकां···ग्रो छुग्राछूत रौ भेदभाव कद छोड़स्यौ···? काई मर्‌यां पछै छोड़स्यो। ग्ररे नीचां ··ग्रे सब थाका भाई ही है···थे ग्रो क्यूनी जाणो। थे जठाताई ग्रादमी नै ग्रादमी नी मानस्यौ·· थाका ग्रे मिन्दर-देवरा, भगवान ग्रर् पूजा-पाठ थाकै कोई काम नी ग्रावै।

एक जात्री : हाँ···ग्रन्दाता·· ग्रापरौ केवणो सांचो है।

घोड़लौ : तो जाग्रो···यानै थे ग्रादमी समभौला तो थाकै गांव माय सुख-शान्ति रैसी·· खूब बरसात होसी···घणो धान होसी···पण यांनै पूरौ मान देवणौ पड़सी। (दूजा जात्री कानी देखतौ थकौ)··· तू तो ग्रणं थान माथै ग्राज नूवोई नजर ग्रावै···थारे काई पूछणो है···?

जात्री : ग्रन्दाता · म्हूँ गरीबी सू घणौ तग ग्रायग्यौ·· म्हारै···पास जमी-जायदाद काई कोनी···परिवार रो गुजर-वसर करवा ताई कोई उपाव वताग्रौ?

घोड़ला : थू तो साव भोळोई दीखै रे। सरकार री तरफ सूं गरीव लोगां नै ग्रतरी जमी-जायदाद मिळै क्···काई बताऊं·· ग्राज ग्रणी गाँव माय एस० डी० ग्रो० साव पधारेला···थूं एक दरकास लिख'र थारी गरीबी री गाथा वणा नै सुणावजै···थनै जरूर जमी मिळसी··· पण भूठ मत वोलजै·· नहीं तो दुख पावैला।

जात्री : ग्राछो ग्रन्तर जामी···ग्राप कैयौ ज्यूई करस्यू।

घोड़लो : (सब जात्र्यां कानीं देखतौ थकी)···थे सब न्याव करबा चुक्या के ग्रौर कोई बाकी रियौ है···। (सब चुप रैवे) ग्ररे म्हारौ मूडो काई देखौ···कांई तो कैवौ ?

एक जात्री : सब जात्री ग्रापरा मन री बाता कैय चूक्या ग्रन्दाता ।

घोड़लो : तो म्हूँ म्हारै ठिकाणै जा रियौ हूँ ··एक वात फेर कैय द्यूं··· म्हारा हुकम की पूरी पाळणा व्हेणी चायै···नही तो···थे वर्बाद हो जास्यो···ग्रो म्हारौ सराप हे· । (धीरे-धीरे भोपा री भाव उतर जावै···कांसी री थाळी ग्रर् ढ़ोल भी बाजतो-बाजतो धीमौ पड़ जावै···भाव बन्द हुवतौ जाण'र सब जात्री ग्राप-ग्राप रै घरै जावै ।

□□

शक्ति पूजा रौ पर्व—नवरात्रि

☐

चन्द्रदान चारण

देवता ग्रर राकसां री लड़ाई। सुम्भ-निसुम्भ सू देवता हारग्या। वै देवी री स्तुति करण लाग्या:—

या देवी सर्व भूतेषु शक्ति रूपेण सस्थिता।
नमस्तस्यै। नमस्तस्यै। नमस्तस्यै नमो नमः॥

जकी देवी सगळा प्राणिया मे शक्तिरूप सू विराजमान है, उणां नै नमस्कार, उणा नै नमस्कार, उणा नै वारवार नमस्कार। दुर्गा सप्तसती मे मार्कण्डेय पुराण सू जकी कथा ली है उण मे देवी रा तीन चरित्र है। पैले में देवी मधु कैटभ नै मारै, दूजै मे महिसासुर रो वध करै ग्रर तीजै मे सुम्भ निसुम्भ रो सेना सार्थ सहार करै।

नवरता साल में दो वार ग्रावै। पैला चैत सुदी 1 सू नौमी ताईं ग्रर दूजा ग्रासोज सुदी 1 सू नौमी ताईं। यू तो दोनू नवरता मे शक्ति पूजा रो समान विधान है पण ग्रासौजी नवरता री लोक मे ज्यादा महत्त्व है। बंगाल में तो सब सूं ज्यादा।

भारत मे शक्ति-पूजा री परम्परा घणी जूनी है ग्रार्यां रै ग्राणै सू पैली ग्रठै शक्ति-उपासना चालू ही। फ्रेजर री राय मे दुर्गा या पार्वती ग्रनार्यां ग्रथवा पहाड़ी जातिया री ग्राराध्या देवी ही। ग्रार्यां सू सम्पर्क होणै रै वाद ग्रार्य देवियां मे सामिल कर ली। ग्रार्यां वेद संहितावा में ग्रनन्त ग्राद्या महाशक्ति री स्तुति करी है। ऋग्वेद रै ग्रदिति सूक्त ग्रर वाक् सूक्त में शक्ति नै जगद्धात्री ग्रर ब्रह्माण्डोत्पादिका वतायी है। उणां नै मही, सावित्री, गायत्री ग्रर सरस्वती ग्राद नाम दिया है। ग्रथर्ववेद में भगवती महाशक्ति खुद कैवै कै मैं ही सगळा देवतावां में व्याप्त हूं। विष्णु, शिव, ब्रह्मा भी शक्ति रा ही ग्रश है। ग्रष्ट सिद्धियां भी उणां रौ ही रूप है।

ग्राद जगद्गुरु शंकराचार्य सारी सृष्टि रो ग्राधार शिव ग्रर शक्ति नैं ही मान्यो है। सौन्दर्य-लहरी में उणा री राय है कै शक्ति विना शिव मात्र शव है। जिया ग्राग में दाहक शक्ति है, उणी भात ग्रात्मा मे शक्ति सामिल है। सारी सृष्टि रैं विकास रौ मूळ शिव-शक्ति री समरसता ही है। शक्ति ही भगता री ग्राराध्य देवी, सिद्धिदात्री, ज्ञेय, सिद्धि ग्रर तान्त्रिका री देवी है। चराचर में व्याप्त शक्ति ही दुष्टां रो नास करैं ग्रर सजना री रक्षा करैं।

भारत रैं सगळा भागा मे पुराणै समैं सू ही शक्ति-उपासना रो प्रचार है ग्रर शक्ति-पीठ स्थापित कर्योड़ा है। भारत मे शक्ति रा च्यार पीठ मानीजैं—ग्रगूण मे कामाख्या, ग्राथूण मे हिंगळाज, उतराद में ज्वालामुखी ग्रर दिखणाद में मीनाक्षी। पण कठैं-कठैं शक्ति-पीठां री संख्या इक्यावन, वावन ग्रर एक सौ ग्राठ ताणी वतायी है।

शक्ति रा शिवा, उमा, सती, देवी, ग्रम्वा, जगदम्वा, भवानी, पार्वती, गौरी, भगवती, चडी, काळी, दुर्गा, भैरवी, चामुण्डा, माताजी, ग्रावड, हिंगळाज, करणी, नागणेची ग्राद घणा नाम है। ग्रै नाम कोमळ ग्रर कठोर दो रूपां रा सूचक है। उमा, शिवा, गौरी, पार्वती, शान्त-कोमळ रूप रा सूचक है तो चंडी, चामुण्डा, दुर्गा, काळी, भवानी विकराळ रूप नै वतावैं।

शक्ति-पूजा रो पर्व नवरात्रि वौत खुसी सू मनायौ जावैं। ग्रासोज सुदी 1 नैं घट स्थापन करीजै। वेकळू रेत रौ छोटो मंडप वणा'र उण में जौ या गेहूँ वीजै। इयैं पर घट स्थापित कर उण पर चावळा सूं भर्योडो पात्र राखैं। इयैं रैं नजीक चौकी पर देवी री मूर्ति या चित्र राख'र रोजाना पूजन कियौ जावै। ग्राठ्यू या नम नैं कुवारी पूजन होवैं। देवी-पूजा रैं साथैं सस्त्र पूजन भी होवैं। दसहरैं रैं दिन रावण रैं मरता ही इयैं पर्व रो समापन हो ज्यावैं।

देवी में सगळैं देवतावा रो तेज है। दुर्गा दुष्टा नै मार'र धरमराज री थापना करी। महाभारत में दुर्गा नैं तीनूं लोका री ग्रधीश्वरी मान'र युधिष्ठिर विराट नगर जाती वेळा उणा री ग्रनेक स्तुति-परक नामा सू वन्दना करी है (महाभारत विराट-पर्व, ग्रध्याय 6 स्लोक 2 सू 26)। इयैं भात ही महाभारत री लड़ाई सरू होणैं सू पैली श्रीकृष्ण री ग्राज्ञा सू विजय री कामना सूं दुर्गा देवी री स्तुति करी है (महाभारत, भीष्म पर्व, ग्रध्याय 23, स्लोक 4 सू 16)।

मूळ रूप मे शक्ति रा सात रूप है—ब्राह्मी, माहेश्वरी कौमारी, वैष्णवी, वाराही, नारसिंही ग्रर ऐन्द्री। तंत्र-साहित्य में शैल पुत्री, ब्रह्मचारिणी, चन्द्रघंटा, कुष्माण्डा, स्कन्दमाता, कात्यायनी, काळ-रात्रि, महागौरी ग्रर सिद्धिदात्री नौ रूप है।

वौद्ध ग्रर जैन साहित्य मे भी शक्ति री पूजा मिळैं। वौद्ध-साहित्य में वज्रवाराही, तारा ग्रर मणिमेखळा ग्राद देविया री उपासना ठौड़-ठौड़ पर वतायी है।

जैनिया रै ग्रंठै भी चक्रेश्वरी, अजितबला, दुरितारी अर काळिका आद चौबीस देविया रौ वर्णन है।

गोसाईं तुलसीदासजी सीता नै सृष्टि उत्पन्न करणै वाळी, उण री पाळण अर संहार करणै वाळी, सगळै दुखां नै हरणै वाली अर सर्व-मंगळ करणै वाळी आद शक्ति कह्यौ है—

उद्भव स्थिति संहार कारिणी क्लेश हारिणाम्।
सर्व श्रेयस्करीं सीता नतोऽहं राम वल्लभाम्॥

वीर भोम राजस्थान आपरी सूरता, वादरी, जौहर, साका अर सती-सूरमावा खातर प्रसिद्ध है। इयै वास्तै राजस्थान में शक्ति-पूजा री घणी मोटी अर जूती परम्परा रैयी है। पृथ्वीराज रासौ रा कवि चन्दवरदायी आदि-शक्ति री स्तुति इण भांत करै—

नमो आदि अन्तादि तू ही भवानी
तुं ही जोगमाया तु ही वाक वानी॥
तुं ही भूमि आकास विभौ पसारै
तुं ही मोहमाया विखै सूळ धारै॥
तुं ही वेद विद्या चवद्दै प्रकासी
कळा मण्ड चौवीस की रूप रासी॥
तुं ही एक अन्नेक माया उपावै
तुं ही ब्रह्म भूतेस विष्णु कहावै॥

राजस्थान रा मोटा-मोटा राज तौ देविया रै आशीर्वाद अर कृपा सूं थापी-ज्या। इयै सम्बन्ध में औ दूहौ प्रसिद्ध है—

आवड़ तूठी भाटिया, गींगाई (कामेही) गौड़ाह।
श्रीवरवड़ सीसोदिया, करनल राठौड़ांह॥

आवड जी भाटियारी, कामेई जी गौड़ा री, वरवड़ी जी सिसोदिया री अर करणी जी राठौड़ां री मदद करी। करणी जी रै शक्ति-रूप रौ औ आह्वान् घणौ ओजपूर्ण है—

वड़कै डाढ वराह, कड़कै पीठ कमठ्ठ री।
घडकै नाग घराह, वाघ चढै जद वीस हथ॥
करनल किनियाणीह, धणियाणी जगळ धरा।
आळस मत आणीह, वीसहथी लाजै विरद॥

चारण काव्य-धारा नै लौकिक काव्य-धारा सू जोड़ण रौ महताऊ काम शक्ति-काव्य परम्परा ही कर्‌यौ। राजस्थानी में चारणी शक्ति-काव्य मूळ रूप में दो तरह रौ है—

(क) सीगाऊ—इण में देवी रै चरित्रां री तारीफ होवै।

(ख) चाडाऊ—इण में भक्त घोर संकट री वेळा देवी रैं पुरानैं चरित्रां री याद दिवातां थकां जल्दी मदद री प्रार्थना करैं। 'चाडाऊ-काव्य' सम्बन्धी एक गीत री आखरी मोळ्यां इण भांत है—

साख बीचोतरे पाख मेहासदु,
छेड़कर डाकवां पत्तर घातैं।
निडर नव लाख सूं भूल कर नीसरी,
हाक सू धाक दरियाव हातैं।
मोट आगां तणूं कोट तम ऊवरूं,
निनर जागां तणू चाव मोनैं।
घरम धागां तणूं रासजे धिराणी,
ताम तागां तणी लाज तोनैं।।

इयैं द्वन्द्वात्मक संसार में अपणैं आप नैं कायम राखण सारू हरेक प्राणी नैं संघर्ष करणौ पड़ै। संघर्ष री आ भावना देवासुर संग्राम सूं ले'र आज रै महायुद्धां ताणी लगातार दीखै। संघर्ष में जीत शक्ति सूं ही होवै। रावण नैं जीतण खातर राम शक्ति-पूजा करी ही। जठै निर्भयता है बठै ही शक्ति है। आपणैं राष्ट्र री शक्ति रैं अभ्युदय खातर आ ही'ज प्रार्थना है—

काळी माता काहळी, भगता ऊपरि भाइ।
जिमि तूठी सुर जेठ नां, इमि तूठो महमाइ।।

□□

दीपै वां रा देस

□

अखिलेश्वर

साहित्य दर्पण-कार विश्वनाथ वीर रस नै 'उत्तम प्रकृतिर्वीर' कह'र बाकी रसा मू श्रेष्ठ मान्यो है। वीर-भाव उत्साह प्रसूत हुवै। उत्साह वो साहस है जिको मिनख नै मुसकल सूं मुसकल मंगल-कारजां में वी आनद रै सार्थ प्रवृत्त करै। जिकै देश रे साहित्त माय उत्साह अनै वीरता मडित आदर्श देश-प्रेम, सुतत्ता री भावना, प्रतिज्ञा अर आन-वान री रक्षा आदि भावां रै आदर्श रूप री अवतारणा हुई हुवै, वै ही देस आपरी चमक-दमक सारू ई धरती पर अळगा ही ओळ खीजै। जिकै देस रै साहित माय राष्ट्रीय वीरता अर त्याग री अजस-धारा वही हुवै, मौत सूं खेलणिया वीरां री गौरव गाथा कही हुवै, वै ही देस धन्य है अर धन्य है वा देसा रा वासी, जिका निज देस ऊपर मरण-मिटण ताई हर घड़ी त्यार रैवै। राजस्थान री आ वीर भोम तो धन्य है ही, जिकी री वीर-मातावा आपरै लाडलै सपूता नै वारै जलम सूं ही आपरी मात भोम ताई प्राण-न्योछावर करण री सिखावन देवती रैयी है।

'इळा न देणी आपणी, हालरियै हुलराय।
पूत सिखावै पालणै, मरण वड़ाई माय ।।

राजस्थानी वीर काव्य मे नारी प्रेरणा अनै शक्ति रै रूप माय चित्रित हुई है। वा स्फूर्ति बण'र वीरा रै हिरदां माय रमी है। मा रै रूप माय वा आपरै बेटे नै आपरो दूध दिखा'र तो पत्नी रै रूप में आपरै पति नै वीरी लाज चूड़ो दिखा'र बचावण सारू रणभोम माय वलिदान हुवण री प्रेरणा देवती रैयी है—

'डाकी ठाकर सहण कर, डाकण दीठ चलाय।
मायड़ खाय दिखाय थण, घण पण वळय बताय ।।

आ ही प्रेरणावां रो ओ प्रतिफल है कै अठै री धरती वीर-प्रसु भूम रै नाम

भाभी हूं डोढ्या खड़ी, लीवां खेटक रूक।
थे मनवारो पावणा, मेड़ी झाल वंदूक॥

हे भाभी, हूँ ढाल अनै तलवार लै'र दुसमण री सेना नै ड्योढ़ी ऊपर रोक लीधी है अब थे वंदूक ले'र मैड़ी ऊपर चढ़ो अर म्हां पावणां री गोळियां सू मनवार करो।

आ कुलवधुआं रा जाया पूत जे आपरी काची ऊमर मांय ई रणखेतां पुग जावै तो मां रै दूध, वाप री आन अनै देस री स्यान ऊपर आंच नई आवण देवै। जिकै पवित्र उद्देश्य ताई बाप आपरै प्राणां रो उत्सर्ग करै, बेटो वी उणी पुनीत यज्ञ में आपरै सिर री आहुति देवै। सिर कट जावै पण झुकै नही। पागड़ी जे पड़ै तो सिर रै साथै ई पड़ै अर आखै देस रे गर्वीले इतिहास माय एक और सोनैली ख्यात लिख जावै—

बाप पड्या जिण ठोड़ हा वेटा नंह हटियाह,
पंच कसूंबल पाग रा सिर साथै कटियाह।

बाप भात ले'र गयोड़ो है। काको कुलदेवी री जात देवण गयो है। इसै टैम उपर वी जे दुसमण आय घमक्यो तो कोई बात नईं, वैरियां रो सफायो करण नै एकलो बालवीर ही घणोई है। घर अनै देस री आन-बान री रुखाळी वो भलीभात कर सके है।

जणाई तो कवि कैयो है—

बाप गयो ले माहिरो,काको जात कडूव,
तोहि मचाई छोकरै, वैरी रे घर बूव।

इसा युद्धवीर, शौर्यवान, मातभोम रा सजग रुखाला, निर्भीक जोधा, जिण देस माय हुवै दसूं-दिसावां वां री सुकीर्ति सू सुगन्धित हो उठै। वै ही देस आपरै पराक्रमी सपूता नै यश अर मान-सनमान दिरावै। कायर कपूतां रो इसै देस मांय न मान-सनमान हुवै, न स्थान। वा नै तो 'धरती रा लीघा अर धरती रो धन खावण वाळा' कह'र हरकोई दुतकारै। इसै कापुरसा नै तो परणायोड़ी धण तकात आपरै पति रूप माय नही अगेजै अर वा जीवतां री ई चूड़िया फोड़ नाखै—

ले मणिहारी चूड़लो, को ठाढ़ी'ज कुवार।
अबै पुराणो फोड़स्यूं रखू न इण भरतार॥

कापुरस री घरवाली तो वी रै जीवतां ई आपू आपनै विधवा समझण लाग जावै अर चूड़ी पहरणी ई बद कर देवै। इसै कापुरसां नै तो सुनारी वी दरबस ई कोसण ढूकै—

सोनारी झूरै, कहै, रे ठाकुर कुलखोय।
मूझ घड़ाई खोवणा, तूझ मड़ाई होय॥

इसा कायर कपूत अंत मांय एक लांबी अर वेगैरत जिनगाणी री नरक भोग' र मरै जणा कै वीर पुरस मातभोम री मान-मर्यादा तांई हसता-हसता मृत्यु रो वरण करै। मरणो तो अंत-पंत सगळा नै ई है पण कायर अर वीर पुरस री मौत माय फर्क हुवै। कविराजा मुरारिदास रै ईं दूहै मांय इणी भाव री अभिव्यंजना हुई है—

मरै वीर कायर मरै अन्तर दोनां ऐह
माटी मैं कायर मिळै धरै सूर जस देह।

सूरवीरां री मौत ऊपर माड्योड़ी जस गाथावा सूं साहित भर्यो पड्यो है। विशेषकर राजस्थानी भासा रो साहित तो मूळ रूप सूं सूरवीरा रो गौरव-गान है, जिको वहादुरी सूं जीवणै रो अर वहादुरी सूं ईं मरणै रो सवक सिखावै। डा० सुनीतिकुमार चटर्जी कैयो है—

'Rajasthani literature is nothing but a message of brave flooded life and a brave stormy death.'

जिका सिहा री जूण जीवै अर शेरा री मौत ई मरै—इसै जीवणै अर इसै मरणे ऊपर ई जननीजन्मभूमि रो माथो ऊपर रैवै। धरती माता इसै सपूता री ई आस राखै, जिका आपरै छोटै जीवण सूं ई मातभोम ने अखड गौरव-गरिमा अर महिमां सूं मंडित कर देवै। कवि वी इसै ई सत्पुरसां रो गौरव गान करै—

मरदां मरणो हक्क है ऊवरसी गल्लाह।
सापुरसा रा जीवणा, थोड़ा ही भल्लाह॥

मान-सनमान, वेग अर प्रवाह सूं भरपूर थोड़ो जीवणो ई वेईजती अर वेगैरत रै लाम्बै जीवणै सूं भलो वतायो है। इसे लोगा री मौत ऊपर देस नै एक कानी जठै गर्व हुवै, वठै ई वांरी मौत ऊपर अफसोस भी हुवै। कैयो भी है—

मौत उसकी है जमाना करे जिस पर अफसोस,
वरना दुनियां मे सभी आए हैं मर जाने को।

□□

मनस्या

□

अमोलक चन्द जांगिड

मनस्या विना टाग रो घोड़ो है पण वीं रै उडणी पारा भी है, जिणरी पूंछ पर मोकळा विच्छू वैठ्या डक मारवो करै है। वो पूरै जोर सू ऊपर उडै; फेर थाकेळे सू नीचै आ'र पड़ मरै जणा चिनेक सोच-विचार करो वी घुड़ सवार रो काई हवाल हुवै। आही'ज दसा वी मिनख री हुवै जको आपरै मन में मोकळी अर घणी ऊंडी मनस्यावा पाळ राखी है। मनस्या वडे-वडे देवतावा री' ई पूरी पार को पड़ै नी, सो ओ तौ विचारो मिनख है—फकत हाड-मास रो पूतळो।

मनस्या अयाली चतर विणजारी है, क मिनख रै गळै मे गळेवड़ो घाल्या गाव-गळ्या अर ढाणी-ढपाणी डोलती-हाड़ती मूगै भाव वेचणो चावै। जटै-जठै मिनख री मर्नाचती हुवती दीखै, वठै-वठै बा भठ वीनै गुलामी रै खूटै वाघ न्हाखै। गुलाम रै तौ अेक धणी हुवै पण ईरै धण्या री गिणती कोयनी। वेस्या राण्ड रै सैंस धणी।

आप यू समझो' क आ तौ धणी फिरत पोतड़ी है। ईं रै क्यू' ई गिलाण को है नीं। जो धणी ई री पाळ-पोसणा करै, वो'ई धणी खालखेस सेवो। वीं नै समझै नी छूतरो आ। इयै सू सात वाटा चोखी गधी, जकी लात तौ मारै पण धणी रो पूरी सेवा भी बजावै। कठै नाक सळ नी घाळै। कठै'ई रूखी-सूखी खाय'र कूरड़्या पर लोट लगा लेवै। पण मनस्या तो छप्पन भोग जीम्यां पाछै भी धणी नै इसी सतावै क खा रै कुत्ता खोर! विचारै नै दिन मे तारा दीखवा लाग जावै। अयाळी नागी राण्ड देखवा को मिलैगी आपनै, जकी आपरै धणी रो खायो-पीयो पाछो उगळा लेवै। आ तौ भरळाई नागण है; चावो जितो दूध पावो, डसतां वार नी लगावै।

'माया थारा तीन नाम, फूसौ, फरसौ, फरसराम'। सो मनस्या रा भी वोळा रूप होवै है। आ तौ भाड री सिरखावणी है, ऊपरलो पाट है। खैर, आ तौ है जिसी है, मिनख आपरो वखत जिया-तिया काट लेवै, पण ईं री तीन वैना ओर है—

मोह, माया अर तिरसणा । वा सूं सावकौ पड़ जावै जणा कांईं भाव विकै । हुजावै न कोढ में खाज । वां सवनै गळै मे घाल्या विचारौ मिनख वावळौ वण्यौ ववण्डरी मारतौ फिरवो करै । पण वी नै ग्रौ ठा कोनी क तेरै में शंकर सो वळ कठै । तेरौ गळो शिवकंठ किया वण सकै । कादै में रँय'र कमळ सो निरवाळौ ग्रस्तित्व ग्रोखौ घणौ होवै है । नारद सरीसा मुनी नै सावत नी छोड्या । वा री हालत पतळी कर नाखी तौ ग्रापणै जियालै सूदै मिनख नै कांईं गिणै ।

मनस्या रौ कांईं हारै, मिनख हार जावै । मिनख वाळापणै सूं मनस्या पाळतौ-पाळतौ जुवान हुजावै, फेर वुढ़ापौ ग्रा घेरै, वाळ धवळा हुवण लाग जावै अर डील पर लूर्या पड़वा लाग जावै पण मनस्या तौ तद भी जोवन रै रंग-मँला मे नित नुवा निरत करै ।

मनस्या रै वळ पर ही मोटी-मोटी ख्याता ग्रर वाता लिखीजी जा रै ग्रेक-ग्रेक ग्राखर में मिनख री भूखी मनस्या रा चितराम गेळजै । लाख पसाव ग्रर कोड़ पसाव देवणिया घणा वळी राजा हुया, पण सगळा ग्रधूरी मनस्या ले'र ग्रागलै घरां सिधारग्या । मनस्या की री पूरण हुवै !

मनस्या रै तो ग्रापा सगळा जणा लाठी ले'र लारै हुग्या, जाणी ग्रा कोई मारणी गाय हुवै । ग्रापा ई रा सींग तोडवा चावा हा पण ग्रा वात ठीक कोनीं । कित्ती गाळ्या काढी ग्रर जमारौ भाडण में की पाछ नी राखी पण ई रौ भलेरौ नाकौ तौ सूल निरख्यौ ई कोनी । ई रै विना ग्रेक पल भी काम नी चाल सकै । मनस्या विना मिनख जमारौ कठै ! वो तौ फेर निष्क्रिय हुय'र दापळी जासी । वी रौ जीवणौ धिरकार । ग्राखर मिनख जूंण में ग्रा'र वी नै क्यू करणौ है । ग्रागै वढ़णौ है, तरक्की करणी है ग्रर ग्राखै संसार में नाम कमावणौ है । तौ फेर कांईं कर्यौ जावै । वात चवड़ै धाड़ै सब रै सामी साफ पडी हैं, क मनस्या री छोटोड़ी वैन तिरसना नै वी रै सासरै खिणाद्यौ ग्रर लोडियै वीरै परमाद नै न्यारौ करद्यौ । न्यारै घर रा न्यारा वारणा । फेर क्यूं ग्राट नी लागै । फेर तौ मनस्या खुद ग्रापरै गेलै पर सही-साची वगसी । की रो क्यू नीं विगाड़ै । ग्रा तौ मिनख नै ऊँची-वड़ो करसी ग्रर घणो जस दिरासी । ग्रा तौ वीं रै खातर ग्रेक वरदान सावत हुसी । मनस्या री निरमळ गंगा में मानखौ सिनान कर'र सगळा पाप धोवसी ग्रर ग्रापरै जीवण रो साचळौ ऊजळो रूप ससार रै सामी राखसी । वी रै ऊजळै चानणै में वी री जीवण-कुटिया सरग धरा-सी दीपसी ।

□□

राज वदळग्यौ म्हाँनै काँई

□

सांवर दइया

आपणै देश री आजादी खातर अलेखू लोगा आपरौ वलिदान दियौ। बी रौ ई फळ है कै आपा आजादी री हवा में सास लेय रैया हां। आजादी सागै लोगा रा सुख-सुपना जुड्योड़ा हा। वै सुपना साचा कोनी हुया—घणकरै लोगां खातर तो साचा ई हुया समझो नी, पण खास तौर सूं कविया खातर साचा कोनी हुया। जणाई तो 'उस्ताद' नै आपरी कलम सूं लिखणौ पड्यौ—

'इण दिस पडी न सुख री झांई, राज वदळग्यौ म्हांनं कांई !'

उस्ताद री वात कूड़ी तौ कोनीं, पण आज रा हालात देखतां लागै कै लोग राज वदळणै सूं घणाई राजी है। आ रा सिट्टा सिकणा चाईजै, पछै भलाई 'कोउ नृप होइ हमें का हानी !' केई तौ आ तकात कैव कै अंग्रेजो (पोपां वाई रो ?) राज भळै नी आणौ।

वौपारी लोगां नै देखौ। कैड़ा मस्त है ! दिन रात आ ई सोचता रैवै कै च्यार रा आठ अर आठ रा साठ किया करां। खाली सोचै ई कोनी परतख करै ई है। काई हुयौ जे इण खातर घी में चर्वी, तेल में सत्यानाशी मिलावणी पडै। दूध में पाणी तौ खैर जुगा सू मिळतौ ई आयौ है। खालिश दूध लोगा नै जरै कोनी। पेट खराब हुयां डागदर री शरण में जावणो पड़ै। बठै दवा री जागा पाणी री सूई लागण रौ रोवणौ रोवा इण सू तौ आछौ है कै पैली सूं ई पाणी री शरण मे रैवां। शरीर मे तौ अंत पंत पाणी ई पूगणौ है !

सनीमा तो कमाई रौ जरियौ हौ ई, अवै वीडियौ भळै आयग्यौ। जिका चित्र रईस लोगां री वपौती हा, अवै गळी-गळी आम हुयग्या। गाडो घीसणिया ई बताय सकै कै ब्ल्यू फिल्म काई हुवै !

राज वदळणै रौ सुख राज रै नोकरां नै खास तौर सू मिल्यौ। राज रै दफ्तरा

में काम सावळई हुव । पेंशन केस तो फुरतां पुरत निपटै । हरिशंकर परसाई री 'भोलाराम का जीव' वांच'र थे ग्रा ना समझ्या कै सगळां सागै ग्रा ई हुवै । ग्रां कविया का कहाणीकारां नै तो कुवद रै अलावा कीं दूजो काम तो ग्राथ कोनी । ग्रै तो हर व्यवस्था में कमी ई देखता रैवै । ग्राजादी सूं खाली उस्ताद नै ई शिकायत हुवै वा वात कोनी । घनंजय वर्मा नै ई ग्राजादी रो लाडू लिया पछै ठा पड़ी । गळी-मोहल्लै में ताजै-मोटै संकड़ू लोगा थका ई वीनै कैवणो पड़्यो—"ग्राजादी ग्रायां पछै ॥ ना तो म्है पागय्यो / ग्रर ना तू पागरी / म्हैं तो होग्यो फोफलियो / ग्रर तू होगी सांगरी !"

लोग ग्रा कविता सुण'र हंसै ग्रर कवि री पीड़ नै कोनी लखै । पण पीड़ नी लखणियां नै दोप देवणो विरथा है । वां नै तो ग्रापरै ग्रसवाड़ै-पसवाड़ै रैवणियां पांगर्योड़ा ई दीखै । वै देखै कै नगरपालिका रो चेयरमैन का एम० एल० ए० का एम० पी० वण्यां पछै कियां रातोरात कायाकळप हुय जावै । काल ताई जिका चाय का सिगरेट माग'र पीयां करता, ग्राज वा दूजै खावतै-पीवतै लोगा नै चीथरा चुगण जोगा कर नाख्या । जिका रै रैवण खातर टूट्योडी टापरो कोनी हो, ग्राज वारै लाखां री हेली झुक्योड़ी है ।

वदळ्योड़ै राज री सुख ग्रफसर तो लेवै जिका लेवै ई है, मामूली ग्रादमी ई कोनी चूकै । लोग रेल में विना टिगट चढ़ै । रेल राज री । राज ग्रापणो । पछै टिगट क्यूं ? रोडवेज री वसा डवलडेकर हुई चालै, पण तो ई घाटो !

राज कोई कानून वणावै इण सूं पैली कानून तोड़णिया नै ठा पड़ जावै । किणरै गोदाम माथै छापो कद पड़सी, ग्रा वात पंचतारा होटला में व्हिस्की री वोतलां खुलती वगत ई तय हुय जावै । छापो मारणिया छाछ-सो मूण्डो कर'र पाछा ग्राय जावै ! जे भूलै-भटकै कोई फंस ई जावै तो वो खुल्लैग्राम कैवतो फिरै —राज रै ग्रादमी री कित्ती'क तो जड़ हुवै !

राज रै ग्रादमी री जड़ री महिमा न्यारी है । ग्रा जड़ कणाई हुवै ग्रर कणाई कोनी हुवै । जड़ हुवै जणा कोई माई रो लाल खसै कोनी । हर वगत फर्शी-सलाम वजावै लोग । जड़ नही हुवै जगा लोग भाभी कैय'र ई कोनी वतळावै ।

राज वदळग्यो तो लोगां री धारणा ई वदळगी । पैली राज रै काम मे चूक हुया लोगा रा थरणा कापता । ग्रवै लोग वेफिक्री सूं कैवै—राज काज है । इयां ही चालवो करसी !

राज ग्रापरै छोड्योड़ै उपग्रह री गति देख'र भलाई राजी हुंवतो हुवै, पण देश री प्रगति री रफ्तार तो क्रिकेट टंस्ट मैच रै दिना मे दफ्तरा रै काम री गति जैडी ज है । केई दफै तो ग्रा लागै कै क्रिकेट रो भविष्य ई देश रो भविष्य है !

राज वदळ्या पछै देश में केई चमत्कार हुयग्या । भोगी साधु भगवान वणग्या चुनाव में गुण्डा री पूछ हुवण लागी । तस्करी रै काम में तेजी ग्रायगी । गळी-गळी

अवैध कब्जा हुवण लाग्या। राज री जमीन माथै खाली मळवै री लिखा-पढ़ी हुवण लागगी। अदालत मे कूड़ी गवाही देय' र पचास-पचास रुपिया रोजीना कमावण लागग्या लोग।

बदळ्योड़ै राज मे केई जूना लोग अतीत रै घड़ै में मूण्डो घाल्यां आपरै वगत री वखाण करता रैवै। बै अंग्रेजा रै राज री अर गगासिंघ जी रै जमानै री वाता करै। करो भलाई, इत्ता सोरा-सुखी तो वै कदेई कोनीं रैया। अेक तारीख आळै दिन सौ-सौ रा दस कड़कड़ाट करता नोट वां कद देख्या-गिण्या ? बेगार देखी-करी हुवै तो भलाई देखी-करी हुवो। इत्ता नोट तो सुपनै में ई कोनी देख्या वा !

अै नोट तो पसीनै री कमाई रा वाजै। इणरै अलावा ऊपरली कमाई न्यारी हुवै। वा हुवै तो हुवै जिका रै ई है, पण हुवै तो है ई। अै लोग विदाम चरै। आ नै विदाम चरतां देखणिया मे भाई सदीक ई शामिल हा। जणाई तो वा लिख्यो—"वावा थारी वकर्‌या विदाम खावै रै !"

राज बदळ्या पछै जठै वावै री वकरड्‌या नै विदाम चरण री छूट है, वी देश रा लोग कांई खावै, आ वात ना पूछ्या। आ वात पूछ्या पछै जिका उथळो आसी थांनै सुण्या पछै कठैं ई अ नी हुवै कै थे ई उस्ताद दांई गावण लागो—राज बदळग्यो म्हानै कांई ?

□□

वागड़-प्रदेस रा मावजी

□

(श्रीमती) कमला अग्रवाल

राजस्थान[1] प्रदेस रौ दक्खिनी भाग, जणी मे डूगरपुर, बांसवाड़ा, प्रतावगढ़ आदि नगर वस्या है पुराणा समय सूं ही ज 'वागड़' नाम सू प्रसिद्ध रह्यो है। अणी वागड़ मे वर्तमान उदयपुर उप-मण्डल री कुछ भाग अर्थात् 'छप्पन'[2] नाम रो प्रदेश व उत्तरी गुजरात रे सूंथ रामपुर आदि महिकाठा तक रै भागा रौ समावेश व्हेतौ हौ, जो समया री हेरा-फेरी रै कारणै वर्तमान वागड़ सू अलग व्हैइ ग्या। वागड प्रदेस री पुराणी राजधानी वडौदा ही। वड़ौ दो डूगरपुर सू 28 मील री दूरी पै है। संस्कृत रा लेखा में अणी रौ नाम 'वट पद्रक' मिलै अर अणी नै 'वागड़—वट पद्रक' केता हा, अणीं रौ कारण यो हो के वट पद्रक (वड़ौदा) नाम रा भारत में एक सू अधिक स्थान व्हेवा रै खातर अणी (वड़ौदा) रै वारां मे सन्देह नी रैहू वै।

संस्कृत रा कतिपय विद्वाना 'वागड' शब्द नै संस्कृत रै ढाँचां में ढालवा री

---

1. राजस्थान रौ पुराणौ नाम 'राजपूताना' है, अठै ज्यादातर राजपूत राजावा रे राज करवाउ सन् 1800 में पेळो दाण जार्ज टॉमस अणी रो प्रयोग कीदो। (विलियम फ्रेंकलिन : मिलीट्री मेमाअर्स ऑव मिस्टर जार्ज टॉमस, सन् 1805 लंदन संस्करण, पृ० 347)
2. डूगरपुर रै तरपोद रै उत्तर में सोम रै वणी पार रो प्रदेश 'छप्पन' केवावे। अणी रौ विस्तार पूरव में सलूम्बर उं लेइ ने पच्छिम में परसाद तक अर उत्तर मे जगत उं लेइने दक्खिन मे सोम तक है। सुरू में संभवतः अणीं प्रदेस मे मुख्यतया 56 गाव रह्या वेगा। अणी प्रदेश री भूमि पथरीली अर अठै बड़ा-वड़ा पहाड़ तथा घणां जगळ है। अठा री रीति-रिवाज अर वेस-भूसा आज रै वागड़ उं मिलती-जुलती है। मातर मास री गणना अर भाषा में थोड़ो'क फरक है।

प्रयत्न करनै वणीं नै 'वाग्वर'[3] 'वैयागड़'[4] 'वागट'[5] या 'वागंट'[6] अर प्राकृत रा विद्वाना अणी रो प्राकृत रूप 'वगड़'[7] वणायो है पर अधिकतर शिलालेखां अर ताम्रपत्रां में 'वागड़' शब्द रो ही ज प्रयोग मिले है।

'वागड़' गुजराती भाषा रै 'वगड़ा' शब्द सूं मेळ-जोळ राखे। 'वगड़ा' शब्द रो अर्थ वन (जंगळ) व्है अर जणीं प्रदेस में 'वगड़ा'(जंगळ)घणा अर आवादी कम व्हे, वणी ने 'वागड़' कैहवै। यूं तो आखा भारत में 'वागड़' नाम रा तीन प्रदेस है —मेवाड़ रे आस-पास; दिल्ली रे पास उत्तरी-पूर्वी वीकानेर रो प्रदेश अर कच्छ रो वागड, राजस्थान रा दक्खिनी भाग(मेवाड़ रै आस-पास रो भाग) मे भी जंगल घणा अर वस्ती कम है अत: 'वगड़ा' सब्द सूं ही ज अणी प्रदेस रो नाम 'वागड़' व्हेणो ठीक है।

जदी उं डूंगरपुर नगर री थापना व्ही अर वठै इज अणी री राजधानी व्ही जदी उं ही ज 'वागड़' नैं 'डूंगरपुर' भी कहैवा लाग्या। महारावल उदयसिंह आपाणे जीवन रा अंतिम दिना मे 'वागड़' ने दो भागां में वाट न माही नदी उं पच्छिम रो भाग आपाणा ज्येष्ठ पुत्र प्रिथीराज नैं, माही नदी रै पूरव रो भाग आपाणा छोटा पुत्र जगमल ने देइ दी दो। जदी उं ही ज वागड़ में डूंगरपुर अर बांसवाड़ा[8] नाम री दो रियासता न्यारी-न्यारी व्ही।

डूगरपुर उं दक्खिण-पूरव में 29 मील री दूरी पे पुंजपुर कस्वो है। जणो ने रावल पूजा वसायो हो। अणी रे पास ही सावला गाव है। अठै इज औदीच्य कुल में जन्मीयोड़ा एक ब्राह्मण-दम्पति रेहता हा। ब्राह्मण रो नाम दालम रूसी अर ब्राह्मणी रो नाम केसरवाई हो। ई दोइ वड़ा ही ईश्वर भक्त हा। सवत् 1771, माह सुदी पचमी, वुधवार रै दिन अणा रे एक पुत्र-रत्न पैदा व्हीयो जणी रो नाम मावजी राख्यो गयो। अर ब्राह्मण वालक री तराउं अणी रो पाळण-पोषण व्हेवा लाग्यो। वालक रा पिता एक कर्तव्यनिष्ठ अर भगवद् भक्त ब्राह्मण हा। मावजी

---

3. बांसवाडा रे नौगांवा रे जैन-मन्दिर री प्रशस्ति में प्रयुक्त।
4. बांसवाडा रे वीच गाव री ब्रह्मा री वर्तमान मूर्ति पर रा लेख मे प्रयुक्त।
5. राजपूताना म्यूजियम री एक जैन-मूर्ति रे वि० सं० 1051 रे लेख मे प्रयुक्त।
6. सेखावाटी रै हर्षनाथ रा मंदिर री प्रशस्ति में प्रयुक्त।
7. जिन प्रभ सूरि: तीर्थकल्प, (कलकत्ता सस्करण) पृ० 95।
8. बांसवाडा नाम बांसना (वांसिया) नामक भील रै पाछै वणो कैवे जो अठै आपणी पाल (गाव) वसाइनै रेतो हो अर रावल जगमाल रै हाथा मार्यो ग्यो पर अणी ने चारण-भाटा री मनघड़न्त वाता कै नै बास रै, वृक्षा री अधिकता अर बांसा री झाड़यां उं रक्षित वैवा रै कारण अणी ने 'बांस-वहाला', 'बांसवाला', 'बांसवाड़ा' कैवे है।

पे भी अणी रो प्रभाव पड़्यो । कह्यो जावै है के जदी मावजी री अवस्था बारह वर्ष री व्ही तो अणां में ईश्वरीय कला रो प्रादुर्भाव व्हीयो। बहुधा जी धर्म-संस्थापक व्हीया है, वणां धर्म प्रचार रे पैळी एकातवास कर अर आध्यात्मिक विषयां पे मनन-चिंतन कर तत्पश्चात् धर्म प्रचार कीदो है। मा़ही[9] अर सोम नदी[10] रे संगम पर 'वेणेश्वर' नामक स्थान है। कह्यो जावै है कै संवत् 1784 में संत मावजी महाराज नै अठै ज्ञान प्राप्त व्हीयो अर वणां ही ज अणी वेणेश्वरधाम री थापना कीदी। वै अठैं इज एक गुफा मे तपश्चर्या करवा लागा। तप-समाप्ति रे केड़े महाराज जीवणदास अर केहरीदास आद ने परचो (परिचय) देइ न धर्मोपदेश देणो प्रारम्भ कीदो। वै लोक-सेवा अर ईश-भक्ति रो उपदेश देता हा। धीरे धीरे अणा रा अनुयायी वढवा लाग्या अर अणा रो एक पंथ सो वणगयो। अणी पंथ ने मानवा वाला अणी दाण भी वागड़ प्रदेश में 10,000 रे लगभग वेगा।

मावजी वड़ा ही ज्ञानी अर योगी हा। वै थोड़ा पढ़-लिख भी लेता। हा! कह्यो जावै है के अणां अहमदावाद उ 350 रुपया रा 14 पोठी कागद मंगवाया अर लसाड़ा (वासवाड़ा) में तीन दिना तक एकात निवास करनै सात वैल उठावै जतरा वजन री 'वाणी' हाथा उं लिखी अणी वाणी रै छदा री संख्या 72 लाख 96 हजार बतलाई जावै है। या वाणी हाल तई छपी कोनी। अणी मे अणा ज्ञान-शिक्षा रे अलावा कतरी ही भविष्यवाणिया भी कीदी है। वाणी री भाषा वागड़ी या भीली भाषा उं प्रभावित पिंगल है। यद्यपि महाराज घणा पढ्या-लिख्या नी हां पर अणां री वाणी में संस्कृत रा पद भी आया है। अणां री वाणी 'चोपड़ा' कही जावे है। असी चौपड़ियां व चौपड़ा पाँच कह्या जावै है। कह्यो जावै है के अणा चौपड़ा मूं एक चौपड़ो जदी पेशवा री फौज अठी नै आई जदी पेशवा महाराज ने भेंट करवा रे वास्ते दीदो। एक वासवाड़ा रा सुनारां ने दी दो पर अवे पतो नी है के वो कणी रे पा है? तीसरो महाराज रै जन्म-स्थान सावला रे मन्दिर में है। अठै इज मावजी रो मुख्य मन्दिर है जठै वणा री गादी है। अठै इ आइनै वणा रा अनुयायी कंठी बंधवावे। मावजी री गादी रा मेहन्त अविवाहित रेवे अर औदीच्य ब्राह्मणा मे उं कणी ने आपाणों शिष्य वणावै। अठै इज मावजी री शख, चक्र, गदा

---

9. या अठी री खास नदी है जा ग्वालियर उं निकल ने मध्यप्रदेस में वेवा रे केड़े वाँसवाड़ा उपमण्डल री सीमा वणाइ ने पच्छिम में मुड़ जा अर गुजरात में वेहने खम्भात री खाड़ी में गिरे।
10. या उदयपुर रै दक्षिणी-पच्छिमी भाग वीछीवाड़ा रे पास रा पहाड़ां उं निकल नै उत्तर-पूरव री तरफ 50 मील तक उदयपुर अर डूगरपुर उपमण्डला री सीमा वणावा केड़े डूंगरपुर उपमण्डल में प्रवेस करे अर वठा उं उत्तर-**दक्षिण** में 10 मील वैनै वेणेश्वर रै पा माही में जाइ मिलै।

वागड़-प्रदेश रा

मर पद्म सहित घोड़ा पै सवार चतुर्भुज मूर्ति है। अणां रा शिष्यवर्ग में अणां ने विष्णु रो कल्की अवतार मान्यो जावें है।[11]

चौथो चौपड़ो पुंजपुर रा मन्दिर में अर पांचवी चौपड़ो मेवाड़ अन्तर्गत सेषपुर (सलूम्बर रे पां) रा मन्दिर में। अणी रे सिवाय डूंगरपुर उप-मण्डल मे वेणेश्वर अर ढालावाला तथा बांसवाड़ा उपमण्डल मे पारोदा गांव में भी मावजी रा मन्दिर है। शेष चौपड़िया जी महाराज लिखी ही वणा मूं कुछ सन्ता-सेवका में बाट दी दी अर कुछ अणा मन्दिरां में है पर वी अबै जीर्णता ने प्राप्त वेइने नष्ट प्राय: वेइ री है। 'वाणी' रे अलावा अणां री वणाई 'न्याय' नाम री पुस्तक है जणी मे जीवणदास औदीच्य द्वारा किया गया 108 प्रश्नां रा उत्तर बड़ी ही योग्यता रे साथै दिया गया है। अणी रे अतिरिक्त 'ज्ञान-भण्डार', 'अकाल-रमण', 'सुरानन्द', 'भजन स्रोत', 'ज्ञान-रत्न-माला' तथा 'कलिगा-हरण' आदि अनेक अणा रा रचियोड़ा ग्रंथ है। अणा सब री भाषा हिन्दी मिश्रित वागड़ी है।

महाराज रे विषय में और भी कई दंत-कथावा प्रचलित हैं जणां री कोई ऐतिहासिक प्रमाण नी है। कहियो जावें है कै वाणी प्रकास रैं केड़ै जदी महाराज पाछा वेणेश्वर पधार्‌या तो सपना मे एक राजा (?) री पुत्री (?) उ पाणिग्रहण-सस्कार कीदो अर वणी री साड़ी रैं पल्ला पे लिख दीदो के 'मावजी महाराज दसवो अवतार सावला मे लेई लीदौ है अर वी वेणेश्वर स्थान पे विराज रिया है। वठै इ आइनै मिलो।' परभात वेवा पैं राजकुमारी जदी नीद उं जागी तो पाणिग्रहण सस्कार रा चिन्ह-स्वरूप आपांणा हाथा में काकण-डोरा देख्यां अर साड़ी रा पल्ला पैं लिखयोड़ा भी शब्द पढिया। वेता-वेता या बात राजकुमारी रैं माता-पिता नैं भी मालम पड़ी अर राजकुमारी वेणेश्वर जाइने महाराज ने ही पति स्वीकार करणो तय की दो। माता-पिता री आज्ञा उं राजकुमारी वेणेश्वर रे वास्ते रवाना वी। जदी प्रतापगढ रैं पा सवारी पोंची तो वठारा राजा नैं सपना में यी सभी समीचार मालम पडया। राजा (?) अणां नैं वठै ठहरवा अर आपाणो आतिथ्य स्वीकार करवा रैं वास्ते घणोई आग्रह कीदो अर 50 भोई[12] मियाना[13] ने उठाइ ने राजा रा महला में ले जावा रे वास्तै लगाड़्या गिया पर मियानो अतरो भारी वेइ गयो कै उठ्यो नी। आखिर में अणी तरा उं ठहरावा रैं आग्रह मे वीत्या समया रे वास्ते राजकुमारी जी उं माफी मागी गी अर सुरक्षित रूप में वणा नैं आगे रैं वास्तैं रवाना कीदा। पुंजपुर पोंचवा पै राजकुमारी रैं वास्तै विश्रामस्थल अर मन्दिर रो प्रबन्ध कीदो गयो।[14]

---

11. अणा रा शिष्य वर्ग आपाने विष्णु-सम्प्रदाय रैं अन्तरगत ही समझै है।
12. जाति विशेष।
13. पालकी विशेष।
14. राजकुमारी रैं साथे गिया छोरी-चाकरां में उ धूरजी अर भारतेग रा वंशज हाल तई वर्तमान है।

. महाराज रो दूसरो विवाह ब्राह्मणिया गामड़ा री स्वजातीय कन्या वगतू उं वीयो।

तीसरो विवाह सागवाड़ा रै गुजराती पटेल रै कुल में उत्पन्न मनुदेवो उ वीयो।

चौथो विवाह कूपण (बासवाडा) में ब्राह्मणा री छोटी ओदीच्य शाखा में सम्पन्न वीयो। कोई-कोई अणा रो पेलो अर तीसरो विवाह औदीच्य ब्राह्मणा री कन्यावा उं, दूसरो एक राजपूत री कन्या उं अर चौथो एक पटेल री विधवा स्त्री उ वेवणों वतलावे है। अणा विवाहा उ महाराज री संतति अणी तरा उं वी वतलाई जावे है—(1) वगतूदेवी उ श्री उदयानन्द (2) मनुदेवी उं श्री नित्यानंद (3) रूपा देवी उं श्री देयानन्द, श्री कमलानन्द अर कमल कुवर रो जळम वीयो। रूपादेवी री संताना छोटी अवस्था में ही ज देवलोक वेइगी।

महाराज रै धर्म-प्रचार अर अलौकिक कार्य री चरचा तत्कालीन डूगरपुर महारावल श्री शिवसिंह जी रै काना तक भी पोंची। महाराज साहब नै बुलावा रे वास्ते श्री भगवान्दास गोड़ अर वीरसिंह सोलंकी ने वेणेश्वर भेज्या गिया। दोई जणा महाराज रो परचो (परिचय) लेइनै उपदेस लीदो अर वणा ने डूगरपुर लेइ ने आया। महारावल साहब अर मावजी महाराज में कतराई प्रश्नोत्तर वीया। आखिर में महारावल साहब परीक्षार्थ मावजी ने गेप-सागर[15] रे पाणी में चालवा रै वास्तै कियो। अणी पे मावजी अप्रसन्न वेइने कियो के 'राजन ! अणीं तालाव मे मू ही कई चालू, सभी ही चाली।' यू केइने महाराज वठाउं चाल दीदा अर मेवाड रै अन्तरगत सहसपुर (शेषपुर) गाँव में रेंहवा लागा। कहियो जावे है के थोड़ा समय वाद गेप-सागर विल्कुल सूख गियो अर लोग वणी में वेइनै आवा-जावा लाग्या।

कह्यो जावे है के मावजी महाराज मे ईश्वरीय कला सवत् 1789 तक विद्यमान री।[16] मावजी रो देहांत संवत् 1801 मे वीयो।[17] सवत् 1789 उं सवत् 1801 तक यानी अणा रे स्वर्गारोहण-समय तक यी परमहंस-वृत्ति धारण करी ने रिया।

मावजी महाराज रो धर्म सनातन धर्म री एक शाखा है। अणा निष्कळंक

---

15. डूगरपुर रै पास इ तालाव विशेप जीनै गेपा रावल वणवायो। अणीज तराउं डूगरपुर रै पासइ 'पाता रावल' रै नाम उं पातेला तालाव भी है।
16. सभवतः अणीज आधार पे ओझाजी मावजी रो देहान्त वि० स० 1789 (ईस्वी सन् 1732) मान लीदो है। (डूगरपुर राज्य रो इतिहास, पृ०18)
17. 'कल्याण' (योगाक), भाग 10, अंक 1-2-3, श्रावण-भाद्रपद-आश्विन सम्वत् 1992, पृ० 818

भगवान् रौ इष्ट ग्रर उपासना विशेष रूप उं वतलाई है। मावजी स्वयं ग्रपणे-ग्राप नै निष्कळंक भगवान् रौ ग्रवतार ही कैता हा।

मावजी स्वयं ग्रापांणा भक्तां रै साथे रासलीला किया करता हा। ग्रवै भी ग्रणा रै सम्प्रदाय रा भक्तजन वेणेश्वर में मेला रै उत्सव पै रासलीला किया करे है, जणीं में पुरुष ही ज सम्मिलित रेवे। वेणेश्वर धाम ग्रादिवासी ग्रंचल रौ एक जवरो तीर्थस्थल वण गियो है। ग्रणी क्षेत्र रा रैहवा वारा भील, मीणां, रावत, कोली, कुरमी, खांट ग्रादि पिछड़ी जाति रा लोग ग्रणीं मे घणीं श्रद्धा राखे। माघ पूर्णिमा पे हर साल ग्रठै वड़ौ भारी मेळौ लागै जणी में चालीस-पचास हजार व्यक्ति इकट्ठा वे। यो मेळौ एक सप्ताह तक चाले। ग्रणी मेळा री शुरूग्रात सम्वत् 1784 उ मानी जावे है।[18] मेळा रो भव्य स्वरूप पूर्णिमा रै दिन देखवा नै मिले। ग्रणी दिन मंदिर, नदी, वाजार, सभी स्थाना पै चहल-पहल रै वै। धार्मिक भावना-युक्त व्यक्ति नदी में स्नान कर ने भगवान् नै श्रद्धाजलि ग्रर्पित करै। रसिका रौ क्षेत्र तौ वाजार वै। वी रसपान रे वास्तै वाजार री क्यारिया में भौरा री तराउं चक्कर काटता रै वै। ग्रादिवासी युवक-युवतिया री टोळिया घणा ग्रानन्द रै साथे समान रूप उं वाजारां में घूमती मिलै। यी लोग रात में सामूहिक नृत्य करै जणी मे स्त्री ग्रर पुरुष दोई भाग लेवै। ग्रवै तौ पाछला कुछ वरसा उ राजस्थान रा समाज कल्याण विभाग रै द्वारा ग्रायोजित वैवा वारी सास्कृतिक प्रतियोगितावा ग्रणी मेळा रा खास ग्राकर्षण वण गया है।

यो वेणेश्वर धाम तो वागड़ रौ पुष्कर ग्रर प्रयाग है। ग्रठै इज वागड़ री दो प्रसिद्ध नदिया रौ संगम है। भारतीय सस्कृति मे नदिया रै सगम स्थल ने तीर्थ रै समान सम्मान दियौ जातौ रियौ है। पूरव री तरफ उं ग्राती माही नदी मे उत्तर री ग्रोर उ ग्राती सोम नदी ग्राइ ने गळां मिलै। संगम पे दोई नदियां रै वहाव रै वीच मील भर लाम्वो कटाव शेष रेइ गियौ है जो एक टापू रै समान दिखलाई दे। ग्रणी ने ग्रठी री वोली में 'वेणका' (वेण) केवे, क्यू के यो सारो हिस्सो 'वेण' नाम रे प्राकृतिक पौधां उं ढकियोड़ो है। वर्षा ऋतु में ग्रणी रौ सुन्दर दृश्य देखताई वणे। ग्रणीं वेण पे डूगरपुर रा महारावल ग्रासकरण जी सम्वत् 1606 मे एक शिव-मंदिर वणवायौ हौ, जणीउं यो स्थान वेणेश्वर रे नाम उ प्रसिद्ध वेइ गियौ। ग्रणीं शिव-मंदिर रै ग्रलावा ग्रठै एक विष्णु रौ मंदिर भी है। कल्कि ग्रवतार स्वरूप विष्णुजी रो मदिर सम्वत् 1850 मे मावजी री पुत्र-वधू जन-कुंवरी रै द्वारा वणवायौ कह्यो जावै है। ग्रणी मदिर में विष्णु री घोड़ा पै

---

18. क्यूके सम्वत् 1784 मे इ सत मावजी महाराज नै वेणेश्वर नामक स्थान पे ज्ञान प्राप्त वियौ हौ ग्रर वणा हीज वेणेश्वर धाम री थापना कीदी ही। एतदर्थ मेळा री शुरूग्रात सम्वत् 1784 उं मानणो उचित जचै।

सवार मूर्ति है। घोड़ा रा तीन पैर तो जमी पे टिका हुया है अर एक पैर जमीं उं थोड़ो क ऊंचो है। कह्यो जावे है के यो पैर धीरे-धीरे जमी री तरफ भुकतो जाइ रियो है। एक दिन अस्यो आवेगो केवै है कै जदी यो पैर दूसरा तीन पैरा री तरा उं जमीं पे जम जावेगो तो वणी दिन आखे ससार में पेला कदी नी वीयो अस्यो फेर-वदल वेई जावेगा।

सम्वत् 1990 में अठे ब्राह्मणां ब्रह्माजी रो भी एक मदिर वणवायो है।

अणी धाम पे स्नान रो घणोइ महत्त्व। हर साल हजारा लोग अठै आइनै आपाणां स्वर्ग सिधार्‌या सम्बन्धियां रे प्रति वणां री सद्‌गति री कामना करतां वणां री अस्थियां विसर्जित कर नै पितृऋण उं मुक्त वै वे।

यो भी सुण्यो जावे है के वामन द्वारा राजा वली रौ जो जज्ञ भग कौ दो गियो हो वो स्थान यो ही ज है।

वागड़ में शायद ही कोई अस्यो वेगो जो मावजी महाराज रै श्रीनाम अर श्री वेणेश्वर धाम उं परिचित नीं वै।

मावजी महाराज रै द्वारा रचित मौखिक साहित ने लिपिवद्ध तथा हस्त-लिखित साहित रो अनुसन्धान कर वणीं नै व्यवस्थित रूप में सम्पादित करवा रो काम शीघ्र ही हाथा मे लियो जाणों चाहिजै। अणी तरा रौ शोध-खोज रौ कार्य राजस्थानी भासा अर साहित रै विकास रै वास्तै अत्यधिक महत्त्व रो है ही ज। आज मावजी रौ आपांणै-आप में महत्त्वपूर्ण साहित अलग-अलग जाग्या विखर्‌यौ पड़्यौ है। वहुत कुछ साहित तो सावला ग्राम में है ही ज पर अणी रै अतिरिक्त भी पूंजपुर, वासवाड़ा, शेपपुर, डूगरपुर तथा मेवाड रा दक्षिणी हिस्सा मे विद्यमान है। मावजी री रचित पोथिया मोटा कागद पै, लाख उ वणी स्याही उं अर वरू उं वड़ा-वड़ा अक्षरां में लिखी गई है। कठै-कठै अपेक्षित मात्रावां रौ अभाव वेवा उं रचनावां ने समझवां में घणीं कठिनाई रो सामनो करणो पड़े है। अणा री रचनावां रौ दूजी कणी भाषा में भावानुवाद नी वैवा उ वाहरी क्षेत्र अणां उं अनभिज्ञ ही रियौ। मावजी रै वारे में अठी नै या कहावत भी प्रसिद्ध है के 'मावजी नीं वाणी नैं पाणी नौ कोई पार नथी' यानी मावजी अतरौ साहित रच्यौ है कै संसार में पाणी रो थाह आवै तो वणा री वांणी रौ भी।

□□

कविताव‍ां

रेत री कविता

□

भगवतीलाल व्यास

राजस्थान रेत री कविता
राजस्थान गद्य माटी रो
राजस्थान वात वीरां री
यो निवन्ध हल्दीघाटी रो

खण्ड काव्य यो रूप-रंग रो
महाकाव्य है महाकाळ रो
अस्त्र-शस्त्र रा अलंकार है
छन्द छबीली जंवर ज्वाळ रो

यो प्रताप रो अमर विरुद
यो पन्ना रो वलिदान है
यो मीरां रै पग रो घुघरु
एकलिंग री प्राण है

यो धोरा रो धणी जवर
यो जोधाणो सिर मोड़ है
यो वीकाणो वढ़तो-चढ़तो
चकमक सो चित्तौड़ है

यो कुंभा रो कला प्रेम
या चूण्डा री सैनाणी है
मूरा री सिणगार भोम या
तलवारां री पाणी है

लोकतन्त्र रौ यो दिवलो है
किरत्यां चारुंमेर दिपै
इणरै ऊजळ जस रै आगे
सूरज-चंदा कठै छिपै ?

मैंनत मुळकै खेत-खेत में
चिमन्या घणी दड़ूकै है
निरमाणां रा सै कामा में
नर-नारी सब ढूकै है

शिक्षा रौ उजियाळौ फैलै
मन रा सगळा मैल धुलै
रोग, राड़ अर रिण मिट जावै
जद धरती रा भाग खुलै

राजस्थान कोर हिवड़ै री
तूफाना में जनम्यौ जायौ
मोत्या मूंधौ, केसर पीळौ
मान वधै दिन-रात सवायौ

राजस्थान सुपन आख्या रौ
राजस्थान हेत री भाषा
यो पड़उत्तर सब प्रश्ना रौ
मिनख जूण री है परिभाषा।

□□

मरुगंगा

□

श्यामसुन्दर 'श्रीपत'

मरु री थाळिया थिरकण लागी, आकड़िया ली अंगडाई हैं।
मुरटा मुळकी खींपा किलकी, अज बोरड़िया बौराई है ॥
खेजड़ियां खुसिया में झूमै, अर कैर-फोगड़ा करै कोड।
झूमण लागी जूनी जाळां, हद मोद मनावण मची होड ॥
मोरिया वोल अमरत घोळै, अण थक नाचै है अलवेला।
जगळ मे मंगळ आज मच्यौ, मरुधर मे मनखा रा मेळा॥
कण-कण में भरिया हरख-कोड, मनड़ां मे मोद न मावे है।
आई है पुळ अमरत वाळी, उड सुगन-चिड़ो वतळावे है ॥
अज मरुधर रौ दिनड़ौ जाग्यौ, दुष्काळ छोड़ घर जावै है।
गंगा छळकाती रस गागर, मरुधर मे दौड़ी आवै है ॥

'हेमाळै' सू 'हरिका' आतौ, पड़गी काने मरु री पुकार।
उत्तर-पश्चिम री दिस उमड़ी, ऊजड पग धरती गंगधार ॥
मुळकण लाग्या मरु में मधुवन, पग-पग फूटी है फुलवारी।
अमरत जळ पीती अवनी री भई सुरगा सूं सोभा न्यारी॥
किलकण लागी क्यारी-क्यारी, खिलकण लागा खलियान खेत।
ज्यू लूवाळी लिछमी आई, रिधी-सिधी गणपत समेत ॥
या भाग्य रेख थळ रै लिलाड़, खुद वेमात चितराई है।
या वसुंधरा खुद सज सिंगार, मोत्यां सू माग भराई है ॥
मरु-सरिता रा गुण गीत आज, गधर्व स्वर्ग में गावै है।
गगा छळकाती रस गागर, मरुधर मे दौड़ी आवै है॥

जळधार नहीं आ ! मनखां रे, कळ-बळ-बुद्धि री चमत्कार।
या टूट पड़्यो थळियां मार्थं, 'इन्द्राणी' रो गळ हीर-हार ॥
या मरुधर मांन-सरोवर में, उतरी है हंसां री कतार।
या निरजण में सिरजण रा सुर, झणकाती सुरसत री सितार॥
या जस-गाथा जूझारा री, साकार रूप ले आई है।
या महिसासुर-दुकाळ मेटण, मा दुर्गा खड़ग रचाई है॥
या डाळी देवतरु री है, या कामधेनु री दूध धार।
या अन्नपूर्णा खुद आई, मरु में सज नैं सोळै सिंगार॥
कविता-कामण दे-दे उपमा, मरु-सरिता नैं चितरावैं है।
गंगा छळकाती रस गागर, मरुधर मे दौड़ी आव है॥

आई है अवखाया मेटण अवनी सरसावण आई है।
उपजावण आई अन अपार, सीमा रुखवाळण आई है॥
रुखै-सूखै-निरजळ थळ मे, आ रस बरसावण आई है।
भारत री की। भूमण्डळ री, आ भूख मिटावण आई है॥
काकड री क्वारी थळिया री, आ ब्याव रचावण आई।
आ कोड करावण मोद मनावण, वस बधावण आई है॥
भय-भूख-प्यास संताप रोग, त्रय-ताप मिटावण आई है॥
म्हारी मावड़ री कविता नैं, साकार सजावण आई है।
आदर श्रद्धा निष्ठा सागै, कवि 'श्रीपत' सीस नवावैं है।
गंगा छळकाती रस गागर, मरुधर में दौड़ी आवै है॥ □□

मन री माँदगी

□

श्यामसुन्दर 'श्रीपत'

करण कमाई सारु पूगा
मरुधर छोड़ दाखणे देस।
लूर रमण लागी घर लिछमा
ग्रासू दाई वर्णी विसेस—

मालक बण्या बड़ी मीला रा
क्रोड़ा रा है कारो वार
ग्राठ-सिद्धि नव-निद्धि ग्रड़वड़ै
सुख-सम्पत ऊभा घर द्वार—

पग्रण की सोने सूं पीळी
सिख सू नख तक दी सिणगार
मोती-हीरा-पन्ना-मांणक
हरखै गळ विच नवलख-हार—

दूधा रांधे, घी मे खावै
ग्राणंद रौ की ग्रौर न छोर
तन माथै सुख री निरवाळी
पण ! मरै मादगी सूं मन मोर—

लाख इलाज किया लखपतिया
नी निकळ्यौ कोई नीदाण
डाक्टर कोरौ डील तपासै
ग्रंतस री किण नै उळखाण—

देखण ग्रावै वैद-डाक्टर
हर फेरी री, फीस हजार
गोळ्या ले-ले थाकी गोरड
कोई दवा न कीनी कार—

कोरी तन सोरप की कम री
मनड़ै री नीं सार सम्भाळ
बीमारी म्हारी बालम जी
हिवड़ै करी भूख-हड़ताल—

तन तिरपत मन भूखौ-तिरसौ
तड़फै बिलखै हुवै ग्रचेत
डाक्टर कनै न इण री दारु
बालम तूं बैगेरौ चेत—

सुख-सम्पत-दौलत में सड़गी
गळगी खा नित चावळ-दाळ
पड़गी मौंदी नळ रै पाणी
मरगी खाय मलीदा-माल—

मन रौ रोग मिटै नी धन सूं
साची कैवों रती न कूड
पर धरती रै रेवण लारै
राळौ धौवे-धौवे धूड—

दाय न ग्रावै कारा-बंगला
खांन-पाव निरलजिया भेस
म्हारै मन रो रोग मिटैला
ले हळ थळियां वाळे देस—

कैर-फोग-जाळा-खेजड़िया
पाका-पीलू-बाजर-पूख
कंथा ! मनड़ौ हुवै करारौ
(हूं) निरखू जद मरुधर रा रुख—

सानै-री नगरी री गळिया
हीडो बैठ सावणी तीज
कंथा ! मनड़ौ हुवै करारौ
खावां जद बाजरियो खीच—

गावा बैठ गीत गोखड़ियें
लावा सरवरिये सूं नीर
खण में रोग मिटेला खाया
मींठा काचर-बोर-मतीर—

खेतां री फळियां काचर रौ
भोळू साग बखाणण जोग
घी मे में मसळ खोचड़ौ खायौ
मिटसी म्हारे मन रौ रोग—

घर-घर गोरड़िया गूजावै
'पणिहारी' 'सावण री तीज'
सुण बादळिया दै सावासी
वरसै बादळ पळकै बीज—

कंचन वरणा जठै कंगूरा
नीलम वरणां निर्मळ नीर
केसर वरणी कामण श्रोढ़ै
चिरमी वरणा भीणा चीर—

ऊची मैंडी लाल किंवाड़ी
बारी श्रावै ठण्डी बाय
हिंगळू पागां सेज सुरंगी
सुरगा रा सुख दो विसराय—

बालम ले हल मरुधर वेगी
तौ ही बच पासी श्रा। प्राण
नी तो तड़फ-तड़फ मिट जासी
थाई पर घर रा सुख माण।—

□□

गीत

□

मोहम्मद सदीक

म्हे धरती रा लाडेसर हा
नांव है म्हारो भारती
मीठा गीत मिलण रा गावा
जगत उतारैं ग्रारती ।—म्है धरती रा…

समता रा सिरमौड़ जगत में
जनतन्तर रा हामी हा
मिजमानी मिनखाचारैं री
ग्राखैं जग मे नामी हा
धन-धन म्हारैं सस्कार नैं
सगळा धरम सरी सा है ।—म्है धरती रा…

रण बंका नर नार सवी
निज धरा धरम नैं धारणिया
निछरावळ कर दें प्राणा री
जीवन-धन नैं वारणिया
समय परख सी ग्रा वचना नैं
साची कोर जरीसा है ।—म्है धरती रा…

मन रा मोम बोल मे मीठा
मोल कर्‌यां लाखीणा है
फणधर घाल गळै में घूमै
ऐ शारद री वीणा है ।

सोरम च्यारू मेर फैल सी
कंवळा कमळ सरीसा है ।—म्हैं धरती रा···

सुख रै सरवर पांख पंखेरू
हरियल रूंखा ग्राळा है
बागां वेल फळै फळ लागै
पवन गळै गळ माळा है ।
माळी रौ मन माळी जाणै
च्यारूं वरण हरीसा है ।
म्है धरती रा लाडेसर हा
नाव है म्हारौ भारती ।
मीठा गीत मिळण रा गावा
जगत उतारै ग्रारती ।

□□

गीत

□

मोहम्मद सदीक

आ' सड़क सरीसा करनाखै
तू थोड़ौ सो तो वारै आ
आ' भलै बुरा रा पग चाखै
तू डरमत म्हारै लारै आ।

अड़ा भीड़ में खा धक्का
चेतै री चमरख टूटी है
मिनख र्‌यौ गरळाय
धणीरी दोन्यू आंख्यां फूटी है
ले-परख जमारौ जामण रौ
तू मोड़ौ मत कर सारै आ

वा'-देख गूगली अद् गैली
ऊपर स्यू नीचै नागी है
कामी कूकर र्‌या ताक रै
भूख भड़क कर जागी है
आं-गरब गुमानी भीता नैं
अब-वेगौ सो तू ढारै आ

लजखाणी होवै मिनख जूण
सड़कां पर सरणाटौ छावै
ममता रौ माथौ नीचौ है
गोदी में काया कुमळावै

तूं मिनख जात रौ हत्यारौ

म्है पुरस र्‌या तू खा रै ग्रा

चकवौ बोल्यौ सुण चकवी

फळ र्‌या कठै इण तरवर मे

नर-मुंड घड़ां पर भारी है

जळ र्‌यौ कठै इण सरवर मे

तू बडै गाव रौ गीतारौ

लै' म्हारै सागै गारै ग्रा।

ग्रा' सड़क सरीसा कर नाखै

तू थोडौ सो तौ बारै ग्रा।

ग्रा' भलै बुरा रा पग चाखै

तू डर मत म्हारै लारै ग्रा।

□□

मुंहगै मोल मिळी आजादी

□

भीम पांडिया

ओ कुसळै रो कोट
भीव रखवाळो है।
परम आसरै पैठ
न्याय नखराळो है।

मुहगै मोल मिळी आजादी
हुलस पांवडा दैणा है।
जगत गुरू वण जीव जनारां
ऊँचा आसण लैणा है।
सरव तेज सूरज रै भळकै
जोतमजोत सुवारै रे।
मुंहगै मोल मिळी आजादी
नीवां मे हुंकारै रे॥

उरळै हियै भाईपै भेळा
सुख-दुख सागै सैणा है
पीड़ पराई परळै तांई
म्हारी है के कैणा है
अमर जोत चादड़लै पळकै
जोतमजोत सुंवारै रे

मुहगै मोल मिळी आजादी
नीवा मे हुंकारै रे

ज्ञान जोत सूं जोत जगावा
प्रेम भाव पसराणा है।
न्यारा-न्यारा नाँव-गाँव पण
आखर अेक ठिकाणा है।
परम जोत सगळा मे व्यापै
जोतमजोत सुँवारै रे।
मुहगै मोल मिळी आजादी
नीवा मे हुकारै रे ॥

□□

गणपत गूँजैलो

□

भीम पाँडिया

गूँजैलो गणराज गणपती
घर-घर गणपत गूँजैलो
पाप-पूतळो पाप करंतो
पग-पग धूजैलो
गणपत गूँजैलो
गूँजैलो गिगनार
धरा रै सामो आसी रे
गणपत गूँजैलो

घणा दिया बलिदान नगीना
जद आजादी आयी है
लाल किलै पर चढ्यो तिरंगै
धज फुरकाई रे
गणपत गूँजैलो
अबै न चलसी खोटो सिक्को
धरम-भरम पसरावणियो
अटपट-गटपट पथ न चलसी
राखस रावणियो
गणपत गूँजैलो
मतर अेक रिस्या रो अेको
धार धरम जद जाग्या हा
भारत रो भुजबळ जाग्यो हो

फिरँगी भाग्या हा ।
गणपत गूँजैलो
अणु-अणु में आपाँ परमाणू
पग-पग लाय बुझावाला
डरूँ-फरूँ म्हे नहीं
मानखो-धरम जियावाला
गणपत गूँजैलो

गणतंतर री गगा-जमना
कुण है धूड़ रळावणियौ
बळसी आपोआप लाय मे
लाय लगावणियौ
गणपत गूँजैलो

अबै न चलसी बीज फूट रौ
कुळछौ देस गँवावणियौ
मसकरियाँ में बात टाळियाँ
मरसी टाळणियौ
गणपत गूँजैलो

मिंदर अर मसजिद गुरुद्वारा
गिरजा अलख जगावाला
राम-रहीम-ईस अर ईसा
अेक लखावाला
गणपत गूँजैलो

धरम-करम सूँ सदा सँवरसाँ
धन धरती रौ आँगणियौ
भिनखा धरम डिगायाँ डिगसी
डोड डिगावणियौ
गणपत गूँजैलो
गूँजैलो गिगनार
धरा रै सामौ आसी रे
गणपत गूँजैलो

□□

गीत

□

रामनिवास सोनी

रे माटी मोट्यार अगाड़ी वढणो है।
किण री जोवै वाट अगाड़ी वढणो है।।

सामैं धकिया टोळ अजव अरड़ाट करै
संमदर उफणै नीर कड़ड़कड़ बीज खिवै
धरती हालै सेसनाग रो चकर चवै
लोई वरसै गिगन मिनख वे मोत मरै
पण हिम्मत रै पाण अगाड़ी वढणो है—
रे माटी मोट्यार ....

चाली जमी नै चीर पाधौ गेलो है
जीवण तो सासां रो अेक झमेलो है
रुक मत जइजे प्रीत पांगळो पथ लाजै
उगतो सूरज देख अपूठो क्यूं भाजै
माथै वधियो मौड़ अगाड़ी वढणो है
रे माटी मोट्यार........

मिमता री मनवार मगन मन चकरावै
ज्यूं चकरी री डोर चोर चित चकरावै
भरम भाव री उळझी गांठां कद सुळझै
निजरां सामी रतन ताकड़ी तुल ज्यावै
खुद री जुगत पिछाण अगाड़ी वढणो है
रे माटी मोट्यार........

कदम सांवटी राख मजल सामी ग्रासी
निरख चानणी रात ग्रंधारी ढळ ज्यासी
पथ नुग्रो निरमाण हुवै जद प्रीत फळै
जीवण रस री धार समै रे पार बवै
माड ग्रमर सैनाण ग्रगाड़ी वढणो है
रे माटी मोट्यार······ ···

□□

गजल

□

अरविंद चूरुवी

आज री कविता अखबारी लागै है,
कवियां र छपास री बीमारी लागै है।
थे जिकी गाई काल्है कवि मंच पर,
म्हानै तो वा राग दरबारी लागै है।
खेत म्हारो चरग्यो, वाड़ लांघ कर सारो।
आयोडो कोई सांड़ सरकारी लागै है।
दो मिनक्यां, एक रोटी, एक ताकड़ी,
तोलण वाळो वादरो व्योपारी लागै है।
गुड़तो पड़तो, चुनाव रै बन्दोबस्त मांय,
दारू में धुत्त आवतो पटवारी लागै है।
भीड़ री नी सरम-शंका काण-कायदो,
नर गोदियां में सूत्योड़ी पर नारी लागै है।
आख माथै पाटी बांधै, कान सैं देखै,
धृतराष्ट्र लारै जावती गांधारी लागै है।
दाव माथै मेल दी जनता री द्रोपदी,
पांडव ज्यूं नुमाईन्दा जुआरी लागै है।
फूट री फरी सी, इंदर री परी सी,
'अरविंद' नै आ राजस्थानी प्यारी लागै है।

□□

गजल

□

अरविंद चूरूवी

पाणी पाणी मै चिल्लाऊ पाणी कठै है,
तेल सूकग्यो ग्रा तिला को घाणी कठै है ?
उड़ती रेत नै तपता धोरा, बाजरी फीकी मोठ रै फोरा;
देखी खेती, हालो ! थारी ढाणी कठै है ?
कोई खावै दूध नै फीणी, कोई कूकै चीणी चीणी !!
ईं गरीब रै खात्रा नैं गळवाणी कठै है ?
वेल वटम सलवारा वाजै ग्राज कठै तलवारा वाजै ?
बोल मेरा चूडावत वा सैनाणी कठै है ?
गळी - गळी गैलणा दोडै, दे तलाक घरा नै फोड़ै,
पति नै परमेसर मानै वा स्याणी कठै है ?
वेतुका सपादक होगा, वेतुकी लिखै है लोगा,
वै मीरा रा पद, मीसण री वाणी कठै है ?
पुराणा गया नयोड़ा ग्रागा म्हानै तो ग्रै सगळा खागा,
सुख, स्यान्ति ग्रमन-चैन री व्हागी कठै है ?
म्हे मान मोकळौ देता वै ग्यान मोकळौ देता,
ग्यानी गरू म्हारा ऐ गुराणी कठै है ?
दामी हा छिदामी हुग्या, वगाली-ग्रासामी हुग्या,
करण सरीखा दानवीर रजयागी कठै है ?

□□

व्यंग्य

चूंटक्या-चवड़का

□

(1) करुण रस

करुण रस रे कवि री परिभाषा
करी जा सकै है यूं
''अंधेरी—आधी रात में सूनी गळ्या में
घुचरिया कूकै है ज्यूं

(2) पक्का समाजवादी

वै पक्का समाजवादी हा,
बेटा री शादी में
बीनण्या नै गैणौ देणौ दूर
समधी सूं दायजौ मागण रा आदी हा।

(3) रेपसीड

सिरस्यूं रै तेल मं
सित्यानाशी री मिलावट सूं डरप नै
खाणै में वरत्यौ रेपसीड़;
तो 'रेप' री आवण लागी बाढ़
सतान होवण लागी 'हाई ब्रीड'।

(4) पैसे वाळा

पैसै वाळा रा पैसै रै कारण
सिर गरम अ'र हाथ ठंडा होवै;

वै सरदी मे भी रात रा
पंखा चलाय नै सोवै।

(5) लड़ाई

भाई-भाई सू लडै;
घणी—लुगाई सूं लडै;
'कीमत माटी/मं रळादी म्हारी'
रिपियो पाई सू लडै।

□□

पाँच डाँखळा

□

(1) गीतकार

गीतकार आया स्टेज पर 'कठ पपीहो' खाकर,
सोच्यो लोगां रो मन वहलावागा की गाकर;
गावण लाग्या जद—
धूजण लाग्या तद—
हांसण लाग्या लोग, बैठग्या वै जाकर।

(2) बीबी भगत

देख गरम बीवी नैं ठंडो कर लेता रगत वै,
देख नरम बीबी नैं बण ज्याता सगत वै;
नी कोई हा दूजा—
बीवी री करता पूजा—
बीवी ही भगवान अ'र वी रा हा भगत वै।

(3) बड़ी उमर री शादी

कुवार पणै मं वै तो बिताई उमर आधी,
पिचपनवैं साल मे करी एक शादी,
संवारै वे उठ्या चौक—
निजरा म धूळ भौक—
बीबी जाणै कठै न्हाटगी हरामजादी ?

(4) फिल्मी ताड़का

फिल्मी ताड़का री ज्यूं हँसती हा हा हा,
और बॉय फ्रैंड सू करती चा चा चा;

टब में नहावती—
सीटी बजावती—
साबण लगाती, गाती ड र डा डा डा।

(5) मोटी बीबी

है यो मोटी बीबी पतळै पति री किस्सौ,
पतणी मार मार कर हाथा री घिस्सौ;
करती किनारै पर—
छा ज्याती सारै पर—
बिछावण रौ रोकती तीन चौथाई हिस्सौ।

□□

गजल

□

कल्याणसिंह राजावत

जमै ना जमी जग, नापतौ फिरै
श्राफत में श्रादमी हापतौ फिरै

ताकत तोली घणी, मैंणत मोली घणी
श्रो धरती रौ धणी, कापतौ फिरै

मिलै ना मजूर रै होयगा हजूर सै
श्रेकलौ खजूर, छाव भापतौ फिरै

पूछलै गरीब नै, देखलै श्रमीर नै
गमियोड़ै धीर नै, भापतौ फिरै

भूल तेग धार नै, वीरता रै वार नै
धूळ धो धार पग, चापतौ फिरै

छोड प्रीत रीत नै, गीत नै सगीत नै
रहियौ ना मीत निजर टापतौ फिरै

□□

हार मती

□

कल्याणसिंह राजावत

हार मती रै मरद मानवी,घणा काम की जिनगाणी
दौड़ी जावै दड़ा छन्द ग्रा, नाप, नापती जिनगाणी
ध्यावस ले लै सुस्तालै पण, थाक थकैलै बैठ मती
मारग ग्राधौ, मजला ग्राधी, ग्राधै गेलै बैठ मती
जोस जवानी, रख मरदानी, मना, ह्रापती जिनगाणी।
कातर कातर जोड़ जोड तू, सीख सीवणी दरी जरी
पैंड पैंड़ पावडा धरता, जीत हुवैला खरी खरी
समझ समझणा थारी है रै, भरम, भापती जिनगाणी।
ग्राखड़िया तो फेर सभळसी, समळ समळ ग्रागै वधसी
घुड़लै रा ग्रसवार हुवै, चढै, पडै पड़ पड़ चढ़सी
थकिया तो थिर थार हुवैला, चाप, चापती जिनगाणी।
पछतावौ मत कर गफलत रौ, सुरज उगै, जागै जद ही
वीती वीती समझ बीतगी, ग्रासी बा ग्रासी ग्रब ही
घणी पडी है, घणी वडी है, नाच, नाचती जिनगाणी।
तू किणसूं कमती कोनी रै, तू सब सू वधतौ वधतौ
तू किणसूं पाछै कोनी रै तू सव सू ग्रागै वढ़तौ
हीण भाव रो भूत भगा दे, जीत, जीवती जिनगाणी।
दौड़ी जावै दड़ा छन्द ग्रा, नाप, नापती जिनगाणी।

□□

मन रा फूल खिलातौ चाल

□

उदयवीर शर्मा

मैं रौ मनड़ौ रखतौ चाल।
मन रा फूल खिलातौ चाल।
जे मिळ ज्यावै भटक्यो पंथी, वैं नैं राह बतातौ चाल।
ऊच नीच रौ भेद भुलादे, मिनख मिनख सैं भाई है।
म्हैल पोढणो धरा लोटणो, जैं रैं ठीक कमाई है।
प्यार करो हिरदै मूं सैं नैं, लूलौ हो चाहे लंगड़ो हो।
मिनख पणे रौ रतवो राखो, या ही सार कमाई है।
सैं रो धरम निभातौ चाल।
मैं नैं गळै लगातौ चाल।
वैर-भाव रो जैर निगळज्या, इमरत सैं नैं प्यातौ चाल।
वणै ठणै मिनखो नित जावै, मन्दिर मस्जिद गुरुद्वारा।
धरम-धरम में भेद रोप दै, जग झगड़ै थारा-म्हारा।
साचे दरपण में जद दिखसी, सैं रौ ईश्वर एक है।
जैर कूप जद ही सूकैगो, प्यार पनपसी जद प्यारा।
सैं रौ भरम मिटातौ चाल।
सैं नैं सत्य दिखातौ चाल।
दुनी दुरंगी इकरंगी हो, इसड़ो रंग उडातौ चाल।
कोई धन मू दब्यो फूलरयो, कोई रा तम्मड़ चिपरया।
कोई कै रै फाका मस्ती, कोई बरबर में गिटरया।
सरकी तम्बू तळै दुबकरया, कोई महला मे पोढै।
फट्या पुराणा पूर लपेटया, कोई इज्जत नें ढकरया।
इसड़ो भेद मिटातौ चाल।
दुख नैं सुख में करतौ चाल।

जन-मन मंगळ गावै मुळकै, इसड़ौ पाठ पढातौ चाल।
विसवासां रा रूंख उखड़गा, मूठ बेल फूलै-फळपै।
चाड़ खेत नै खावण लागी, भाई पौ वैठ्यौ कळपै।
हाथ-हाथ सू अळगौ होग्यौ, ठौड़ ठौड़ न्यारा कमठाण।
सुकरथ करणौ एकौ रुळगौ, वैर भाव फैल्या थळ पै।

सै नै आग दिखातौ चाल।
सै री रूप बदळतौ चाल।

सै री हिरदौ बदलै वैगी, इसड़ौ गीत सुणातौ चाल।
सत भावा रै दळ-बादळ सू, प्रेम नीर जग में भर दे।
ऊबड़-खाबड़ धरती सगळी, जन हित मे समतळ कर दे।
म्हैल झूपड़ी तैड़ै आवै, धाप्यौ भूखै रै नैड़ै।
रळ मिल कै सै रास रचावै, भेदभाव ऊंडा धर दे।

जग-मग जोत जगातौ चाल।
जग झगड़ा नै मिटतौ चाल।

सत जुग आवै फेरूं वैगी इसड़ा करम करंतौ चाल॥

□□

मिनखा सूं कर प्यार करै तौ

□

उदयवीर शर्मा

मिनखां सूं कर प्यार करैतो, यो ऊंचो अरमान है।
ई में सफल हुयो तो प्यारा, धरती सुरग समान है।
जात-पांत री डोळ वणो ना।
धरम-धरम री होड करो ना।
हीणा-क्षीणा भाव भरो ना।
जन-जन सू इव भेद करो ना।
इण धरती पर चालणिया सै, भाई एक समान है।
दुखियारै नै गळै लगाणो।
भटक्योड़ै नै पंथ बताणो।
अटक्योड़ै नै पार लंघाणो।
भूखै जन रो हियो सिलाणो।
भेद-भाव सू दाज्योड़ै री, पीड़ मिटाणो मान है।
हाड़-चाम-तन एक रूप है।
ईश्वर रो सै में सरूप है।
अन-जळ-धरती एक धूप है।
आखी कुदरत एक रूप है।
जैर भद रो क्यू कर फैल्यो, सै ईश्वर सन्तान है।

□□

हाइकू

□

माधव नागदा

प्यारी हिन्दी
भापावा रै माथं पै
रूपाळी बिन्दी

□

राजस्थानी भासा
पाच करोड़ मिनखां रै
मनड़ां री ग्रासा

□

मजबूरी
काकड़े खेती
दोइ पग वाळा
रात ग्रंधेरी
बळद दोइ काळा
घर मे नार करकसा
पाड़ौसौ दोइ साळा

□□

च्यार क्षणिकावाँ

□

केशव पथिक

रोटी

कुण दीनी
थनै ग्रा
ज्ञान री घोटी
जणी सू—
पोवै थू
लूण री रोटी।

□

पेट

ग्रो—
पापी पेट
खोटा काम करावै
राम री मूरत नै
मन्दिर सू चुरावै।

□

कागला

ग्रणा दिना
बोलै नित
रात में कागला,
दुःख सू बीतला
ग्रबै दिन ग्रागला।

काणो

म्हे—
एक बात
बरसा सूं जाणा
व्हे रोकड़ा तो
परणे काणा।

□

बोरक्या

आज तो
गाव मे
बोरक्या आया है।
छोर्यां रे वास्ते
लिपेस्टिक लाया है!

□□

ईयाँ नै समझावै कुण

□

श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष

ऐ, हाथ फगत भाटा वाय सकै
खिड़की रा काच तोड़ सकै
धवळी नै ऊजळी भीतां माथै
ऊंधा सूधा वोल मांड सकै
वोलो—ईंया नै रोकैला कुण !
भला समझावैला कुण !
ऐ हाथ, गरीब री गावड़ झाल सकै
गूगा जिनावरां नै मार सकै
ग्राधा री लकड़ी न्हाक सकै
चालता रै थप्पड़ बाय सकै
वोलो—ईं यां नै रोकैला कुण ।
भला समझावैला कुण ।
ऐ हाथ, ग्रापरै गुरु माथै ऊठ सकै
परीक्षा म्है नकला मार सकै
पढण जोग पोथियां फाड़ सकै
चाकू नै छुरियां चला सकै
वोलो—ईं यां नै रोकैला कुण
भला समझावैला कुण ।
ऐ ई ज हाथ—नवी नवी रचना माड सकै
नवी नवी खोज कर सकै
ग्रापरो घर संवार सकै

देस रौ नाम कर सकै
बोलौ—इयां नै नुवौ गेलौ वतावै कुण
इया नै सूधै मारग घालै कुण।
ए ई ज हाथ—एक दूजै सूं मेळ कर सकै
काची कूपळ ज्यू लुळ सकै
कोरा कागळ में रंग भर सकै
प्रेम रा नुवा बीज बाय सकै
बोलौ—इया नै साची वात वतावै कुण ?
इयां नै प्रेम सू समझावै कुण।
बतळाय देखौ थे, मारग घाल देखौ थे।
ऐ इ ज हाथ—धरती नै सुरग वणावैला।
ऐ गीत हेत रा गावैला ।।
ऐ बीज प्रेम रा वोवैला
ऐ चैन री वशी बजावैला ।।

□□

चुप रै कीं मत कै

□

धनञ्जय वर्मा

अकास माथै कुण थूकै, साची कैतो कुण चूकै
सुण्यो हो' क
चौरासी लाख जूण भुगतै पछै
बड़ी मुस्किला सूं ओ मिनख जमारो मिलै
पण श्री मे भी इतरी अडचना
क' आदमी सह तो—सह तो आसतो होजा
हु तो धायो ई जिन्दगी सू
का'ल आती मौत
चायै आज ही आ जाओ

दीयै में अटक्योडी जोत
आख्या लागी दीखं मौत
अटी में दवियो नाणो
अर खुद ही फिरूं उभाणो
रगदोल्योड़ी गळी, सूनेड़ सूं जड़ी

भूख जागै करम सोवै
पाप आगै धरम रोवै
ठसूड़नं सू बढ़गी थोथ
दूज पछै आगी चौथ
तिथ टूटै, पण सास नी छूटै,

पेट री सळां चेहरै तक ग्रागी
ग्रधमरेड़ी भूख ग्राकासां छागी

एक हाथ में परमटियो
ग्रर दूजोड़ै में बोरो
ग्रांख्या ताकै मौत नैं
जीणो किसो' क सोरो

मां होता टाबर बिलखै
ग्राख्या सामी ग्रंधेरो चिळकै
खुसिया भेळै नाचो ग्रर गावो
भेलदयो ग्रनाज कोठार में सठावो
तूं ही बता, तनैं दीया बचै कींया
सिराणै रजाई मरतो रैं सींया

बाबोड़ै नैं पुरस गारी, बोळै ग्रागै झालर बाजै
सांवण में तो सूको पड़ज्या, उन्याळै में डाफी बाजै
भटक्यो भगत बदळग्यो रगत
सुग्रांखो पीसै गण्डक चाटै
रेसमी तार लोहू नै काटै

प्यावस राख सो क्यूं ठीक हो जासी
ऊंघ मत नींद खातर लीया जा उदासी

(नुवो जमानो ग्रार्‌यो है)
उथळो देसी बोळियो ग्रर ग्रांधियै नैं सूझसी
पागळियां ग्रब भाज्या जासी गूगो बात बूझसी

गेऊं तो है भोग खातर, घी बच्यो है रोग खातर
तेल नै भैरुजी पीग्या, मूगाई सुण मरता जीग्या

कीड़ी री लात सूं, हाथीड़ो मर जासी
बीड़ी री बाल सूं, कपड़िया जळ जासी

कुण करै' लो कुग्रो खाड़, टाबरियां री ग्रागी बाढ़
मारणै री सोचै, धीगाणै जी जावै

नींद री गोळी सूं दोरो सांस आवै
माथ नै ढकणै री सोची, पैरा पासी उगड़्यो
टेब देई पेट रै, पण फेरू बळियो ऊघड़्यो

आटो पीसणै री कैं वै तो दळियो दळ दे
काम करणे री कैं वै तो चुपकै सी चल दे
गळै लगा' र दुलत्ती भाड़ दे
स्याणो—सोतो रै अर पूरिया फाड़ दे

तो थोचै री मार सूं साप लो मरजासी
स्याणा री सीख सू गाव उजड़ जासी
श्री खातर—
चुप रै की मत कै

□□

बात अर गाळ

□

इन्दर ग्राउवा

भायला
तू म्हनै बात मत कैव
बात, मीठी हुवै मिसरी-सी
बात, कंवळी हुवै केळै-सी
बात, घोली हुवै दूध-सी
बात, भोळी हुवै टाबर-सी
बात, फूटरी हुवै
पूगलगढ़ री पदमणी-सी !
पण⋯पण⋯
बात, झूठी हुवै काणी-सी ! !
बात नकली हुवै रोल्ड-गोल्ड-सी
अकल रा पालिस स्यू चमाचम करती
नेतावा रै भाषण-सी
चमचा री बड़ाई-सी
ढोल-सी थोथी
बात सिरफ बात हुवै
भायला तू म्हनै बात मत कैव ! !
भायला थू म्हनै गाळ काढ़
गाळ खारी हुवै जैर-सी
चूभै कैर-सी
काळीदार सरप-सी काळी

बोरड़ी रा काचा बोर-सी ग्राळी
मिनकी-सी सूगली, रीसली,
बिच्छू ज्यूं डंक चुभोवती
गोयरै ज्यूं खारो-खारो जोवती
गाळ !
हिड़क्यै गंडक री लाळ
पण···पण···
माळ साची हुवै
मनड़ै री मैड़ी तोड़, हिवड़ै री भीतां तोड़
ग्रकल री कांचळी उतार, त्याजां नै ग्रागा वगा'र !
जलमतोड़ै टावर-सी नागड़ी तड़ंग !
हुवै जिसी सामी ग्रा जावै !!

□□

गाँवाँ में हिन्दुस्तान वसै है म्हारौ

□

इन्दर आउवा

गाँवा मे इन्सान वसै है म्हारौ
गाँवां मे भगवान वसे है म्हारौ
गाँवा में हिन्दुस्तान वसै है म्हारौ,
आ धूल भरी गळिया में हीरा खेलै
आ आगणियां में बँनड़ वीरां खेलै,
आ खेता मे मैणतिया रास रचावै
आं खळा माय करसा मोती वरसावै
काकड़ काकड़ गूजै है अलगोजा
कूकू पगल्या चिलकै खोजा खोजा,
पिणघट पिणघट हेत प्रीत री बाता
मिलै मिनख सू मिनख अठ मुळकाता,
गाँवा मे वीर जवान वसे है म्हारौ,
गाँवा में धीर किसान वसे हैं म्हारौ,
गाँवा मे हिन्दुस्तान वसे है म्हारौ,
आ भूपां रा भागीरथ गंगा ल्यावै
अै भीम भूपड़ी आळा बाध वणावै,
अै राम समंदा सेतबन्ध वाधै हैं
अै किसन उठाया गोवरधन काधै हैं,
अै सड़का मीला नहरा रा निरमाता,
आ पूता पर गरब करै है भारत माता,
गाँवा में बलराम वसै है म्हारौ,
गाँवा में हनुमान वसे है म्हारौ,

गांवा मे हिन्दुस्तान वसै है म्हारो,

अैं नेम धरम रा मारग नैं नीं छोड़ै

अैं लाज सरम री डोरी नैं नी तोड़ै,

अैं हेत प्रीत रो पा इमरत कण-कण नै

अैं गांव जीवतो राखै मिनखापण नै

भारत री साची वाणी गांव सुणावै,

भारत री साची काणी गांव सुणावै,

गांवां मे हरिचन्द्र वसै है म्हारो,

गांवा में सत्यवान वसै है म्हारो,

गांवा में हिन्दुस्तान बसै है म्हारो,

अैं गांव देश री सीवा आज रुखाळै

अैं गांव देश री आजादी नै पाळै,

अैं गांव देश नै दै परताप शिवाजी,

आ गांवा पांण देश नित जीतै बाजी,

अैं भारत री इतिहास जीवतो राखै,

अैं भारत री विसवास जीवतो राखै,

आ गांवा मे हम्मीद वसै है म्हारो,

आ गांवा मे शैतान वसै है म्हारो,

गांवा में हिन्दुस्तान वसै है म्हारो,

□□

हाइडेल वर्ग री कविता रो अनुवाद

□

अनुवाद : अमोलक चन्द जांगिड़

(1) डीटमार फन आइस्ट (13वीं शती)

"पोढ्या हो, प्यारा पीव !
आवसी
थानै जगावसी इवरी स्यात—
नीमड़ी री टूकळया पर
बाजवा लागीजगो
पखेरुवा रो अळगोजो"
"घणी मीठी नीन सूत्यो हो
हेलै रै हाकै करयो चेत !
इव तूं जावै जितरा पैंड भराय,
फोड़ा में निपजं ऊँडो हेत"
मरवण तो डूस्क्या भरै—
"ओ म्हारा घोड़ै रा सवार !
म्हानै यूं छोड़ जासी ?
न जाणै फेर कद मिलणो होसी
ओ म्हारा ढोला !
अेक'र वावड़'र देख
थारै ळारै-ळारै व्हेरिया
म्हारा सगळा सुख'र चैन।"

वाड़ खेत नै खाय

□

शिवराज छंगाणी

गांव री सीव नै
घेरली
गगन रै अधारै
वाड़ री पाळूड़ी माय
गांव
अळसावै
अेक टोकरै री टणक
अर
अेक डोकरै री रणक
मादो मांचलियौ
मट मैलो गाभो
लीरम-लीर
पागड़ी रा खूटी टांग्या पेच
जूनी झूपड्या रा
लेवड़ां रा ढ़िगला
बळधा-गाड़ी री
टूट्योड़ी पूठ्यां
चौसगी सू सवार्योड़ी
वाखळ री धूळ
बोदौ सो वाडौ
खोरिया री भीत

गजल

□

त्रिलोक गोयल

बिना पांख रै उड़वा लाग्यो आदमी।
जाग्यो सोयो, सोयो जाग्यो आदमी॥
ज्ञान पताळ गयो, विज्ञान गिगन पूग्यो,
भू को भू पै पाछो आग्यो आदमी।
मोटा गांव गया, मोटा लाडू ल्याया,
रोटी मांगी, चांद दिखाग्यो आदमी।
मायड़ री परिक्रमा न पूरी कर पाया,
विरमाण्डां रा फेरा खाग्यो आदमी।
आंगण में तो चाल न पायो गोडल्यां,
टूटी टांगां ऊपर भाग्यो आदमी।
आंधी में दिवलो ले चाली आंधली,
होडा होडी दांत तुड़ाग्यो आदमी।
जाणे किण गांधी री सुनो सांच व्हियो,
थोथो वा वा सूं इतराग्यो आदमी।
चांदरवाळ बांध री घर में बांझड़ी,
'जीजा' सुळझया नै उळझाग्यो आदमी।

□□

सम्पर्क सूत्र

1. भीखलाल व्यास, प्र० अ०, रा० मा० वि० सवाऊ पदमसिंह जि० बाड़मेर (राज०)
2. करणीदान बारहठ, फेफाना जि० श्रीगंगानगर (राज०)
3. रामनिवास सोनी, कालीजी का चौक, लाडनूं जि० नागौर (राज०)
4. नानूराम संस्कर्ता, सेवा निवृत्त अध्यापक, कालू जि० बीकानेर (राज०)
5. अन्नाराम सुदामा, सेवा निवृत्त शिक्षक, पेट्रोल पम्प के पास, गंगाशहर जि० बीकानेर (राज०)
6. जनकराज पारीक, प्र० अ०, ज्ञान ज्योति, उ० मा० वि० श्रीकरणपुर जि० बीकानेर (राज०)
7. धनंजय वर्मा, नगर परिषद् के सामने, बीकानेर
8. रामनिवास शर्मा, पारीक चौक, बीकानेर
9. शिवराज छंगाणी, नत्थूसर गेट के भीतर, बीकानेर
10. छगनलाल व्यास, रा० उ० मा० वि०, समदड़ी जि० बाड़मेर (राज०)
11. रमेशचन्द्र शर्मा, स० अ०, रा० मा० वि० खोह वाया रौनीजाथान जि० अलवर (राज०)
12. उदयवीर शर्मा, प्र० अ०, रा० उ० मा० वि० गौरीर जि० झुंझनू (राज०)
13. सोहनलाल प्रजापति, प्र० अ०, रा० उ० प्रा० वि०, आबसर वाया-पड़िहारा ... चूरु (राज०)
14. छाजूलाल जांगिड़, प्र० अ०, रा ... (राज०)
15. दीपचन्द सुथार, सोमानियों की ... (राज०)
16. त्रिलोक गोयल, अग्रसेन नगर
17. श्रीनन्दन चतुर्वेदी, प्र० अ० ... अटरू
18. जगदीशचन्द्र नागर, स०
19. चन्द्रदान चारण, प०

20. अखिलेश्वर, उ० मण्डी ब्लॉक, श्रीकरणपुर—335073 (राज०)
21. अमोलकचन्द जांगिड़, व्याख्याता (हिन्दी) सेठ दु० रा० ज० रा० उ० मा० वि० बिसाऊ जि० झुन्झनू (राज०)
22. सांवर दइया, उप डाकघर के सामने, जेल रोड बीकानेर
23. कमला अग्रवाल, वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी (छात्राएँ) भीलवाड़ा (राज०)
24. भगवतीलाल व्यास, प्राध्यापक, लोकमान्य तिलक शि० प्र० महाविद्यालय, डबोक जि० उदयपुर (राज०)
25. श्यामसुन्दर श्रीपत, वरिष्ठ उप जिला शिक्षा अधिकारी जैसलमेर (राज०)
26. मोहम्मद सदीक, सहा० प्र० अ०, रा० सादुल उ० मा० वि० बीकानेर
27. भीम पांडिया, आशापुरा, नयाशहर, बीकानेर
28. अरविन्द चूरूवी, व्याख्याता, रा० उ० मा० वि० रतनगढ़, जि० चूरू(राज०)
29. कल्याणसिंह राजावत, 53, झोटवाड़ा, जयपुर
30. माधव नागदा, व्याख्याता, रा० उ० मा० वि० राजसमन्द—313326 जि० उदयपुर (राज०)
31. केशव "पथिक" शिक्षक, रा० उ० प्रा० वि० कचहरी मु० पो० कपासन जि० चित्तौड़गढ़ (राज०)
32. श्रीमाली श्रीवल्लभ घोष,सुगन्धगली, ब्रह्मपुरी, जोधपुर
33. इन्दर आउवा, अध्यापक, प्रो० आउवा वाया-मारवाड जंक्शन जि० पाली (राज०)
34 गोपालकृष्ण निर्झर, शा० शि० रा० मा० वि० बस्सी जि० चित्तौड़गढ़ (राज०)

शिक्षक दिवस प्रकाशन

सम्पूर्ण सूची

1967 .

1. प्रस्तुति (कविता), 2. प्रस्थिति (कहानी), 3. परिक्षेप (विविधा), 4. सालिक ए गोहर (उर्दू) 5. दार की दावत (उर्दू) ।

1968 :

6. कैसे भूलूं (संस्मरण), 7. सन्निवेश (विविधा), 8. दामाने बागवां (उर्दू) ।

1969 :

9. प्रस्तुति-2 (कविता), 10. बिम्ब-बिम्ब चांदनी (गीत), 11. प्रस्थिति-2 (कहानी), 12. अमर चूनड़ी (राजस्थानी कहानी), 13. यदि गांधी शिक्षक होते (निबन्ध), 14. गांधी-दर्शन और शिक्षा (शिक्षा दर्शन), 15. सन्निवेश-2 (विविधा) ।

1970 :

16. सूखा गाँव (गीत), 17. खिड़की (कहानी), 18. कैसे भूलूं-2 (सस्मरण), 19. सन्निवेश-3 (विविधा) ।

1971 :

20. प्रस्तुति-3 (कविता), 21. प्रस्थिति-3 (कहानी) 22. सन्निवेश-4 (विविधा) ।

1972 :

23. प्रस्तुति-4 (कविता), 34. प्रस्थिति-4 (कहानी), 25. सन्निवेश-5 (विविधा), 26. माळा (राजस्थानी विविधा) ।

1973 :

27. धूप के पंखेरू (कविता), 28. खिलखिलाता गुलमोहर (कहानी), 29. रेजगारी का रोजगार (एकांकी), 30. अस्तित्व की खोज (विविधा), 31. जूना बेली : नुवीं बेली (राजस्थानी विविधा)।

1974 :

32. रोशनी बाँट दो (कविता) सं० रामदेव आचार्य, 33. अपने आस-पास (कहानी) सं० मणि मधुकर, 34. रङ्ग-रङ्ग बहुरङ्ग (एकांकी) सं० डॉ० राजानन्द, 35. आंधी अर आस्था व भगवान महावीर, (दो राजस्थानी उपन्यास) सं० यादवेन्द्र शर्मा 'चन्द्र', 36. बारखड़ी (राजस्थानी विविधा) सं० वेद व्यास।

1975 :

37. अपने से बाहर अपने में (कविता) सं० मंगल सक्सेना, 38. एक और अन्तरिक्ष (कहानी) सं० डॉ० नवलकिशोर, 39. संभाळ (राज० कहानी) सं० विजयदान देथा, 40. स्वर्ग-भ्रष्ट (उपन्यास), ले० भगवती प्रसाद व्यास, सं० डॉ० रामदरश मिश्र, 41. विविधा स० डॉ० राजेन्द्र शर्मा।

1976 :

42. इस बार (कविता) सं० नन्द चतुर्वेदी, 43. संकल्प स्वरों के (कविता) सं० हरीश भादानी, 44. बरगद की छाया (कहानी) सं० डॉ० विश्वम्भरनाथ उपाध्याय, 45. चेहरों के बीच (कहानी व नाटक) सं० योगेन्द्र किसलय, 46. माध्यम (विविधा) स० विश्वनाथ सचदेव।

1977 :

47. सृजन के आयाम (निबन्ध) सं० डॉ० देवीप्रसाद गुप्त, 48. क्यों (कहानी व लघु उपन्यास) सं० श्रवणकुमार, 49. चेते रा चितराम (राजस्थानी विविधा) सं० डॉ० नारायणसिंह भाटी, 50. समय के संदर्भ (कविता) सं० जुगमन्दिर तायल, 51. रङ्ग-वितान (नाटक) सं० सुधा राजहंस।

1978 :

52. अंधेरे के नाम संधि-पत्र नहीं (कहानी सकलन) स० हिमांशु जोशी, 53. लखाण (राजस्थानी विविधा) स० रावत सारस्वत, 54. रचेगा संगीत (कविता सकलन) स० नन्द किशोर आचार्य, 55. दो गाँव (उपन्यास) ले० मुकर्रब खान आजाद, सं० डॉ० आदर्श सक्सेना, 56. अभिव्यक्ति की तलाश (निबन्ध) सं० डॉ० रामगोपाल गोयल।

1979 :

57. एक कदम आगे (कहानी संकलन) सं० ममता कालिया, 58. लगभग जीवन (कविता संकलन) सं० लीलाधर जगूड़ी, 59. जीवन यात्रा का कोलाज/सं० ? (हिन्दी विविधा) स० डॉ० जगदीश जोशी, 60. कोरणी कलम री (राजस्थानी विविधा) सं० अन्नाराम सुदामा, 61. यह किताब बच्चों की (बाल साहित्य) सं० डॉ० हरिकृष्ण देवसरे।

1980 :

62. पानी की लकीर (कविता संकलन) सं० अमृता प्रीतम, 63. प्रयास (कहानी संकलन) सं० शिवानी, 64. मंजूषा (हिन्दी विविधा) सं० राकेश जैन, 65. अंतस रा आखर (राजस्थानी विविधा) सं० नृसिंह राजपुरोहित, 66. खिलते रहे गुलाब (बाल साहित्य) सं० जयप्रकाश भारती।

1981 :

67. अंधेरों का हिसाब (कविता संकलन) स० सर्वेश्वर दयाल सक्सेना, 68. अपने से परे(कहानी सकलन)सं० मन्नू भण्डारी, 69. एक दुनिया बच्चों की (बाल साहित्य) स० पुष्पा भारती, 70. सिरजण (राजस्थानी विविधा) स० तेजसिंघ जोधा, 71. वन्देमातरम् (हिन्दी विविधा) सं० विवेकी राय।

1982 :

72. धर्मक्षेत्रे : कुरुक्षेत्रे (कहानी संकलन) सं० मृणाल पाण्डे, 73. कौमी एकता की तलाश और अन्य रचनाएँ (हिन्दी विविधा) सं० शिवरतन थानवी, 74. अपना-अपना आकाश (कविता संकलन) सं० जगदीश चतुर्वेदी, 75. कूंपळ (राजस्थानी विविधा) सं० कल्याण सिंघ शेखावत, 76. फूलों के ये रंग (बाल साहित्य) सं० लक्ष्मी चन्द्र गुप्त।

1983 :

77. भीतर-बाहर (कहानी संकलन) सं० मृदुला गर्ग, 78. रेती के रात-दिन (हिन्दी विविधा) स० डॉ०प्रभाकर माचवे, 79. घायल मुट्ठी का दर्द(कविता सकलन) डॉ० प्रकाश आतुर, 80. पांखुरियां माटी की (बाल साहित्य) सं० कन्हैयालाल नन्दन, 81. हिवड़ै रो उजास (राजस्थानी विविधा) स० श्रीलाल नथमल जोशी।

1984 .

82. अपना-अपना वामन (कहानी सकलन) स० मृदुला गर्ग, 83. वस्तु-स्थिति (कविता संकलन) सं० गिरधर राठी, 84. संचयनिका (विविधा) स० याज्ञवल्क्य गुरु, 85. फूल सारू पांखड़ी (राजस्थानी) स० शक्तिदान कविया 86. सारे फूल तुम्हारे हैं (बाल साहित्य) सं० स्नेह अग्रवाल।

राजस्थान के शिक्षक दिवस प्रकाशन

कुछ सम्मतियाँ

राजस्थान शिक्षा विभाग द्वारा शिक्षक दिवस प्रकाशन योजना के अन्तर्गत राज्य के सृजनशील शिक्षक साहित्यकारों की पांच कृतियाँ वर्ष की सार्थक उपलब्धियाँ हैं।

—नवभारत टाइम्स

संग्रह में सभी कविताएँ, कविता की दृष्टि से महत्त्वपूर्ण हैं, यद्यपि कुछ कविताओं को पढ़कर कविता जैसा कुछ नहीं लगता किन्तु कलात्मक प्रयास को नकारा भी नहीं जा सकता।

—नवभारत टाइम्स

'प्रयास' कहानी लेखकों का उत्तम प्रयास है तथा शिवानी का सम्पादन-वक्तव्य नवलेखकों को गुरु-प्रेरणा का प्रयास है।

—नवभारत टाइम्स

'मंजूषा' में संकलित अधिकांश रचनाएँ एक ओर शिक्षकों की जीवन-पीड़ा तथा घुटन प्रस्तुत करती है तो दूसरी ओर सामाजिक मूल्यों में उनकी आस्था, व्यवसाय के प्रति उनकी निष्ठा और शिक्षार्थियों के गिरते स्तर के प्रति चिन्ता तथा जागरूक उत्तरदायित्व उभारती है।

—नवभारत टाइम्स

संकलन में एक तरफ तो ऐसी रचनाएँ हैं जिनसे बच्चों को चरित्र निर्माण की प्रेरणा मिलेगी तो दूसरी तरफ ऐसी रचनाएँ भी हैं जिनसे उनका स्वस्थ मनो-रंजन भी होगा।

—समाज कल्याण, दिल्ली

रचनाओं की विषय-वस्तु परंपरागत होते हुए भी बालकों के मानसिक विकास में सहायक हो सकती है। सभी रचनाओं मे विशेषकर कहानियों में अनुभव की उष्णता विद्यमान है। संकलन निश्चय ही नन्हें-मुन्ने पाठकों के लिए उपयोगी है।

—समाज कल्याण, दिल्ली

संग्रह की अधिकतर कविताएँ जिन्दगी के फोटो हैं। इनमें किसी प्रकार के छद्म आदर्श की प्रस्तावना नहीं है।

—समाज कल्याण, दिल्ली

इस संग्रह की अधिकांश कविताएँ तक ऐसे आदमी की छटपटाहट को व्यक्त करने का प्रयास है जो निरन्तर अपरिचित एवं अमानवीय होते जा रहे परिवेश से पूर्णतया संपृक्ति है। इस संपृक्ति के कारण ही राजस्थान के ये सृजनशील अध्यापक अपने आसपास के परिचित सदर्भ को सृजनात्मक आयाम प्रदान कर पाए है।

—समाज कल्याण, दिल्ली

जिस तरह संग्रह की रचनाओं की संवेदना जिन्दगी से निष्पन्न है, उसी तरह इनकी संरचना भी। कविताओं की संरचना में कोई जटिलता नहीं है। लगभग सभी कविताओं में एक अनगढ़ता मौजूद है। यह अनगढ़ता ही इन कविताओं को विशिष्ट बनाती हैं।

—समाज कल्याण,दिल्ली

राजस्थान के शिक्षा-विभाग ने विगत कुछ वर्षों से शिक्षक दिवस पर राज्य के शिक्षक साहित्यकारो की रचनाएँ पुस्तक रूप में छापने की एक स्वस्थ परम्परा प्रारंभ की है। इस योजना से अनेक सृजनशील शिक्षक साहित्यकारों को साहित्यिक क्षेत्र में अपना स्थान बनाने के लिए भी प्रेरणा तथा प्रोत्साहन मिला है।

—दैनिक हिन्दुस्तान

'पानी की लकीर' कुल मिलाकर यह एक अच्छा सकलन है और उसमे सम्मिलित कवियो की क्षमता परिचायक है।

—दैनिक हिन्दुस्तान

'अतस रा आखर' में आरम्भ से अन्त तक राजस्थानी की ही छटा मिलती है।

—दैनिक हिन्दुस्तान

आज भी समाज में अध्यापक से ही आदर्श जीवन की अपेक्षा की जाती है, अतः इन कहानियों में से अधिकाश का स्वर आदर्श और सुधारवादी रहा है तो इसे अस्वाभाविक नहीं माना जा सकता।

—प्रकर

जयप्रकाश भारती ने अध्यापकों की इस अनमोल भेंट को सम्पादित कर बच्चों के सामने प्रस्तुत किया है। सम्पादक का कहना है—जब-जब बच्चे इसे पढ़ेंगे *मनोरंजन होने के साथ उनको कहीं कोई रोशनी की लकीर भी दिखाई देगी।*

—दैनिक हिन्दुस्तान

सरकारी महकमो ने इतना निराश किया है कि जब हम राजस्थान के शिक्षा-विभाग के प्रकाशनों पर नजर डालते हैं तो एकबारगी आश्चर्य में ही डूब जाते है।

—राजस्थान पत्रिका दैनिक

संकलन की अधिकांशतम कविताएँ जैसा कि कहा—जीवन की विसंगतियों, दैनिक जीवन की आपा-धापी और उधेड़बुनों को व्यक्त करती हैं। इनमे ज्यादा-तर प्रलाप लगती है, कविता कम।

—इतवारी पत्रिका
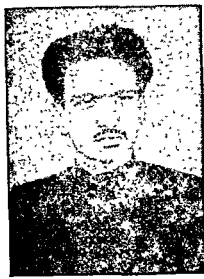
शक्तिदान कविया

जलम : 17 जुलाई 1940 ई०

जलमभोम : गाँव बिराई, तहसील शेरगढ़, जिला जोधपुर।

शिक्षा : एम० ए० (हिन्दी) श्री महाराज कुमार कॉलेज, जोधपुर सू (1962 ई०) पी-एच० डी० 'डिंगल के ऐतिहासिक प्रबन्ध काव्य (सं० 1700-2000 वि०)' विषय माथै जोधपुर विश्वविद्यालय सू (1969 ई०)।

छपियोड़ी पुस्तकां : (1) राजस्थानी साहित्य का अनुशीलन, (2) संस्कृति री सोरभ,

संपादन : (1) लाखीणी, (2) रंगभीनी, (3) काव्य-कुसुम, (4) सोढायण, (5) दरजी मयाराम री वात, (6) कवि मत मंडण

अनुवाद : ग्रेलीजी रौ अनुवाद (राजस्थानी पद्यानुवाद)

अकादमी पुरस्कार : राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर सू 'बटाऊ हार मत वीरा' (अप्रकाशित काव्य-संग्रह) माथै राजस्थानी-पद्य पुरस्कार (1982 ई०) सन् 1963 सू 1980 ताई जोधपुर विश्वविद्यालय रै हिन्दी विभाग में प्राध्यापक

अबार : राजस्थानी विभाग, जोधपुर विश्व-विद्यालय में प्राध्यापक।

स्थायी पतौ : कविया-निवास
पोलो II जोधपुर (राज०)